विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code : B21HD01DE

Discipline Specific Elective Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: B21HD01DE

Semester - IV

Discipline Specific Elective Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

विशेष लेखक प्रेमचंद

Course Code: B21HD01DE
Semester - IV

Discipline Specific Elective Course
BA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-970238-7-3

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. R. Sethunath
Dr. B. Ashok
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Suma I., Dr. Mini B., Dr. Sajna P., Dr. Karthika M.S., Dr. Jesna Rahim

Review

Content : Dr. N. Shaji, Dr. Suma S.
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. N. Shaji, Dr. Suma S.

Edit

Dr. N. Shaji, Dr. Suma S.

Scrutiny

Dr. Sophia Rajan, Dr. Indu G. Das, Dr. Sudha T., Krishnapreethi A.R., Christina Sherin Rose

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Production

July 2024

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2024

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the UG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P. 01-07-2024

Contents

Block 1: कालजयी साहित्यकार प्रेमचंद : जीवन एवं परिचय 1

इकाई 1: प्रेमचंद का जीवन परिचय 2

इकाई 2: पूर्व प्रेमचंद युगीन हिन्दी साहित्य 7

इकाई 3: प्रेमचंद युगीन हिन्दी कथा साहित्य 11

इकाई 4: प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति 15

इकाई 5: परवर्ती कथा साहित्य पर प्रेमचंद का प्रभाव 20

इकाई 6: प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता 25

Block 2: उपन्यास सम्राट प्रेमचंद 29

इकाई 1: उर्दू कथाकार प्रेमचंद 30

इकाई 2: हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में प्रवेश 35

इकाई 3: प्रेमचंद के उपन्यासों की विशेषताएँ 40

इकाई 4: उपन्यास रंगभूमि (विस्तृत अध्ययन के लिए) 43

Block 3: कहानीकार प्रेमचंद 49

इकाई 1: हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान 50

इकाई 2: प्रेमचंद की कहानी साहित्य की विशेषताएँ 55

इकाई 3: प्रेमचंद की पाँच कहानियाँ (विस्तृत अध्ययन के लिए) 61

Block 4: साहित्य विचारक प्रेमचंद 72

इकाई 1: प्रेमचंद की जीवन दृष्टि और साहित्य 73

इकाई 2: कुछ विचार : एक सामान्य परिचय 78

Block 5: प्रेमचंद का साहित्यः आलोचनात्मक अध्ययन 83

इकाई 1: प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषताएँ (कहानी,उपन्यास और अन्य गद्य विधाएँ) 84

इकाई 2: प्रेमचंद की रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन 91

Block 6: प्रेमचंद वर्तमान संदर्भ में 99

इकाई 1: प्रेमचंद एक कालजयी रचनाकार के रूप में 100

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2: प्रेमचंद साहित्य में चित्रित समस्याओं की प्रासंगिकता 105

इकाई 3: प्रेचमंद साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता 110

Model Question Papers Sets 114

BLOCK - 01

कालजयी साहित्यकार

प्रेमचंद : जीवन एवं परिचय

इकाई 1

प्रेमचंद का जीवन परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के जन्म एवं बचपन के बारे में समझता है
- प्रेमचंद जी के शिक्षा एवं नौकरी के बारे में जानता है
- प्रेमचंद के व्यक्तित्व के बारे में समझता है
- आदर्शवादी प्रेमचंद के साहित्यिक परिचय प्राप्त होता है
- सादा जीवन और उच्च विचार से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 जुलाई 31 को बनारस के समीप स्थित लमही नामक ग्राम के कायस्थ परिवार में हुआ था। पिता अजायबलाल थे और माता आनंदी देवी। प्रेमचंद का बचपन गरीबी और दुःख में व्यतीत हुआ। 8 वर्ष की आयु में माता का देहांत हुआ। पिता ने दूसरी शादी की। विमाता की क्रूरता से घर का वातावरण दुःखमय रहा। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव के मदरसे में हुई। गाँव में रहते थे और हाई स्कूल की पढ़ाई करने शहर जाते थे। ट्यूशन पढ़ाते थे और रात में कुप्पी जलाकर ख़ुद पढ़ते थे। दसवीं पास कर कॉलेज में दाख़िला लिया। मेहनत बहुत करनी पड़ती थी।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जन्म एवं बचपन, शिक्षा एवं नौकरी, आदर्शवादी प्रेमचंद, साहित्यिक परिचय, सरस्वती प्रेस की स्थापना

Discussion / चर्चा

जन्म एवं बचपन

प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 जुलाई 31 को बनारस के समीप स्थित लमही नामक ग्राम के कायस्थ परिवार में हुआ था। पिता अजायबलाल थे और माता आनंदी देवी। प्रेमचंद का बचपन गरीबी और दुःख में व्यतीत हुआ। उनका बचपन का नाम धनपतराय था, किन्तु वे अपनी कहानियाँ उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लिखते थे और हिन्दी में मुंशी प्रेमचंद के नाम से। उनके पिता अजायबलाल डाक विभाग में पोस्ट मास्टर थे। बचपन से ही उनका जीवन बहुत ही, संघर्षों से गुजरा था। 8 वर्ष की आयु में माता का देहांत हुआ। पिता ने दूसरी शादी की। विमाता की क्रूरता से घर का वातावरण दुःखमय रहा।

उनका बचपन अत्यधिक कष्टमय रहा। प्रेमचंद की शिक्षा उर्दू फारसी में हुई। हाई स्कूल की शिक्षा बनारस में हुई और फीस देने के लिए ट्यूशन लेना पड़ा। जिस साहस और परिश्रम से उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा, वह साधनहीन एवं कुशाग्रबुद्धि और परिश्रमी छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद है। प्रेमचंद का पहला विवाह पन्द्रह वर्ष की उम्र में उनके पिताजी ने करा दिया। उस समय मुंशी प्रेमचंद कक्षा 9 के छात्र थे। पहली पत्नी को छोड़ने के बाद उन्होंने दूसरा विवाह 1906 में शिवरानी देवी से किया जो एक

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

महान साहित्यकार थीं। प्रेमचंद की मृत्यु के बाद उन्होंने 'प्रेमचंद घर में' नाम से एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

शिक्षा एवं नौकरी

प्रेमचंद ने अपनी औपचारिक स्कूली शिक्षा 7 साल की उम्र में लमही, बनारस के एक साधारण मदरसे में शुरू की। मदरसे में अपने समय के दौरान उन्होंने उर्दू, कुछ अंग्रेजी और हिन्दी सीखी। वह अपनी पसंद के कॉलेज में दाखिला लेने में कामयाब रहे, लेकिन धन की कमी के कारण उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही रोकनी पड़ी। अपनी गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचन्द ने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में आप अपने गाँव से दूर बनारस पढ़ने के लिए नंगे पाँव जाया करते थे। इसी बीच पिता का देहान्त हो गया। पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वकील बनना चाहते थे। मगर गरीबी ने तोड़ दिया। स्कूल आने–जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहाँ ट्यूशन पकड़ लिया और उसी के घर का एक कमरा लेकर रहने लगे। ट्यूशन का पाँच रुपया मिलता था। पाँच रुपये में से तीन रुपये घर वालों को और दो रुपये से अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। इस दो रुपये से क्या होता महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में मैट्रिक पास किया।

उन्होंने अपनी मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के लिए बहुत संघर्ष किया था। उन्होंने हिन्दी के साथ उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, प्रारम्भ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में अध्यापक रहे।

अचानक आपके सिर पर पूरे घर का बोझ आ गया। एक साथ पाँच लोगों का खर्चा उठाना पड़ा। पाँच लोगों में विमाता, उसके दो बच्चे और पत्नी थे। प्रेमचन्द की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि पैसे के अभाव में उन्हें अपना कोट बेचना पड़ा और पुस्तकें बेचनी पड़ी। एक दिन ऐसी हालत हो गई कि वे अपनी सारी पुस्तकों को लेकर एक बुकसेलर के पास पहुँच गए। वहाँ एक हेडमास्टर मिले जिन्होंने आपको अपने स्कूल में अध्यापक पद पर नियुक्त किया। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। फिर भी उन्होंने अपने जीवन में किसी भी मोड़ पर हार नहीं मानी और अपनी पढ़ाई जारी रखी और आखिरकार 1919 में उन्हें बीए की डिग्री मिल गई थी। बी.ए पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के सब-डिप्टी इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। गांधीजी से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी ।

सादा एवं सरल जीवन

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचन्द सदा मस्त रहते थे। उनके जीवन में विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। कहा जाता है कि प्रेमचन्द हंसोड़ प्रकृति के मालिक थे। विषमताओं भरे जीवन में हंसोड़ होना एक बहादुर का काम है। वे सौजन्यता और उदारता के मूर्ति थे। जहाँ उनके हृदय में मित्रों के लिए उदार भाव था वहीं उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था। जैसा कि उनकी पत्नी कहती हैं "कि जाड़े के दिनों में चालीस–चालीस रुपये दो बार दिए गए दोनों बार उन्होंने वह रुपये प्रेस के मजदूरों को दे दिये। मेरे नाराज होने पर उन्होंने कहा कि यह कहाँ का इंसाफ है कि हमारे प्रेस में काम करने वाले मजदूर भूखे हों और हम गरम सूट पहनें।"

आदर्शवादी व्यक्तित्व

प्रेमचन्द उच्चकोटि के मानव थे। आपको गाँव जीवन से अच्छा प्रेम था। वह सदा साधारण गंवई लिबास में रहते थे। जीवन का अधिकांश भाग उन्होंने गाँव में ही गुजारा। बाहर से बिल्कुल साधारण दिखने वाले प्रेमचन्द अन्दर से जीवनी–शक्ति के मालिक थे। अन्दर से जरा सा भी किसी ने देखा तो उसे प्रभावित होना ही था। वह आडम्बर एवं दिखावा से मीलों दूर रहते थे। जीवन में न तो उनको विलास मिला और न ही उनको इसकी तमन्ना थी। तमाम महापुरुषों की तरह अपना काम स्वयं करना पसंद करते थे।

साहित्यिक परिचय

प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक सफ़र एक उपन्यासकार और आलोचक की हैसियत से शुरू किया था। उनका पहला उपन्यास 1901 में प्रकाशित हुआ और दूसरा 1904 में। वह तब उर्दू में लिखते थे और उनका नाम था नवाब राय। उन्होंने 1907 से कहानियाँ लिखना भी शुरू कर दिया था। उनकी आरंभिक कहानियाँ उस ज़माने की मशहूर पत्रिका 'ज़माना' में प्रकाशित हुईं। उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोज़े वतन' तब प्रकाशित हुआ जब प्रथम विश्वयुद्ध की तैयारियाँ ज़ोरों पर थी। इस संग्रह को अंग्रेज़

शासक द्वारा ख़तरे के रूप में देखा गया और उनको इसकी पाँच सौ प्रतियों को आग लगा देने के लिए मजबूर किया गया। यहीं से फिर प्रेमचंद ने नवाबराय नाम छोड़कर प्रेमचंद नाम से लिखना शुरू किया।

मुंशी प्रेमचंद जी ने लगभग एक दर्जन उपन्यासों एवं तीन सौ कहानियों की रचना की उन्होंने 'माधुरी' एवं 'मर्यादा' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा 'हंस' एवं 'जागरण' नामक पत्र भी निकाले। उनकी रचनाएँ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं, जिनमें सामान्य जीवन की वास्तविकताओं का सम्यक चित्रण किया गया है। समाज-सुधार एवं राष्ट्रीयता उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं।

'प्रेमा', 'प्रतिज्ञा', 'वरदान', 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान', 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) आदि उनका प्रमुख उपन्यास है। उन्होंने तीन नाटक भी लिखे हैं, 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी'। उनका प्रसिद्ध निबंध संग्रह है 'कुछ विचार'।

प्रेमचंद जी ने हिन्दी कथा-साहित्य में युगान्तर उपस्थित किया। उनका साहित्य समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। वह अपने समय की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करता है। उसमें किसानों की दशा, सामाजिक बन्धनों में तड़पती नारियों की वेदना और वर्णव्यवस्था की कठोरता के भीतर संत्रस्त हरिजनों की पीडा का मार्मिक चित्रण मिलता है।

इसके अलावा कुछ अनूदित रचनाएँ भी है। उन्मुक्त हास्य व्यक्तित्व उनकी विशेषता थी। वे स्वाभिमान और विनम्रता का विचित्र सम्मिश्रण थे। वह ईश्वर पर विश्वास नहीं करते थे। उन्हें कर्म पर विश्वास था और जीवन भर वे कर्मयोगी बने रहे।

सरस्वती प्रेस की स्थापना और संपादक

कभी अध्यापक कभी संपादक बनकर वे कुछ समय इधर-उधर भटकते रहे। 1923 ई बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की, जो एक ऐतिहासिक घटना है। माधुरी का संपादक बने। जागरण साप्ताहिक और हंस मासिक निकालकर पत्रकार बन गए।

प्रेमचंद के जीवन का आदर्श था सादा जीवन और उच्च विचार। कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान महत्वपूर्ण है। उनकी लगभग 300 कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है ।

मृत्यु

मुंशी जी का देहांत 8 अक्टूबर 1936 को ब्रिटिश इंडिया के बनारस में हुआ था। प्रेमचंद को 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। कई दिनों की बीमारी के बाद और पद पर रहते हुए 8 अक्टूबर 1936 को उनकी मृत्यु हो गई थी। वह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने अपनी जीवन की बत्ती को कण–कण जलाकर भारतीयों का पथ आलोकित किया।

Critical Overview / अवलोकन

उन्मुक्त हास्य उनकी व्यक्तित्व की विशेषता थी। वे स्वाभिमान और विनम्रता का विचित्र समिश्रण थे। वह ईश्वर पर विश्वास नहीं करते थे। वे एक कर्मी साहित्यकार हैं। उनकी मूल धारणा थी कि जीने का उद्देश्य कर्म है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन केलिए साहित्य का उपयोग किया। उन्होंने निरन्तर साहित्य सृजन के द्वारा जन मानस में नवीनता भर दी। उर्दू में लिखते हुए प्रेमचन्द ने उर्दू उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया। बाद में हिन्दी में आने पर भी उन्होंने हिन्दी उर्दू की पृथक भाषा-नीति न अपना कर भाषा का एक समन्वयात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया ।

प्रेमचन्द की साहित्य साधना के विषय में श्री रामप्रकाश अग्रवाल ('प्रेमचन्द' पृ 89) का यह कथन द्रष्टव्य है। मुंशी प्रेमचन्द की साहित्य सेवा अनेक दृष्टियों से भक्तिकालीन साहित्यकारों से तुलनीय है। उनके सृजन में वैसा ही साधना-भाव निहित है जैसा कि भक्त और संत कवियों में था। वे भी साहित्य देवता के प्रति समर्पित साहित्यकार थे। भक्त कवियों ने सर्जना का दीप कृतियों से जलाया था, प्रेमचन्द ने झोंपड़ियों से। अनुभूति की आग से जन भाषा में जैसी ज्योति उन महात्माओं ने जगाई थी, वैसी ही प्रेमचन्द ने।

Recap / पुनरावृत्ति

- मुंशी प्रेमचंद जी हिन्दी कथा-साहित्य में युगान्तर कथाकार हैं ।
- प्रेमचंद ने विपुल मात्रा में वैचारिक गद्य लिखा और उस दौर की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे।
- स्वयं एक संपादक और पत्रकार के रूप में उन्होंने समय और समाज के मसलों पर गंभीर टिप्पणियों के रूप में योगदान किया।
- प्रेमचंद की रचनाओं को देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी रचनाओं पर फ़िल्म, टीवी सीरीज़ का निर्माण हुआ है और उनके नाट्य-मंचन किए गए हैं।
- प्रेमचंद के जीवन का आदर्श था सादा जीवन और उच्च विचार ।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद जी का जन्म कब हुआ?
2. प्रेमचंद की माता का नाम क्या है?
3. प्रेमचंद का पहला कहानी-संग्रह का नाम लिखिए?
4. प्रेमचंद के पुत्र का नाम क्या है?
5. निर्मला किसकी रचना है?
6. 'प्रेमचंद घर में' किसकी रचना है?
7. सरस्वती प्रेस की स्थापना किसने की?
8. प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना किसने की?

Answers / उत्तर

1. सन् 1880 ई, जुलाई 31।
2. आनंदी देवी।
3. सोजेवतन।
4. अमृत राय।
5. प्रेमचंद
6. शिवरानी देवी
7. प्रेमचंद
8. प्रेमचंद

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद की उपन्यासों का नाम लिखिए।
2. प्रेमचंद जी के व्यक्तिगत जीवन के बारे में लिखिए।
3. प्रेमचंद : जीवन एवं परिचय विषय पर टिप्पणी लिखें।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियां : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

SGOU

इकाई 2

पूर्व प्रेमचंद युगीन हिन्दी साहित्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सरस्वती पत्रिका से परिचय प्राप्त होता है
- भारतेंदु युग के बारे में जानता है
- गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों का परिचय प्राप्त होता है
- प्रेमचंद पूर्व हिन्दी साहित्यकारों का परिचय प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारतेंदु युग को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवेश द्वार माना जाता है। भारतेन्दु युग नव जागरण का युग है। इसमें नई सामाजिक चेतना उभरकर आई। भारतेंदु काल में पद्य के साथ गद्य और खड़ी बोली का प्रयोग किया गया। खड़ी बोली का विकास इस युग की महत्वपूर्ण घटना है। इस युग में पत्रकारिता, उपन्यास, कहानी, नाटक आलोचना, निबंध आदि अनेक गद्य विधाओं का विकास हुआ, जिसका माध्यम खड़ी बोली है। इस युग में प्रत्येक लेखक किसी न किसी पत्रिका का सम्पादन करता था। भारतेन्दु युग में जिन साहित्यिक रूपों और प्रवृत्तियों का बीज बोया गया था, वह द्विवेदी युग में खूब फला फूला। भारतेंदु युग में देशभक्ति और राजभक्ति तत्कालीन राजनीति का अभिन्न अंग थी, जिसका स्पष्ट प्रभाव इस युग के कवियों में देखा जा सकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आधुनिक काल के आरंभिक युग, बंगाल एवं अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव, हिन्दी साहित्य के विकास के तीन काल, सरस्वती पत्रिका, प्रमुख उपन्यासकार, प्रमुख कहानीकार, प्रेमचंद पूर्व हिन्दी साहित्य का प्रभाव

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य के उदय काल से लेकर मध्य काल तक साहित्य का विकास काव्यों तक सीमित रहा था। परंतु आधुनिक काल में अर्थात सन् 1850 ई से गद्य के विविध रूपों का अधिकार होता गया। गद्य के विभिन्न रूपों में उपन्यास और कहानी को लोकप्रियता प्राप्त हुई जिसने उनके विकास की गति तीव्र कर दी।

पाठकों के मनोरंजन को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी के प्रारंभिक कथा लेखक आगे बढ़े। इंशा अल्लाह खां कृत 'रानी केतकी की कहानी' (1800), लल्लू लाल कृत 'सिंहासन बत्तीसी' (1801) 'बेताल पच्चीसी' और 'प्रेम सागर' तथा सदल मिश्र रचित 'नासिकेतोपाख्यान' आदि हिन्दी कथा साहित्य के प्रारंभिक काल की रचनाएँ हैं।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के आरंभिक युग भारतेंदु युग है। भारतेंदु काल के उपन्यास प्राचीन कला परंपरा का अनुसरण करते हुए भी भिन्न है। उपन्यास साहित्य जिस रूप में आज है वह पश्चिमी साहित्य की देन है। भारतेंदु युग(1850 - 1885) में सामाजिक, पौराणिक ऐतिहासिक, प्रेम प्रधान एवं तिलस्मी तथा अय्यारी आदि

कई प्रकार के साहित्य लिखे गये हैं। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास श्रीनिवास दास कृत (1882) 'परीक्षा गुरु' माना जाता है। कुछ लोग श्रद्धा राम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते थे, लेकिन वह सर्वमान्य न हो सका।

आधुनिक काल में हिन्दी कहानी और उपन्यास अंग्रेजी तथा बंगला से प्रभावित होकर आगे बढ़ी है। सरस्वती पत्रिका के उदय से हिन्दी कहानी का उदय भी जुडा हुआ है। लेकिन कहानी साहित्य के इतिहास में हिंदू पत्रिका का भी महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य पर विचार करते समय पहला नाम जो बरबस खिंचकर आता है, वह है प्रेमचंद। उन्होंने हिन्दी साहित्य के उपन्यास और कहानी की विकास यात्रा में युगांतर उपस्थित किया है। प्रेमचंद को समझने के लिए तथा उनके साहित्य का सही मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक है कि प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कथा साहित्य का थोड़ा सा परिचय प्राप्त करना है।

पूर्व प्रेमचंद युग हिन्दी उपन्यास के विकास का आरम्भिक काल है। प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास लेखन की परम्परा में दो ही प्रवृत्तियाँ उभरकर आई उपदेशात्मक तथा मनोरंजनात्मक। इस दौर के उपन्यासों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. तिलस्मी अय्यारी उपन्यास लेखन की परम्परा
2. जासूसी उपन्यास लेखन की परम्परा
3. ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की परम्परा
4. सामाजिक उपन्यास लेखन की परम्परा

1. तिलस्मी अय्यारी उपन्यास लेखन की परम्परा

तिलस्मी अय्यारी उपन्यास लेखन की शुरूआत देवकीनन्दन खत्री से हुई। खत्री महोदय का सम्बन्ध जंगली लकड़ियों के व्यवसाय से था। बीहड़ जंगलों से जुड़े होने के कारण कल्पना लोक को तैयार करना उनके लिए आसान था। इच्छानुसार वेश बदलने वाले अय्यारों को केन्द्र में रखकर काल्पनिक कथा गढ़ने की यह परम्परा काफी विकसित हुई। घटना प्रधान तथा औत्सुक्य उत्पन्न करने वाले ये उपन्यास तिलस्मी अथवा ऐन्द्रजालिक कथाओं के सूत्र को लेकर चलते थे। खत्री महोदय का उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' इसी श्रेणी का उपन्यास रहा है। इसके अतिरिक्त 'चन्द्रकान्ता सन्तति', 'भूतनाथ', 'काजल की कोठरी', 'कुसुमकुमारी', 'नरेन्द्रमोहिनी' तथा 'वीरेन्द्रवीर' आदि इसी श्रेणी के उपन्यास हैं।

2. जासूसी उपन्यास लेखन की परम्परा

जासूसी उपन्यासों की धारा बाबू गोपालराम गहमरी से शुरू हुई। गहमरी साहब अंग्रेजी के जासूसी उपन्यासकार आर्थर कानन डायल से प्रभावित थे। उन्होंने मनुष्य की अपराध-वृत्ति को अपने उपन्यासों का मूल-आधार बनाया है। उनके ढाई दर्जन उपन्यास मिलते हैं। इनके उपन्यासों के मूल-विषय हैं- चोरी, डकैती और हत्या। गहमरी जी के उपन्यास हैं- 1. 'अद्‌भुत लाश', 2. 'जासूस की भूल' (1901) 3. 'सरकटी लाश' (1900) 4. 'जासूस पर जासूस' (1904)

3. ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की परम्परा

ऐतिहासिक उपन्यास का सम्बन्ध भारतीय अतीत की गौरवगाथा से रहा है। इस धारा के उपन्यासकारों पर पुनरुत्थानवादी चेतना का विशेष प्रभाव था। ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर राष्ट्रीय सामाजिक जागरण का प्रयास करने वाले उपन्यासों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, किशोरीलाल गोस्वामी, दीनबन्धु मित्र की विशेष भूमिका रही है। 'सजातमीर देव', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'प्रथा', 'नीलदर्पण' उस दौर के कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यास रहे है। सामाजिक उपन्यासों में नैतिकता तथा सोद्देश्यपरकता की स्पष्ट झलक देखी गई। ऐतिहासिक उपन्यासों में नीति कथा एवं लोककथा साहित्य की तरह उपदेशात्मकता एवं मनोरंजन की भावना है। 'इस समय अनेक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए, जिसमें इतिहास नाममात्र को है। ब्रजनन्दन सहाय के 'लाल चीन' तथा मिश्रबन्धुओं के 'वीरमणि' को ऐतिहासिक उपन्यास कला की दृष्टि से थोड़ा-सा सफल कहा जा सकता है।' परंतु भारतेन्दु कालीन उपन्यास अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुँचे। वे साधारण श्रेणी के उपन्यास ही रहे।

मेहता लज्जाराम शर्मा, अयोध्या प्रसाद खत्री और बाबू जगमोहन सिंह इस धारा के प्रमुख उपन्यासकार रहे। इस धारा के प्रमुख उपन्यास हैं- 1. 'आदर्श रमणी' 2. 'सुशीला विधवा' 3. 'हिन्दू दम्पति', 4. 'स्वतन्त्र रमा परतन्त्र लक्ष्मी', 5. 'धूर्तरसिक लाल', 6. 'अधखिला फूल', 7. 'ठेठ हिन्दी की ठाठ', 8. 'श्यामास्वप्न'

4. सामाजिक उपन्यास लेखन की परम्परा

समाज सुधार और धर्मोपदेश को लक्ष्य बनाकर जो

उपन्यास लिखे गए उन्हें सामाजिक उपन्यास की कोटि में रखा जा सकता है। बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान', किशोरी लाल गोस्वामी का 'लवंगलता', 'कुसुमकुमारी', बालमुकुन्द गुप्त का 'कामिनी' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

पश्चिमी प्रभाव

पाश्चात्य सम्पर्क से हमारा विचार बदला, हमारी दृष्टि बदली। 'पश्चिम के प्रभाव ने जहाँ एक और पश्चिमी प्रवृत्तियों का अन्धानुकरण करनेवाले मध्यवर्गीय समाज की सृष्टि की, वहाँ ऐसे व्यक्तियों को भी जन्म दिया जिसके द्वारा पाश्चात्य सांस्कृतिक दृष्टिकोण भारतीय साहित्य में व्यक्त हुआ और उन्होंने नव निर्माण की प्रेरणा ग्रहण की'।

हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है:-

1. प्रेमचंद पूर्व युग।
2. प्रेमचंद युग।
3. प्रेमचंदोत्तर युग।

भारतेंदु युग के प्रमुख कहानी लेखक है- बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, किशोरी लाल गोस्वामी आदि। प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यासों कार्यों में श्रद्धा राम फिल्लौरी, लाला श्रीनिवास दास बालकृष्ण भट्ट, देवी प्रसाद शर्मा, कीर्ति प्रसाद, प्रताप नारायण मिश्र, हरीकृष्ण जोहर, गोपालराम गहमरी, गंगा प्रसाद गुप्ता, बृज नंदन सहाय आदि प्रमुख उपन्यासकार है। प्रेमचंद से पूर्व उपन्यास साहित्य वस्तुतः कौतूहल का स्रष्टा था।

प्रेमचंद के पदार्पण के पूर्व तक हिन्दी साहित्य किसी अविकसित कलिका की भांति मौन निस्पंद एवं चेतनाहीन हो रहा था।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद के पदार्पण के पूर्व तक हिन्दी साहित्य किसी अविकसित कलिका की भांति मौन निस्पंद एवं चेतनाहीन रहा था। दिवाकर की प्रथम रश्मियों की भांति प्रेमचंद की पावन कला का पुनीत स्पर्श पाकर वह जाग उठा, खिल उठा और मुस्करा उठा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि "प्रेमचन्द के पूर्ववर्ती उपन्यासों में एक निश्चित दृष्टिकोण के अभाव के कारण शिल्प की कोई सुनिश्चित रूपरेखा सामने नहीं आ पाई।" वस्तुतः "प्रारम्भिक उपन्यास हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकासक्रम की पहली कड़ी है। युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में तथा रचनात्मक उद्देश्य की पृष्ठभूमि में यदि इन उपन्यासों का मूल्यांकन किया जाए तो इनका अपना महत्व स्पष्ट दिखाई देता है।"

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु युग नव जागरण का युग है।
- इस युग मे अनेक गद्य विधाओं का विकास हुआ।
- भारतेन्दु युग मे जिन साहित्यिक रूपों और प्रवृत्तियों का बीज बोया गया था, वह द्विवेदी युग मे खूब फला फूला।
- पूर्व प्रेमचंद युग हिन्दी उपन्यास के विकास का आरम्भिक काल है।
- प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास लेखन की परम्परा में दो ही प्रवृत्तियाँ उभरकर आई उपदेशात्मक तथा मनोरंजनात्मक।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद किस काल के साहित्यकार है?
2. आधुनिक काल के आरंभिक युग का नाम क्या है?
3. भारतेंदु युग का पूरा नाम क्या है?
4. प्रेमचंद पूर्व युग के दो उपन्यासकार का नाम लिखिए?
5. प्रेमचंद कौन है?
6. जासूसी उपन्यासों की धारा की शुरुआत किसने की?
7. किसी एक ऐतिहासिक उपन्यासकार का नाम लिखिए?
8. हिन्दी कहानी का उदय किस से जुडी हुई है?

Answers / उत्तर

1. आधुनिक काल।
2. भारतेंदु युग।
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र युग।
4. बालकृष्ण भट्ट, देवी प्रसाद शर्मा।
5. आधुनिक काल के सशक्त साहित्यकार है प्रेमचंद।
6. बाबू गोपालराम गहमरी
7. किशोरीलाल
8. सरस्वती पत्रिका से

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद्र पूर्व हिन्दी कथा साहित्य।
2. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

इकाई 3

प्रेमचंद युगीन हिन्दी कथा साहित्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की समाजवादी विचारधारा समझता है
- कहानीकार प्रेमचंद और अन्य कहानिकारों से परिचय प्राप्त करता है
- प्रेमचंद युगीन साहित्य की श्रेष्ठता समझता है
- उपन्यासकार प्रेमचंद और अन्य उपन्यासकारों को जानता है
- प्रेमचंद युगीन साहित्य की श्रेष्ठता समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी साहित्य का विकास शुरू हुआ है। प्रेमचंद ने साहित्य के स्तर को ऊँचा किया और हिन्दी साहित्य को विश्व के समक्ष ले जाने का सफल प्रयास भी किया। प्रेमचंद युगीन साहित्य में, किसी न किसी समसामायिक समस्या का चित्रण मार्मिक रूप में हुआ है। उन्होंने साहित्य को अधिक संगठित और क्रमबंध कथावस्तु दी। जीते जागते मानव चरित्रों की प्रतिष्ठा की। उन्होंने साहित्य का प्रणयन किया। जिनसे समाज को आगे विकास का मार्ग मिला। प्रेमचन्द ने सस्ते मनोरंजन के स्थान पर अपने युग और समाज के ज्वलंत समस्याओं को अपनी कला का लक्ष्य बनाया। प्रेमचंद की हर रचना बहुमूल्य है जो अपने समय की सच्चाई को बयां करती हैं और उनकी ख़ासियत है कि वे आज भी प्रासंगिक हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

उपन्यास साहित्य का विकास, कहानी सम्राट, उपन्यास सम्राट, प्रेमचंद युगीन अन्य साहित्यकार, यथार्थवादी रचनाएँ

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरम्भ किया। जब सरकार ने उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोज़े वतन' ज़ब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद को हिन्दी और उर्दू के महानतम साहित्यकार माना जाता है। प्रेमचंद की रचनाओं को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी थी। प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास में एक नई परंपरा की शुरुआत की जिसने आने वाली पीढ़ियों के साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया। प्रेमचंद ने साहित्य में यथार्थवाद की नींव रखी। प्रेमचंद की रचनाएँ हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।

कहानीकार प्रेमचंद

हिन्दी कहानी में प्रेमचन्द युग का आरम्भ सन् 1915

ई॰ से माना जाता है। मुंशी प्रेमचंद की रचना-दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में प्रवृत्त हुई। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की। प्रमुखतया उनकी ख्याति कथाकार के तौर पर हुई और अपने जीवन काल में ही वे 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित हुए। उनकी लगभग 300 कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है। इनमें 'अन्धेर', 'अनाथ लड़की', 'अपनी करनी', 'अमृत', 'आत्माराम', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'कफन' आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचन्द युगीन अन्य कहानीकार

मुशी प्रेमचन्द जिस अवधि में कहानियाँ लिख रहे थे उसी अवधि में कई कहानीकारों ने इस विधा को आगे बढ़ाने के लिए अपनी लेखनियाँ उठायी। जिनमें जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन आदि मुख्य कहानीकार हैं। इसी युग में जिन अन्य कहानीकारों ने हिन्दी कहानी विधा को नई दिशा प्रदान की उनमें श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्री शिव पूजन सहाय, श्री वृन्दावन लाल वर्मा, श्री गोपाल राम गहमरी, श्री रायकृष्ण दास, पदुम लाल पुन्नालाल वख्शी, रमाप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी पंडित ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव आदि का नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

उपन्यासकार प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद जी ने एक दर्जन से अधिक उपन्यासों की रचना की थी। जिसमें सन् 1918 में प्रकाशित उनका पहला उपन्यास 'सेवासदन' और अंतिम उपन्यास सन 1936 में प्रकाशित 'गोदान' था। गोदान को हिन्दी साहित्य की अमर कृति भी माना जाता है। मुंशी जी के सभी उपन्यासों की सूची इस प्रकार है। 'सेवासदन', 'वरदान', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान', 'मंगलसूत्र', 'प्रेमा', 'प्रतिज्ञा' आदि।

प्रेमचंद के उपन्यास जन जीवन से जुड़े हुए थे। प्रेमचंद ने सामाजिक जीवन तथा उससे जुड़ी समस्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उन्होंने समाज के मध्यम तथा निम्न वर्ग के लोगों के जीवन तथा उससे जुड़ी समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया। प्रेमचंद्र ने घोषणा की है कि मैं समाज का झंडा लेकर चलने वाला व्यक्ति हूँ। समाज का अर्थ उसमें रहने वाले प्रत्येक वर्ग तथा जाति से था। प्रेमचंद ने अपने से पूर्व युग के उपन्यास लेखकों की भाँती केवल राजा महाराजाओं, जमींदारों तथा उच्च वर्ग की कथाओं को ही अपने उपन्यास का आधार नहीं बनाया। उन्होंने समाज के मध्यम तथा निम्न वर्ग के लोगों के जीवन तथा उससे जुड़ी समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद युगीन अन्य उपन्यासकारों को भी प्रेमचंद के उपन्यासों से प्रेरणा प्राप्त हुई है। प्रेमचंद युग का उपन्यास साहित्य प्रणय गाथाओं, रहस्यपूर्ण प्रसंगों तथा तिलस्मी और अय्यारी की अंधी गुफाओं से निकलकर जन सामान्य के जीवन से जुड़ गया। प्रेमचंद के तथा उस युग के अन्य उपन्यासों में उस समय की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का चित्रण दिखाई देता है। प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', वृन्दावन लाल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, जी.पी. श्रीवास्तव आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने काव्य, नाटक आदि क्षेत्रों में सफलता पाने के साथ-साथ उपन्यासों की रचना करके भी ख्याति अर्जित की। उन्होंने कंकाल (1929 ई.) तथा तितली (1934 ई.) नामक दो उपन्यासों की रचना की है। 'इरावती' नामक एक अधूरा उपन्यास भी उन्होंने लिखा है जिसे वे अपनी अकाल मृत्यु के कारण पूरा नहीं कर सके।

इसके अलावा नाटक, अनुवाद, बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। मंगलसूत्र उनकी एक अपूर्ण (अधूरी) रचना है। अंग्रेजों द्वारा उनकी रचना सोज़-ए-वतन को जब्त कर लिया गया था।

प्रेमचंद युगीन हिन्दी कथा साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में यथार्थ चित्रण के माध्यम से अपने विचारानुसार विभिन्न समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए हैं। अपनी साहित्य में प्रेमचंद ने, स्वाधीनता के लिए संघर्षरत भारत का सजीव और मार्मिक इतिहास का चित्रण किया था। गांधीजी के नेतृत्व में हुए स्वाधीनता आंदोलन का सन् 1918 से लेकर 1936 तक का यथार्थ इतिहास प्रेमचंद के उपन्यासों में उपलब्ध हैं।

प्रेमचंद युगीन साहित्य पहली बार सहृदय को कल्पना जगत से जीवन की यथार्थ भूमि पर पहुँचाया। प्रेमचंद ने सोद्देश्य लिखा, मनोरंजन का एक नया स्तर उद्घाटित किया। अपने समय के पाठक वर्ग के कलात्मक साधना को विकसित कर उससे एक सजग और सामाजिक बोधवाले पाठक वर्ग के रूप में विकसित कर प्रेमचंद ने सही अर्थों में उपन्यास क्षेत्र में एक नए युग प्रवर्तन को संभव बनाया।

प्रेमचंद, युग के अनेक लेखक समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे, लेकिन प्रेमचंद के समान किसी ने ऐसी दृढता से इतनी लंबी अवधि तक और इतने सुसंगत रूप से पीड़ित मानवता का पक्ष नही लिया। यह उनका युगांतकारी महत्व है- हिन्दी साहित्य के लिए और भारतीय साहित्य के लिए।

पीडितों के प्रति इतनी सहानुभूति रखने वाले अन्य साहित्यकार बिरले ही हुई। जनता को समझने वाले, जनता के प्रति वास्तविक सहानुभूति रखने वाले, जन-जीवन को अपना जीवन समझनेवाले, जन हित केलिए आत्मानुभूति देने वाले भारत के राजनीतिक क्षेत्र में एक गांधीजी हुए और हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक प्रेमचंद। मुहावरों और सूक्तियों का प्रयोग करने में प्रेमचंद जी बड़े कुशल थे। उन्होंने शहरी और ग्रामीण दोनों ही प्रकार के मुहावरों का खूब प्रयोग किया है। प्रेमचंद की सी मुहावरेदार शैली कदाचित ही किसी हिन्दी लेखक की हो। क्षमा कहानी में प्रयुक्त एक सूक्ति देखें- 'जिसको तलवार का आश्रय लेना पड़े वह सत्य ही नहीं है।' प्रेमचंद जी की शैली पर उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप से अंकित है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचन्द युगीन साहित्य मानवतावाद की तरह है, साहित्यकार का क्रांतिकारी जनवाद साहित्य की बहुत बड़ी शक्ति है। साहित्यकार केवल यथार्थवादी कलाकार ही नहीं, यथार्थवाद के सही व्याख्या प्रस्तुत करने वाले सृष्टा व्यक्तित्व भी थे। प्रेमचंद ने अपने पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व एवं मनोवैज्ञानिकता का समावेश करके उन्हें कल्पना लोक से उतारकर यथार्थ के धरातल पर स्थापित किया है। प्रेमचंद के उपन्यास पात्र हमें हमारे समान ही सोचते-विचारते प्रतीत होते हैं। उनमें मानव सुलभ गुण दोष विद्यमान है। इस प्रकार उनके पात्र सजीव और जीवंत प्रतीत होते हैं। इन्ही सब विशेषताओं के कारण निसंदेह हम उन्हें हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यासकार कह सकते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद ने साहित्यकार ने दायित्व को समझते हुए साहित्य को समाज का दर्पण बना दिया है। अतः प्रेमचंद को हिन्दी उपन्यास सम्राट कहना सर्वथा उचित है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास में एक नई परंपरा की शुरुआत की जिसने आने वाली पीढ़ियों के साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया।
- प्रेमचंद ने साहित्य में यथार्थवाद की नींव रखी।
- प्रेमचंद की रचनाएँ हिन्दी साहित्य की विरासत हैं।
- प्रेमचंद ने अपने पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व एवं मनोवैज्ञानिकता का समावेश करके उन्हें कल्पना लोक से उतारकर यथार्थ के धरातल पर स्थापित किया है।
- प्रेमचंद ने, स्वाधीनता के लिए संघर्षरत भारत का सजीव और मार्मिक इतिहास का चित्रण किया।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपन्यास सम्राट कौन थे?
2. प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम क्या है?
3. प्रेमचंद युगीन दो साहित्यकारों के नाम लिखिए।
4. प्रेमचंद के साहित्य की प्रमुख विशेषता क्या है?
5. प्रेमचंद्र किस नाम से जाने जाते हैं?
6. प्रेमचंद, युग के अनेक लेखक किस विचारधारा से प्रभावित थे?
7. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यासकार कौन थे?
8. 'कंकाल' तथा 'तितली' के रचनाकर कौन हैं?

Answers / उत्तर

1. मुंशी प्रेमचंद।
2. धनपतराय।
3. पांडे बेचन शर्मा उग्र, जयशंकर प्रसाद।
4. आदर्श और यथार्थता।
5. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी।
6. समाजवादी विचारधारा से
7. मुंशी प्रेमचंद।
8. जयशंकर प्रसाद।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचन्द युग की विशेषताएँ लिखिए।
2. साहित्यकार प्रेमचंद पर टिप्पण लिखिए।
3. प्रेमचंद युग की साहित्य की विशेषताएँ क्या है?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 4

प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की रचनाओं के माध्यम से भारत के सामाजिक समस्याएँ समझता है
- प्रेमचंद की रचनाओं में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है
- प्रेमचंद की रचनाओं में व्याप्त आदर्शवाद और यथार्थवाद का प्रभाव समझता है
- तत्कालीन आर्थिक समस्याओं का चित्रण समझता है
- प्रेमचन्द पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव जानता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचन्द केवल एक कथाकार ही नहीं थे। उनकी संपादकीय टिप्पणियाँ केवल परिस्थितियों या घटनाओं की प्रतिक्रियायें नहीं हैं, उनमें एक भविष्यद्रष्टा जागरूक विचारक का चिंतन है। प्रेमचन्द ने गरीबी को अत्यंत निकट से देखा था। उन्होंने गरीबों को भूख से तडपते देखा था और उन्होंने गरीबों पर होनेवाले अत्याचार और अन्याय को अपनी आँखों से देखा था। इसका परिणाम यह हुआ कि उन गरीबों के उद्धार केलिए उन्होंने क्रांति-भूमि तैयार की। किसान और मज़दूर को आनंद और उल्लास देने की उन्होंने भरपूर कोशिश की साहित्य को समाज का प्रतिबिंब मानना, समाज की बातें साहित्य में चित्रित करना, समाज में राष्ट्रीय चेतना का जागरण करना आदि विशिष्टताएँ प्रेमचंद युग में हिन्दी में हुआ था। इस दृष्टि से देखा जाए तो प्रेमचंद्र अपने उर्दु कहानियों में ही, हिन्दी की तूलना में एकदम आधुनिक चेतना संपन्न कहानीकार के रूप में पाठक के सामने आते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आर्थिक समस्याएँ, उर्दु साहित्य का प्रभाव, भारतीय संस्कृति, किसान-मज़दूरों के प्रति गहरी संवेदना, समकालीन उपन्यासकार, रूढ़िवादिता का चित्रण

Discussion / चर्चा

भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति

उर्दु साहित्य का प्रभाव होने के कारण प्रेमचंद मुस्लिम संस्कृति, इतिहास एवं साहित्य से अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए उन्होंने अपनी साहित्य में मुस्लिम संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मुगलकालीन इतिहास के आधार पर उन्होंने कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द जी के, साहित्य में भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और अनाचारों का भी चित्रण किया है। मुस्लिम बादशाहों की विलासिता क भी उन्होंने वर्णन किया है।

उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करने के लिए आदर्श को ही मुख्य रूप से अपनाया है। प्रेमचंद ने राजपूत जाति के स्त्री और पुरुषों की वीरता तथा वचनपालन को अपनी कहानियों में अंकित किया है। इसलिए ऐतिहासिक कहानियां चरित्र प्रधान भी हो गयी हैं। राजा हरदौल,

रानी सारधा, सति, मर्यादा के वेदि, जुगनू का चमक आदि कहानियां राजपूत जाति के आदर्शों से परिपूर्ण है।

भारतीय संस्कृति का चित्रण करना प्रेमचंद का लक्ष्य था। उनके पात्र कायर नहीं हैं। वह परिस्थितियों से संघर्ष करके जीवन बिताते है। इसलिए प्रेमचंद के बारे में डॉक्टर नगेंद्र ने ठीक ही कहा है:- यदि इतिहास राजनीति से आतंकित होकर विवेक खो बैठा, तो वह उन्हें भी पट्टाभि के इतिहास नेहरु और राजेंद्र बाबू की जीवनी से कम महत्व नहीं देगा। उसके मूलतः दो कारण है- एक तो यह है कि प्रेमचंद ने अत्यंत सचेत होकर, अपने साहित्य को युग जीवन का माध्यम बनाया है। दूसरे यह है कि उन्होंने युग धर्म के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित करते हुए सर्वांग जीवन को ग्रहण किया।

भारतीय किसानों का चित्रण

प्रेमचन्द ने सामान्यतः किसानों का ही पक्ष लिया है। इसके अलावा प्रेमचन्द किसानों की दृष्टि को इस प्रकार से उपस्थित करते हैं जो किसानों के अच्छे जीवन की परिकल्पना के रूप में उपस्थित होती हैं। प्रेमचन्द सम्पूर्ण समाज के लिए तो नहीं पर किसान के अच्छे जीवन की बहुत कामना करते हैं। वे जानते हैं कि किस प्रकार एक किसान अपने जीवन की छोटी-छोटी आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए तरसता रहता है और ये आकांक्षाएँ उसकी जीवन भर पूरी नहीं हो पाती। होरी की गाय लेने की इच्छा भी ऐसी ही इच्छा है जो अथक परिश्रम करने के बावजूद भी पूरी नहीं हो पायी। प्रेमचन्द ने उनकी ऐसी अपूर्ण इच्छाओं के माध्यम से यह दिखाया है कि किसानों के शोषण की मात्रा कितनी अधिक है।

आर्थिक समस्याओं का चित्रण

हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचन्द का पदार्पण उस समय हुआ जब भारत की दरिद्रता अपनी चरमसीमा पर थी। तत्कालीन समाज से प्रभावित बातों को उन्होंने अपनी कहानियों में स्थान दिया। प्रेमचन्द के समय देश की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। किसानों के पास धरती थी, पर उसका फल भोग रहे थे ज़मीन्दार लोग। शोषण के कारण किसान लोग पीडित थे। किसान के अभिशप्त जीवन को प्रेमचन्द ने निकट से देखा। श्रमिक वर्ग भी आर्थिक हीनता से पीडित थे। उनके साथ महाजन का व्यवहार भी क्रूर था। धनिकवर्ग सुखी जीवन बिताते थे। मध्यमवर्ग की आर्थिक दशा भी अत्यन्त दयनीय थी। उनको रहने केलिए एक मकान बनाना भी असाध्य कार्य था। इन सब बातों का वर्णन प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में करती है। उनकी कहानियाँ आर्थिक समस्याओं का जीता जागता चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

प्रेमचन्द की जीवनदृष्टि उनके संपूर्ण साहित्य में विद्यमान है। अपने कथा साहित्य में उन्होंने किसान-मज़दूरों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। वे दरिद्र किसानों के अंदर भगवान का दर्शन करते थे। समाज के अन्य वर्गों के हृदय में गरीबों और शोषितों के प्रति सहानुभूति जगाने केलिए उन गरीबों का वर्णन करते हैं जो निरुपाय होकर मार खाते हैं और कष्ट सहते हैं। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनता को यह संदेश दिया कि वे धन के पीछे पागल न हों, सम्पत्ति जुटाने केलिए अन्याय न करें।

देश प्रेम

प्रेमचन्द ने एक ओर शोषितों से इस देश के गरीबों को मुक्त करने की कोशिश की तो दूसरी ओर ब्रिटिशों के चंगुल से समूचे देश को स्वतंत्र करने का परिश्रम किया। प्रेमचन्द के सम्बन्ध में डॉ. इन्द्रनाथ मदन का यह कथन कितना सार्थक है 'वे पूर्ण रूप में साहित्यिक जीवन बिताने का निश्चय लेकर इस - क्षेत्र में आए, और अपने प्रथम कहानी संग्रह 'सोजे बतन' 1907 के प्रकाशन पर कलक्टर की फटकार से मर्माहत होकर बाजार को अपनी कहानियों से पाट देने केलिए नवाब राय का चोला उर्दू में छोड़कर प्रेमचन्द की आत्मा लेकर हिन्दी में प्रविष्ट हुए।' यह एक संयोग है कि हिन्दी कहानियों का जन्म राष्ट्रीय पुनर्जागरण के साथ हुआ और इसने प्रेमचंद जैसे महान कहानीकार को जन्म दिया। सन् 1911 -1920 की अवधि में प्रकाशित प्रेमचंद की कहानियों में राष्ट्रीयता का स्वर दिखाई देता है।

गाँधीवादी विचारधारा पर प्रभाव

गाँधीवाद के प्रभाव से भी प्रेमचन्द अछूत न सह सके। गाँधीवादी विचारधारा जैसे सत्याग्रह, अहिंसा आदि का वर्णन हम उनकी कहानियों में देख सकते हैं। उन्होंने स्वयं सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने लिखा है- 'राष्ट्रीय भावधारा में प्रेमचन्द मूलतः गाँधीवादी थे। अछूतोद्धार, दलित निर्धन देहाती के साथ अपार संवेदना, सुधार तथा राष्ट्रीय भावना का जागरण उनकी कहानी कला के भावपक्ष का एक जबरदस्त मोर्चा है। इस मोर्चे से उन्होंने गाँधीवाद की प्रतिष्ठा और राष्ट्रीय जागरण

को जोश दिलाया है, झूठे विश्वासघाती राष्ट्रसेवक, दम्भी नेताओं की व्यंग्यात्मक आलोचना की है।

सामाजिक भलाई की कामना

प्रेमचन्द सभी मानवों में एक ही आत्मा का दर्शन करते थे और सभी के सुखमय जीवन की कामना किया करते थे। उन्होंने पाखंड, धूर्तता, अन्याय, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि दूषित मनोवृत्तियों से घृणा करना सिखाया। वे मानव की दुर्बलताओं को अच्छी तरह जानते थे और उन्हें दूर करने की सलाह देते थे। वे इसी दुनिया को स्वर्ग बनाना चाहते थे। उनकी दृष्टि में मोक्ष दीन-दुःखी मानवों के कष्टों का निवारण ही है।

आदर्शवादी मनोभाव का चित्रण

प्रेमचन्द के बारे में यह नहीं कहा जा सकता है कि वे कोरे आदर्शवादी हैं। उन्होंने कथा साहित्य को कल्पना के अयथार्थ धरातल से खींचकर यथार्थ की सहज भूमि पर प्रतिष्ठित किया। आदर्श की अव्यवहारिकता का आक्षेप उनकी कथाओं केलिए उपयुक्त नहीं ठहरता। उनकी दृष्टि केवल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या धार्मिक नहीं है। उन्होंने उत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन को अपनी आँखों से देखा ही नहीं बल्कि भोगा भी है। उनकी दृष्टि अनेक जटिल समस्याओं का सामना करते हुए जीवन की कठोर स्थितियों से जूझनेवाली निरीह जनता के जीवन पर फैली हुई है। प्रेमचन्द की दृष्टि वर्ग विशेष पर न रुक कर सभी वर्गों पर रम रही। यह प्रवृत्ति सम्पूर्ण जन-जीवन को समग्र रूप से चित्रित करने में सहायक साबित हुई।

सामाजिक रूढ़िवादिता का चित्रण

सामाजिक रूढ़ियों में प्रेमचंद ने विवाह से संबंधित रूढियो जैसे बहुविवाह, बेमेल-विवाह, अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह, दहेज प्रथा, पुनर्विवाह, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा, वृद्ध विवाह, बाल विवाह तथा पतिव्रत धर्म के संबंध में बड़ी संवेदना और सचेतना के साथ लिखा है। उस समय के समाज में यह बात घर कर गई थी कि तीन पुत्रों के जन्म के बाद जन्म लेने वाली बेटी अशुभ होती है। प्रेमचंद ने इस रूढ़िवादिता का अपनी कहानी तीतर के माध्यम से खुलकर विरोध किया है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचन्द ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने भारतीय किसान की दयनीय स्थिति के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति ही नहीं बेचैनी और चिन्ता भी व्यक्त की। उनका स्पष्ट मत था कि किसान की आर्थिक मुक्ति के बिना पूर्ण स्वाधीनता के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

प्रेमचंद युग के साहित्यकारों में प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है वह प्रशंसनीय ही है। प्रेमचंद के उपन्यास राष्ट्रीय आंदोलन, कृषक समस्या, मानवतावाद, भारतीय संस्कृति, शोषण, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, आदि विविध विषयों से सम्बन्धित हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचंद का मूल्यांकन करते हुए लिखा है, 'प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुःख- सुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।'

प्रेमचंद ने हिन्दी कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोड़ने का काम किया। वस्तुतः 'सेवासदन' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी उपन्यास को नई दिशा प्राप्त हो गयी। इस उपन्यास में उन्होंने विवाह से जुड़ी समस्याओं- दहेज प्रथा, कुलीनता का प्रश्न, पत्नी का स्थान आदि को उठाया है किन्तु इन्हें प्रस्तुत करने का ढंग पूर्ववर्ती उपन्यासों से एकदम अलग है। 'निर्मला' में उन्होंने दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया है। कृषक जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण उन्होंने 'प्रेमाश्रम' और 'गोदान' में किया है। गोदान उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कहा जाता है। ग्रामीण जीवन का ऐसा यथार्थ एवं प्रामाणिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है कि इसे सर्वत्र सराहना प्राप्त हुई है। समाज में व्याप्त छुआछूत एवं साम्प्रदायिकता की समस्या को भी उन्होंने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी है। इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यास जीवन के विविध पहलुओं से जुड़े हुए हैं। वे हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार माने जाते हैं। विषयवस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से प्रेमचंद के समकक्ष हिन्दी का कोई अन्य उपन्यासकार को खड़ा नहीं किया जा सकता। प्रेमचंद के उपन्यासों में विषय की विविधता एवं व्यापकता के साथ-साथ चरित्रों का स्वाभाविक विकास दिखाया गया है। उनके उपन्यासों में राजनीतिक समस्याओं का निरूपण भी किया गया है। 'रंगभूमि' में शासक वर्ग के अत्याचारों का चित्रण है तो 'कर्मभूमि' में स्वतंत्रता संग्राम की एक झलक है। 'गबन'

में उन्होंने स्त्रियों के आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों का चित्रण किया है तो 'कायाकल्प' 'पुनर्जन्म' से सम्बन्धित है। प्रेमचंद के उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता है- आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद, जिसके कारण वे पाठकों में अति लोकप्रिय हुए हैं। भाषा प्रयोग में वे अपने समकालीन सभी उपन्यासकारों से श्रेष्ठ हैं और इस दृष्टि से वे एक मानदण्ड बन गये हैं। अपनी इन विशेषताओं के कारण ही वे हिन्दी उपन्यास में एक नये युग का सूत्रपात कर सकने में सफल हुए हैं।

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' वृंदावन लाल वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, जी.पी. श्रीवास्तव आदि प्रमुख हैं। 'प्रसाद' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने काव्य, नाटक आदि क्षेत्रों में सफलता पाने के साथ-साथ उपन्यासों की रचना करके भी ख्याति अर्जित की। उन्होंने 'कंकाल' (1929 ई.) तथा 'तितली' (1934) नामक दो 'उपन्यासों' की रचना की। 'इरावती' नामक एक अधूरा उपन्यास भी उन्होंने लिखा है जिसे वे अपनी अकाल मृत्यु के कारण पूरा नहीं कर सके। 'कंकाल' में प्रसादजी ने व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन किया है जबकि 'तितली' के द्वारा उन्होंने प्रेम के आदर्श स्वरूप की व्याख्या की है साथ ही इसमें ग्रामीण समस्याओं का भी चित्रण किया गया है। प्रसाद के उपन्यासों में नाटकीयता अधिक है साथ ही अलंकृत भाषा का प्रयोग भी है। चरित्रांकन उतना सूक्ष्म नहीं है जितना प्रेमचंद के उपन्यासों में दिखाई पड़ता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचन्द जी के, साहित्य में भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और अनाचारों का भी चित्रण किया है।
- किसानों के अभिशप्त जीवन को प्रेमचन्द ने निकट से देखा और उसका चित्रण भी रचनाओं में किया।
- प्रेमचन्द ने एक ओर शोषितों से इस देश के गरीबों को मुक्त करने की कोशिश की तो दूसरी और ब्रिटिशों के चंगुल से समूचे देश को स्वतंत्र करने का परिश्रम किया।
- प्रेमचंद ने हिन्दी कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोड़ने का काम किया।
- प्रेमचंद हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार माने जाते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद्र जी की उर्दू में स्वीकृत नाम क्या है?
2. प्रेमचंद युग के श्रेष्ठ साहित्यकार का नाम क्या है?
3. प्रेमचंद्र द्वारा संपादित पत्रिका का नाम क्या है?
4. प्रेमचंद्र जी की सर्वश्रेष्ठ रचना क्या है?
5. जयशंकर प्रसाद किस युग के साहित्यकार है?
6. हिन्दी कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोड़ने का काम किया। कौन?
7. 'रंगभूमि' में चित्रित विषयवस्तु क्या है?
8. विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक किसके समकालीन साहित्यकार थे?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers / उत्तर

1. नवाबराय
2. प्रेमचंद्र, पांडे बेचन शर्मा उग्र, जयशंकर प्रसाद आदि
3. हंस, जागरण
4. गोदान
5. प्रेमचंद युग
6. प्रेमचंद
7. शासक वर्ग के अत्याचारों का चित्रण
8. प्रेमचंदजी के

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद एक उच्च कोटि के साहित्यकार है। संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. प्रेमचंद के उपन्यासों की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए?
3. प्रेमचंद्र की साहित्य में व्याप्त सामाजिक पृष्ठभूमि व्यक्त कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियां : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

इकाई 5

परवर्ती कथा साहित्य पर प्रेमचंद का प्रभाव

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- परवर्ती कथा साहित्य पर प्रेमचंद का प्रभाव समझता है
- प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय प्राप्त होता है
- प्रेमचंदोत्तर साहित्य की श्रेष्ठता समझता है
- आंचलिक उपन्यासों से परिचित होता है
- मनोविश्लेषणवादी उपन्यास और साहित्यकारों के बारे में समझता है
- सामाजिक, व्यक्तिवादी और ऐतिहासिक उपन्यासों से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद के बाद हिन्दी साहित्य बहुमुखी रूप धारण कर आगे बढ़े। इस नवीन युग में प्रगतिवादी, आंचलिक, और पाश्चात्य जगत में उत्पन्न, नयी-नयी विचारधाराओं और पद्धतियों का अनुसरण करनेवाले अनेक उपन्यास रचे गए। प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी साहित्य की चेतना रूपांतरण के बड़े लेखक हैं। उन्होंने अपने परवर्ती लेखकों का मानस विस्तार कर सर्वाधिक प्रभावित किया। समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व देते हुए साहित्य लिखे गए हैं। जैनेंद्र, भगवती चरण वर्मा, इलाचंद्र जोशी, धर्मवीर भारती आदि इसी वर्ग के साहित्यकार है।

सन् 1950 के आसपास के कलाकारों की नई पीढ़ी सामने आई है, जिसने हिन्दी साहित्य को काफी समृद्ध किया। सामाजिक साहित्य में समाज और व्यक्ति पारस्परिक सापेक्षिक महत्व को स्वीकार दोनों को ही केंद्र बनाकर, उनकी समस्याओं और संघर्षों का अंकन किया गया है। यशपाल, रांगेय राघव, अमृतराय नागार्जुन, आदि यथार्थपरक समाजवादी साहित्यकार है। मनोविश्लेषणवादी साहित्यकार मनोविश्लेषण शास्त्रों को आधार बनाते हैं। सन् 1950 के बाद लिखी गई साहित्य में अनेक ऐसी रचनाएँ लिखी गई हैं, जिनमें यौन भावना, यौन संबंधों और यौन कृतियों आदि का प्रधान और खुला चित्रण हुआ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

साहित्य पर प्रगतिवाद, फ्रोयडवाद, आंचलिक रचनाएँ, मनोविश्लेषणवादी साहित्यकार, सामाजिक, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक

Discussion / चर्चा

जैनेंद्र, अज्ञेय आदि हिन्दी के मनोविश्लेषणवादी साहित्यकार है।

आंचलिक उपन्यासों में किसी अंचल या प्रदेश विशेष के संपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण स्थानीय बोली के पुट के साथ किया जाता है। फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, रांगेय राघव, अमृतलाल

नागर आदि ने अनेक आंचलिक उपन्यास लिखे हैं।

प्रेमचंदोत्तर युग में सियारामशरण गुप्त, अमृतलाल नागर, उपेंद्रनाथ अश्क, भगवती प्रसाद वाजपेई, उषा देवी मित्रा, रामेश्वर शुक्ल अंचल, राहुल सांकृत्यायन आदि साहित्यकारों के नाम सादर लिए जा सकते है।

प्रेमचंदोत्तर युग में सामाजिक व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक आदि अनेक प्रकार के साहित्य का प्रणयन हुआ है। प्रेमचंदोत्तर युग के साहित्य में, अनेक प्रवृतियाँ व धाराएँ परिलक्षित होती हैः-

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास प्रवृत्तियाँ

प्रेमचन्द तक आते-आते उपन्यास शुद्ध यथार्थवादी धरातल पर स्थापित हो चुका था। प्रेमचन्दोत्तर युग में इसी यथार्थ के विभिन्न रूप आयाम उपलब्ध होते हैं। मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा फ्रायड प्रभृति मनोवैज्ञानिकों के मनोविश्लेषणवाद ने समाज एवं व्यक्ति के यथार्थ को और भी स्पष्ट कर दिया। सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासों का सूत्रपात तो प्रेमचन्द ने कर ही दिया था। मानसिक यथार्थ को उद्‌घाटित करने वाले मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सूत्रपात जैनेंद्र कुमार द्वारा हुआ। उनके अतिरिक्त इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, डॉ. देवराज आदि लेखक इसी धारा में आते हैं। सामाजिक उपन्यासों की धारा में कुछ लेखक (प्रगतिवादी) मार्क्सवादी साम्यवादी सिद्धान्तों को लेकर उपन्यास रचना में प्रवृत्त हुए। उनके उपन्यास समाजवादी उपन्यास कहलाते हैं। यहाँ यह बात ध्यातव्य है कि हिन्दी उपन्यास के समीक्षा क्षेत्र में 'समाजवादी' शब्द 'मार्क्सवादी' के रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। यशपाल, नागार्जुन, डॉ. रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त आदि इस धारा के उपन्यासकार हैं।

सामाजिक उपन्यास

वास्तव में सभी उपन्यास सामाजिक होते हैं। परन्तु अपने रूढ़ अर्थो में सामाजिक उपन्यास की संज्ञा से वे उपन्यास अभिहित किये जाते हैं जिनमें समाज का सम्पूर्ण चित्र उसके सारे यथार्थों के साथ अंकित किया जाता है। समाज, उसकी छोटी-बड़ी संस्थाएँ, उसकी परिस्थितियाँ, परिवर्तित जीवन-मूल्य आदि का पूर्वाग्रह रहित चित्रण इनमें होता है। ऐसे उपन्यास किन्हीं पूर्व निश्चित सिद्धान्तों को लेकर नहीं चलते। हिन्दी में अपने आरम्भ काल से ही इन उपन्यासों का प्रचलन हो चला था, परन्तु प्रेमचन्दजी ने इनको सर्वांगीणता प्रदान की। प्रेमचन्दोत्तर युग में भी यह परम्परा समाप्त नहीं हुई।

समाजवादी उपन्यास

सामाजिक और समाजवादी दोनों प्रकार के उपन्यास सामाजिक यथार्थ को रेखांकित करने वाले उपन्यास हैं, परन्तु जहाँ सामाजिक उपन्यासों की कोई निर्दिष्ट दृष्टि नहीं होती वहां समाजवादी उपन्यासों में यथार्थ को निरूपित करने वाली प्रगतिवादी मार्क्सवादी दृष्टि रहती है। प्रत्येक युग में और प्रत्येक वस्तु और पदार्थ में दो शक्तियों का द्वन्द्व निरन्तर चलता ही रहता है। मार्क्स ने इसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद नाम दिया है। समाजवादी उपन्यासों में समाज की समस्याओं का निरूपण इसी द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को ध्यान में रखकर किया जाता है।

समाजवादी उपन्यासकार सर्वहारा वर्ग का चितेरा होता है। दलित, पीड़ित एवं शोषित वर्ग में नयी चेतना उजागर कर उन्हें संघर्ष के लिये तैयार करना उनका उद्देश्य होता है। वे सब प्रकार के शोषणों का विरोध करते हैं, परन्तु शोषण के मूल में है आर्थिक असमानता। पूंजीवाद ही नहीं बल्कि उसे पोषित करने वाली सभी सड़ी-गली, पुरानी मान्यताओं व परम्पराओं के प्रति उनमें विद्रोह की भावना मिलती है। ईश्वर के प्रति आस्था, भाग्यवाद, पुर्नजन्मवाद आदि सभी मान्यताएँ प्रकारान्तर से व्यक्ति को कमजोर बनाकर उसे संघर्षशील होने से रोकती हैं। गरीब और शोषित यदि सोचें कि उसकी नियति ही दर-दर की ठोकरें खाना है तो कभी संघर्ष के प्रति उन्मुख नहीं होगा। अतः मार्क्सवाद में इन सबके प्रति घोर अनास्था का भाव मिलता है। स्त्री और पुरुष के बीच भी कोई विभाजक रेखा मार्क्सवाद नहीं खींचता। सौंदर्य विषयक दृष्टि भी उसकी जनवादी है।

मार्क्सवादी जनजीवन में ही सौंदर्य देखता है। आर्थिक असमानता के मार्ग में सामाजिक व धार्मिक रूढ़ियाँ और विसंगतियाँ अवरोधक होती हैं। अतः समाजवादी उपन्यासों में समाज व धर्म के ठेकेदारों का पर्दाफाश करने की प्रवृत्ति भी बलवती दिखायी पड़ती है। इस वर्ग के उपन्यासकारों ने अपनी कथावस्तु अधिकांशतः मध्यवर्ग से ली है। अतः समाजवादी उपन्यासों में उसके अस्तित्त्व की अस्वीकृति स्वाभाविक ही है।

आंचलिक उपन्यास

एक विशिष्ट भूभाग, अंचल या जनपद को उभारने के उद्देश्य से लिखित उपन्यासों को आंचलिक कहा गया है।

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' के प्रकाशन के बाद इस आंचलिक विधा का चौमुखी विकास हुआ है। डॉ. रणवीर रांग्रा के मतानुसार 'स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अब देश की एकाग्रता भंग हुई और देशोद्धार की अपेक्षा आत्मोद्धार की रौ चली, राष्ट्र की एकता को फोड़कर विविध प्रदेशों, जातीय वर्गों और धर्मों, संस्कृतियों की अनेकता प्रखर वेग से प्रस्फुटित हुई, तब हर किसी का ध्यान अपने प्रदेश, जाति-वर्ग, धर्म, संस्कृति के संरक्षण और विकास की ओर गया और इस दिशा में सचेष्ट प्रयत्न आरम्भ हुए आंचलिकता के पनपने के लिये। यह स्थिति अत्यन्त अनुकूल थी और आंचलिक उपन्यास की धारा पूर्ण वेग से चली।

ऐतिहासिक उपन्यास

डॉ. रणवीर रांग्रा ने ऐतिहासिक उपन्यास के प्रयोजन पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए लिखा है- 'लैसली स्टीफन का विश्वास है कि ऐतिहासिक कथानक अच्छे उपन्यासों के द्योतक है, उधर इतिहासकार पालमेव की धारणा है कि ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास के शत्रु होते हैं। ऐतिहासिक उपन्यास यदि साहित्य और इतिहास दोनों में से किसी के भी प्रति न्याय नहीं कर पाता तो ऐतिहासिक उपन्यास लिखने की और उपन्यासकार प्रवृत्त क्यों होता है? इस प्रश्न के कई उत्तर हैं। कुछ उपन्यासकार इतिहास का पुर्नमूल्यांकन करने की दृष्टि से इधर प्रवृत्त होते हैं, यथा वृन्दावनलाल वर्मा। जयशंकर प्रसाद और डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रवृत्ति इधर जान पड़ती है। हिन्दी में आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास इस प्रवृत्ति के द्योतक तक है, तो कुछ उपन्यासकार मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राणित होकर प्राचीन इतिहास के सहारे अपने मत का विवेचन-विश्लेषण एवं पुष्टि करने के हेतु ऐतिहासिक उपन्यास का पल्ला पकड़ते हैं।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, रांगेय राघव प्रभृति उपन्यासकार इस कोटि में आते है। कुछ भी हो ऐतिहासिक उपन्यास में भी वे ही श्रेष्ठ समझे जायेंगे जिनमें किसी युग-विशेष को उसके मूल यथार्थ रूप में पकड़ने की भरसक चेष्टा होगी। परन्तु यहाँ यह बात ज्ञातव्य रहे कि इस यथार्थ निर्माण के प्रयत्न में उपन्यास केवल शुष्क ऐतिहासिक विवरण मात्र न हो जाय।

जीवन की व्याख्या या उसका चित्र साम्यवादी चेतना के अनुप्राणित ऐतिहासिक उपन्यास-साम्यवादी-मार्क्सवादी दृष्टिकोण से इतिहास का विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले उपन्यासकारों में राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, रांगेय राघव प्रभृति मुख्य हैं। इन उपन्यासकारों ने कहीं तो प्राचीन काल की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था को अपने सिद्धान्तों के अनुकूल पाकर उसकी प्रशंसा की है अथवा उसकी व्याख्या की है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। उसका अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'सायकेलॉजी' यूनानी भाषा के 'सायके' और 'लोगस' के योग से बना है। 'सायके' का अर्थ है आत्मा और 'लोगस' का अर्थ है 'विचार-विमर्श'। अतः 'सायकेलॉजी' वह विज्ञान है जिसमें मनुष्य की आत्मा अथवा मन पर विचार किया जाता है। मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। हिन्दी उपन्यासों का विकास-क्रम घटना के चरित्र, चरित्र से व्यक्ति और व्यक्ति से मन की तरफ होता गया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में अचेतन मन की अछूती अनचीन्ही गहराइयों एवं जटिलताओं की परतों को उधेड़ने का कलात्मक उपक्रम रहता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि उपन्यास के अन्य प्रकारों में पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण नहीं होता। इसके बिना तो अच्छे उपन्यास सम्भव ही नहीं। परन्तु मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में तो उपन्यासकार का मुख्य प्रतिपाद्य ही मनोवैज्ञानिक वस्तु, पात्र एवं क्षण है। जिन बाह्य घटनाओं और संघर्षों का चित्रण सामाजिक उपन्यासकार अत्यन्त विस्तार के साथ करता है, हो सकता है मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार उन्हें छोड़ दें या अत्यन्त संक्षेप में उनका वर्णन कर दें।

Critical Overview / अवलोकन

संक्षेप में आलोच्य काल में उपन्यास के कथा-शिल्प में अनेक प्रयोग हुए। इस काल में कलाकार की शिल्प-समानता अपेक्षाकृत बढ़ी है, परन्तु इससे भावनाओ की अन्तःसरिता सूखनी नहीं चाहिये। शिल्पगत नवीनता जब फैशन का रूप धारण करती है, तब उपन्यास का हनन होता है। शिल्प कथ्य की आवश्यक शर्तों के रूप में जहाँ आता है, वहाँ उपन्यास के आन्तरिक सौन्दर्य को हानि नहीं पहुंचती। यह स्मरणीय है कि शिल्प वस्तुतः साधन है,साध्य नहीं। ये शिल्प और कथागत अभियान साठोत्तर उपन्यासों में भी संक्रमणशील रहे। हम यह लक्ष्य कर चुके हैं कि इनमें से अनेक लेखक सन् 1960 के पश्चात् भी

लिखते रहे हैं। अनेक लेखकों ने इस युग के अपने शिल्प को हमारे आलोच्य युग में और भी पैना किया तथा उसके साथ ही कलागत अभिनव प्रयोगों को विस्तार भी दिया जिस पर परवर्ती अध्यायों में विस्तार से विचार किया जायेगा।

Recap / पुनरावृत्ति

- सर्वप्रथम प्रेमचंद युगीन सामाजिकता का स्थान शनैः शनै वैयक्तिगता ग्रहण करने लगी।
- बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में, पाश्चात्य के राजनीतिक प्रभाव के परिणाम स्वरूप, समाजवादी, प्रगतिवादी धारा की साहित्य के रूप में प्रफुटित हुई।
- प्रेमचंदोत्तर युग की साहित्य में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परंपरा का प्रयोग हुआ है।
- प्रेमचंदोत्तर युग की साहित्य में हास्य व्यंग्यपरक परंपरा प्रयोग हुआ है।
- उस समय के रचनाओं में व्यक्त साहित्य की श्रेष्ठता।
- आलोच्य काल में उपन्यास के कथा-शिल्प में अनेक प्रयोग हुए।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इलाचंद्र जोशी किस युग के साहित्यकार है?
2. प्रेमचंदोत्तर युग की समयावधि क्या है?
3. एक आंचलिक उपन्यासकार का नाम लिखिए।
4. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी नाम से पुकारे जाने वाले साहित्यकार कौन है?
5. प्रेमचंद के समकालीन साहित्यकार का नाम लिखिए?
6. एक विशिष्ट भूभाग, अंचल या जनपद को उभारने के उद्देश्य से लिखित उपन्यासों को क्या कहा गया है?
7. मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित उपन्यास क्या है?
8. मनोवैज्ञानिक उपन्यास के प्रमुख प्रवर्तक कौन है?

Answers / उत्तर

1. प्रेमचंदोत्तर युग।
2. 1950 के बाद।
3. फणीश्वर नाथ रेणु।
4. प्रेमचंद।
5. पांडे बेचन शर्मा उग्र।
6. आंचलिक उपन्यास
7. मनोवैज्ञानिक उपन्यास
8. अज्ञेय

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंदोत्तर युग की साहित्य की विशेषताएँ क्या है?
2. प्रेमचंदोत्तर युग की सामाजिक परिस्थिति किस प्रकार के हैं?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियां : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

SGOU

इकाई 6

प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषताएँ समझता है
- प्रेमचंद युगीन साहित्यकारों का नाम समझता है
- उपन्यास व कहानी सम्राट प्रेमचन्द के बारे में समझता है
- प्रेमचंद की रचनाओं में उपलब्ध आदर्श और यथार्थ का परिचय प्राप्त होता है
- कालजयी साहित्यकार प्रेमचंद से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आज प्रेमचंद को गए पूरे तिरासी वर्ष बीत गए हैं, लेकिन उनके द्वारा साहित्य में वर्णित चुनौतियाँ इक्कीसवीं सदी में अपना चोला बदलकर और अधिक गम्भीर चुनौतियों के साथ हमसे रूबरू हैं। उदाहरण के लिए गोदान के गोबर और पण्डित मातादीन आज भी आपके गाँवों में घूमते मिल जाएँगे।

प्रेमचंद की जीवन दृष्टि उनके संपूर्ण साहित्य में विद्यमान है। प्रेमचंद सभी मानवों में एक ही आत्मा का दर्शन करते थे और सभी के सुखमय जीवन की कामना किया करते थे। वे मानव की दुर्बलताओं को अच्छी तरह जानते थे और उन्हें दूर करने की सलाह देते थे। प्रेमचंद्र ने अपनी साहित्य रचना द्वारा निष्काम कर्मयोग का प्रचार प्रसार किया। यह निश्चित ही है कि प्रेमचन्द 'मनुष्यता' के अमर कथाकार थे। जब तक समाज में अनीति, अन्याय, अत्याचार और अविचार है तब तक इनकी कृतियाँ मशाल का काम करेगी और जब मुक्ति के प्रकाश से मनुष्यता का मुख उज्ज्वल होगा, तब वे शोषित-पीड़ित जनता की जीवन गाथा से उसके जीवन व्यापी संघर्ष से हमारा परिचय कराती रहेंगी। प्रेमचन्द का जीवन तपस्वियों के सदृश था साहित्य-सेवा के लिए ही उनका जीवन था। साहित्य के लिए उन्होंने जीवन पर्यन्त लेखनी को अलग न किया। वे एक सफल तथा सच्चे उपन्यासकार माने जाते हैं। इस बात का निर्णय उनके साहित्य अथवा उनके उपन्यासों से हो जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अतुल्य प्रतिभा, उर्दु व हिन्दी लेखक, समाजवादी लेखक, भारतीय संस्कृति, प्रासंगिकता रचनाओं में, सामाजिक यथार्थ का चित्रण, संपादक प्रेमचंद

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद की हर रचना बहुमूल्य है जो अपने समय की सच्चाई को बयां करती हैं और उनकी ख़ासियत है कि वे आज भी प्रासंगिक हैं। प्रेमचंद्र अच्छा लेखक था पर रचनाओं की आमदनी से जीवन बिताना मुश्किल हो गया था। प्रेमचंद की जीवन दृष्टि उनके संपूर्ण साहित्य में विद्यमान है। अपनी कथा साहित्य में उन्होंने किसान-

मजदूरों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। वे दरिद्र किसानों के अंदर भगवान का दर्शन करते थे। समाज के अन्य वर्गों के हृदय में गरीबों और शोषितों के प्रति सहानुभूति जगाने के लिए उन गरीबों का वर्णन करते हैं। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनता को यह संदेश दिया है कि वे, धन के पीछे पागल न हो संपत्ति जुटाने के लिए लड़ाई न करें।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण

प्रेमचंद को भारतीय समाज के दाम्पत्य जीवन की विविधताओं की गहरी परख थी। होरी-धनिया के बहाने वे अभावग्रस्त दाम्पत्य में निहित प्रेमांकुरों का सुन्दर वर्णन कर जाते हैं। होरी धनिया को गुस्से में आकर मारता-पीटता है, तो थोड़ी देर बाद ही उसे पश्चाताप का भी अनुभव होता है। यहीं आकर पुनः प्रेम सम्बन्ध ऊष्मायित हो जाते हैं। इसके ठीक विपरीत वे 'कफन' कहानी में स्वार्थ की पराकाष्ठा का वर्णन उतनी ही सहजता से कर जाते हैं। घीसू और माधव का प्रसव के दर्द से कराहती बुधिया के पास इस कारण से न जाना कि एक यदि चला गया तो दूसरा उसके आलुओं पर हाथ साफ कर जाएगा, अपने पेट की आग शान्त करने के लिए मनुष्यता को भूल जाने की हद तक चले जाने का परिचायक है। उल्लेखनीय बात यह है कि प्रेमचंद ने कफन और गोदान दोनों को अपने जीवन के अन्तिम वर्ष अर्थात् सन् 1936 में लिखा था। ये दोनों रचनाएँ उनकी समाज पर पैनी नज़र की परिचायक हैं।

कहानियों की प्रासंगिकता

प्रेमचंद की हर रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। पंच परमेश्वर, कफन, पूस की रात आदि उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ है। प्रेमचंद्र सभी मानवों में एक ही आत्मा का दर्शन करते थे, सभी के सुखमय जीवन की कामना करते थे। उन्होंने पाखंड, धूर्तता, अन्याय, बलात्कार भ्रष्टाचार आदि दूषित मनोवृत्तियों से घृणा करना सिखाया। वे मानव की दुर्बलताओं को अच्छी तरह जानते थे और उन्हें दूर करने की सलाह देते थे। प्रेमचंद की कहानी ईदगाह आपने भी शायद ज़रूर पढ़ी होगी। हामिद को मेला घूमने के लिए उसकी दादी अमीना ने तीन पैसे दिए। मेले में किस्म-किस्म की मिठाईयाँ, झूले और तोहफ़े बिक रहे थे। जहाँ दूसरे बच्चों ने मेले से अपने लिए खिलौने, भिश्ती और मिठाइयाँ ख़रीदी, वहीं चार या पाँच साल के हामिद ने दादी के लिए चिमटा खरीदा। 6 पैसे के चिमटे को मोलभाव कर 3 पैसे में ख़रीद लेता है। क्योंकि रोटियाँ सेकते समय दादी का हाथ तवे से जल जाता था और पैसों की कमी की वजह से दादी चिमटा नहीं ख़रीद पा रही थी। हामिद ने अपने बचपन की ख़्वाहिशों को भुलाकर अपनी उम्र से बड़ा हो गया। गरीबी कैसे इंसान को उम्र से पहले बड़ा बना देती है, इस मनोविज्ञान को ईदगाह की कहानी खोल कर रख देती है।

उपन्यासों की प्रासंगिकता

'सेवासदन', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गोदान' आदि उनके प्रमुख उपन्यास है। 'गोदान' उपन्यास कृषक जीवन का महाकाव्य के नाम से जाने जाते हैं। उनकी साहित्य में मोक्ष दीन दुःखी मानवों के कष्टों का निवारण ही है। 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि', और 'गोदान' अपने प्रस से प्रकाशित किए हैं, इसके अलावा 'मान सरोवर' और 'प्रेम द्वादशी' आदि कहानी संग्रह भी अपने प्रसों में छपे हैं।

प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक जागरूकता के प्रति प्रतिबद्ध है उनका साहित्य आम आदमी का साहित्य है। सामाजिक सुधार संबंधी भावना का प्रबल प्रवाह उन्हें कभी-कभी एक कल्पित यथार्थवाद की ओर खींच ले जाता है। इनकी कहानियों में जहाँ एक ओर रूढियों, अंधविश्वासों, अंधपरंपराओं पर कड़ा प्रहार किया गया है वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी उभारा गया है। अपने जीवन काल में वे विभिन्न सुधारवादी और पराधीनता की स्थितिजन्य नव जागरण प्रवृत्तियों से प्रभावित रहे हैं, यथा - आर्यसमाज, गाँधीवाद, वामपंथी विचारधारा आदि। लेकिन समाज की यथार्थगत भूमि पर उसकी सहज प्रवृत्ति में ये प्रवृत्तियाँ जितनी समा सकती है, उतनी ही मिलाते हैं, ठूस कर नहीं भरते। इसीलिए चित्रण में जितनी स्वाभाविकता प्रेमचन्द में देखने को मिलती है, अन्यत्र दुर्लभ है। 'गोदान' में तो यह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई है। यदि प्रेमचन्द युग का आरम्भ 'सेवासदन' में है, तो उसका उत्कर्ष 'गोदान' में। आदर्शों और विचारधाराओं को वे अपने पात्रों पर थोपते नहीं हैं, बल्कि अन्तर्मन या अन्तरात्मा की आवाज की तरह स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होने देते हैं।

कालजयी साहित्यकार प्रेमचंद

प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में न केवल आम आदमी

के जीवन संघर्ष, स्त्रियों की समस्याएँ, गाँवों, किसानों, मजदूरों, निम्न जातियों की दशा, शोषण तथा उनके साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार, मध्यम वर्ग की समस्याएँ और उसकी आकांक्षाएँ, मानवीय जीवन के विविध पक्षों, सामन्तों, जमींदार का जीवन और दूसरे लोगों के प्रति उनका नजरिया, स्वतंत्रता आन्दोलन, नौकरशाहों, शासकों के आचार-व्यवहार का सटीक एवं जीवन्त चित्रण किया, बल्कि उसमें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और उनमें बदलावों को लेकर हो रहे गुलामी के विरोधी, जातिभेद, छुआछत, दहेजा प्रथा, विधवा, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, लगान, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, प्रगतिवादी आदि आन्दोलन का भी विशद् उल्लेख है। उनका लेखन कोरी कल्पना की उड़ान न होकर स्वयं भोगे यथार्थ का दस्तावेज़ है। इसलिए उनके लेखन को यथार्थवादी कहा जाता है।

संपादक प्रेमचंद

हंस, जागरण आदि पत्रिकाओं का संपादक प्रेमचंद थे। प्रेमचंद के मृत्यु के बाद उनकी पत्नी शिवरानी देवी और उनके बेटे अमृतराज हंस को जारी रखा है, और हंस प्रेमचंद की प्रगतिशील परंपराओं का वाहक बन गया। प्रेमचंद ने अपने सामने संपादक का जो आदर्श रखा था उसे वे पूर्ण रूप से निभाना चाहते थे। प्रकाशक, पत्रकार, और संपादक के रूप में प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है वह प्रशंसनीय ही है।

प्रेमचंद ने जो काम किया वह लाभ की दृष्टि से नहीं किया। प्रेमचंद आदर्शवादी है। 'जीवन का शाप' नामक कहानी के नायक कावंस प्रेमचंद है। कावंस एक अखबार निकालता हैं, और समाज की सेवा करके ख्याति प्राप्त करते हैं, लेकिन धन से वंचित रहते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद्र केवल एक कथाकार ही नहीं थे। अपने कथा साहित्य में उन्होंने किसान-मजदूरों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। वे दरिद्र किसानों के अंदर भगवान का दर्शन करते थे। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनता को एक संदेश दिया है कि वे धन के पीछे पागल न हो, संपत्ति जुटाने के लिए अन्याय न करें। आज प्रेमचंद को गए तिरासी से अधिक वर्ष बीत जाने के बावजूद भारतीय समाज की समस्याओं में परिवर्तन न आना या तो प्रेमचंद की सामाजिक संवेदनाओं की नब्ज़ पर गहरी पकड का परिचायक है या फिर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के बावजूद भारत के काले अंग्रेज़ों द्वारा देश की वास्तविक समस्याओं के प्रति संवेदनहीनता का परिचायक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रेमचंद के पात्रों की समस्याओं को अपने समाज से विमुक्त करने का प्रयास करें और तब शायद हम सिर उठाकर कह सकेंगे कि हमने वास्तविक आज़ादी हासिल कर ली है।

आज प्रेमचंद को गए पूरे तिरासी वर्ष बीत गए हैं, लेकिन उनके द्वारा साहित्य में वर्णित चुनौतियाँ इक्कीसवीं सदी में अपना चोला बदलकर और अधिक गम्भीर चुनौतियों के साथ हमसे रूबरू हैं। उदाहरण के लिए गोदान के गोबर और पण्डित मातादीन आज भी आपको गाँवों में घूमते मिल जाएँगे।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद की जीवन दृष्टि उनके संपूर्ण साहित्य में विद्यमान है।
- प्रेमचंद्र ने अपनी साहित्य रचना द्वारा निष्काम कर्मयोग का प्रचार प्रसार किया।
- प्रेमचंद आदर्शवादी है, यथार्थवादी है, कलाकार हैं।
- प्रेमचंद की हर रचना बहुमूल्य है जो अपने समय की सच्चाई को बयां करती हैं और उनकी ख़ासियत है कि वे आज भी प्रासंगिक हैं।
- प्रेमचंद्र केवल एक कथाकार ही नहीं थे।अपने कथा साहित्य में उन्होंने किसान - मजदूरों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है।
- आज प्रेमचंद को गए पूरे तिरासी वर्ष बीत गए हैं, लेकिन उनके द्वारा साहित्य में वर्णित चुनौतियाँ इक्कीसवीं सदी में अपना चोला बदलकर और अधिक गम्भीर चुनौतियों के साथ हमसे रूबरू हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद की महा काव्यात्मक उपन्यास का नाम लिखिए?
2. प्रेमचंद की पहली हिन्दी कहानी का नाम लिखिए?
3. किसान जीवन की महाकाव्य, नाम से जाने रचना क्या है?
4. प्रेमचंद की पहली उपन्यास का नाम लिखिए?
5. कहानी सम्राट कौन है?
6. कायाकल्प किस विधा की रचना है?
7. ईदगाह किस विधा की रचना है?

Answers / उत्तर

1. गोदान।
2. पंच परमेश्वर।
3. गोदान।
4. सेवासदन।
5. प्रेमचंद।
6. उपन्यास
7. कहानी

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद की रचनाओं का परिचय दीजिये।
2. प्रेमचंद्र की साहित्य विशिष्टता की परिचय दीजिए।
3. प्रेमचंद की रचनाओं में उपलब्ध, यथार्थ और आदर्शवाद की भावना व्यक्त करें।
4. प्रेमचंद एक उच्च कोटि के साहित्यकार है, संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृतियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

BLOCK - 02

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद

इकाई 1

उर्दू कथाकार प्रेमचंद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानी साम्राट के रूप में प्रेमचंद का ख्याति समझता है
- प्रेमचंद को हिन्दी-उर्दू साहित्य के अप्रतिम कथाकार के रूप में समझता है
- उर्दू साहित्य में प्रेमचंद जी का स्थान समझता है
- कथासाहित्य में बहुमूल्य सेवक के रूप में प्रेमचंद का परिचय प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद्र उर्दू से हिन्दी में आए लेखक है। नवाबराय नाम से वे उर्दू साहित्य में लिखते थे। उनकी पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रत्न सन् 1907 में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी कुछ समय बाद पाँच कहानियों के साथ 'सोजेवतन' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई। हिन्दी और उर्दु के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त थे।

उन्होंने 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा 'कफन', 'पूस की रात', 'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी', 'बूढ़ी काकी', आदी 300 से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रूढ़िवादी परम्परा, चेतावनी, अपनापन, सामाजिक दशा का वर्णन, जात-पात के भेदभाव

Discussion / चर्चा

हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचंद का नाम एक ऐसे शिखर के समान है जो यात्रा के क्रम में हर मोड़ पर पीछे छूट जाने पर भी सामने उभर-उभर कर आ जाता है। यही कारण है कि उनके बारे में अतिवादी वक्तव्य सुनाई देते हैं। कोई कहता है, हिन्दी कथा-साहित्य प्रेमचंद के आगे बढ़ा ही कितना है, तो दूसरा कहता है कि प्रेमचंद का प्रारंभिक कथाकार के रूप में ऐतिहासिक महत्व है।

मुंशी प्रेमचंद

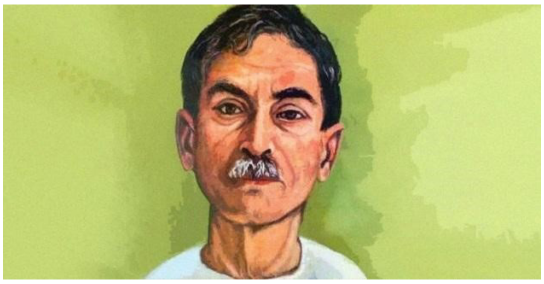

'मेरा जीवन सपाट-समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गढ़े तो है, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन है, उन्हें तो यहां निराशा ही होगी।'

- प्रेमचंद

उर्दू कथाकार प्रेमचंद

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को रूढ़िवादी परम्पराओं और कुरीतियों से निकालने का प्रयास किया। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि मुंशी प्रेमचंद ने अपने लेखन की शुरूआत उर्दू से की थी। उन्होंने गोरखपुर से उर्दू में लेखन शुरू किया और 1909 में कानपुर के जमाना प्रेस से उर्दू में ही उनका पहला कहानी संग्रह 'सोज़-ए-वतन' प्रकाशित हुआ। जिसकी सभी प्रतियाँ ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थीं। उस समय वे उर्दू में नवाब राय के नाम से लिखते थे। उनका लिखा कहानी संग्रह प्रकाशित करने के बाद जमाना के सम्पादक मुंशी दयानारायण निगम ने उन्हें परामर्श दिया कि भविष्य में अंग्रेज सरकार की नाराजगी से बचने के लिए नवाब राय के बजाय नए उपनाम प्रेमचंद के नाम से लिखना शुरू करें। इस प्रकार वे नवाब राय से प्रेमचंद बन गए।

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था। प्रेमचंद की पहली रचना के संबंध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि 'प्रेमचंद की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था जो उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के फलस्वरूप चमारों द्वारा उनकी पिटाई पर लिखा था। इसका जिक्र उन्होंने 'पहली रचना' नाम के अपने लेख में किया है। उनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी रूपांतरण देवस्थान रहस्यनाम से हुआ। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' है जिसका हिन्दी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ। 1908 ई में उनका पहला कहानी संग्रह 'सोज़े-वतन' प्रकाशित हुआ। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत इस संग्रह को अग्रेज़ सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया और इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर ली और इसके लेखक नवाब राय को भविष्य में लेखन न करने की चेतावनी दी। इसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा। उनका यह नाम दयानारायन निगम ने रखा था। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी 'ज़माना' पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई।

1915 ई. में उस समय की प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका 'सरस्वती' के दिसम्बर अंक में पहली बार उनकी कहानी 'सौत' प्रकाशित हुई। 1918 ई. में उनका पहला हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिन्दी का कथाकार बना दिया। हालाँकि उनकी लगभग सभी रचनाएँ हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। उन्होंने लगभग 300 कहानियों तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे।

1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सृजन में लग गए। उन्होंने कुछ महीने 'मर्यादा' नामक पत्रिका का संपादन किया। इसके बाद उन्होंने लगभग छह वर्षों तक हिन्दी पत्रिका 'माधुरी' का संपादन किया। 1922 में उन्होंने बेदखली की समस्या पर आधारित 'प्रेमाश्रम' उपन्यास प्रकाशित किया। 1925 ई. में उन्होंने 'रंगभूमि' नामक वृहद उपन्यास लिखा, जिसके लिए उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी मिला।

1926-27 ई के दौरान उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा संपादित हिन्दी मासिक पत्रिका चाँद के लिए धारावाहिक उपन्यास के रूप में 'निर्मला' की रचना की। इसके बाद उन्होंने 'कायाकल्प', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' की रचना की। उन्होंने 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन शुरु किया। 1932 ई. में उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'जागरण' का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटोन कंपनी में कथा लेखक की नौकरी भी की। 1934 में प्रदर्शित फिल्म 'मजदूर' की कहानी उन्होंने ही लिखी थी। 1920-36 तक प्रेमचंद लगभग दस या अधिक कहानी प्रतिवर्ष लिखते रहे। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुई। उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त वैचारिक निबंध, संपादकीय, पत्र के रूप में भी उनका विपुल लेखन उपलब्ध है।

कथा साहित्य पर विचार करते समय पहला नाम

प्रेमचंद का ही आता है। उन्होंने कथा साहित्य की विकास यात्रा में युगांतर उपस्थित किया। प्रेमचंद ने कथा साहित्य को कल्पना के धरातल से खींचकर यथार्थ की सहजभूमी पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने उत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन को अपनी आंखों से देखा ही नहीं बल्कि भोगा भी है। प्रेमचंद की भाषा का चमत्कार यह है कि वह हिन्दी-उर्दू भाषियों को समान रूप से स्वीकृत सिद्ध हुई। यह प्रेमचंद के कृतित्व का जादू है। इसलिए प्रेमचंद एक ओर हिन्दी के लेखक हैं तो दूसरी ओर उर्दू के लेखक भी हैं।

प्रेमचंद के कहानी साहित्य

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस में हुआ था। मुंशी प्रेमचंद की कहानी न सिर्फ हिन्दी में पढ़ सकते हैं, बल्कि उर्दू में भी इनके साहित्य पढ़े जा सकते हैं। प्रेमचंद की कहानियों में अपनापन, सामाजिक दशा का वर्णन, जात-पात के भेदभाव से लेकर गरीबी और अमीरी के बीच झलकते दर्द को साफ महसूस किया जा सकता है। यही वजह है कि मुंशी प्रेमचंद की कहानी पढ़ते हुए बच्चों से लेकर बड़े-बुज़ुर्ग तक सभी रम जाते हैं। 'कफन', 'पंच परमेश्वर', 'पूस की रात', 'बड़े घर की बेटी', 'दो बैलों की कथा' और 'बूढ़ी काकी' आदि उनके बहुचर्चित कहानियाँ हैं।

प्रेमचंद की कहानी साहित्य को तीन विशेष अवस्थाओं में बांटा जा सकता है।

1. प्रारंभिक अवस्था (1907-1920)
2. मध्यम अवस्था (1920- 1930)
3. अंतिम अवस्था (1930- 1936)

उनकी कहानी कला केवल वस्तु के स्तर पर ही विकसित नहीं, कलात्मक स्तर पर भी विकसित हुई। प्रेमचंद ने उर्दू में पाँच कहानियाँ का संग्रह सोजेवतन नाम से प्रकाशित किया। लेकिन तत्कालीन सरकार ने इसे ज़ब्त कर लिया। तत्पश्चात प्रेमचंद ने मजदूर और किसान को अपने साहित्य के केंद्र में स्थान दिया।

'सेजेवतन' उर्दू भाषा में लिखा गया कहानी संग्रह है।

इस संग्रह में पाँच कहानियाँ थी;

1. दुनिया का सब से अनमोल रत्न।
2. शेख मखमूर।
3. यही मेरा वतन है।
4. शोक का पुरस्कार।
5. सांसारिक प्रेम।

प्रेमचंद का उर्दू उपन्यास साहित्य

अधिकांश साहित्य के मर्मज्ञ प्रेमचंद को वर्तमान शताब्दी का हिन्दी और उर्दू का सर्वोपरि उपन्यासकार मानते हैं। प्रेमचंद ने सन् 1903 अपने पहले उपन्यास असरारे माबत रचना आरंभिक की जो अन्ततः पुरा न हो सका। इसी प्रकार अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने मंगलसूत्र नामक उपन्यास लिखना आरंभ किया, जो अपूर्ण रहा। अपने साहित्यकाल की 33 वर्ष की अवधि में उन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास लिखे। इनमें प्रेमा और किशन में उन्होंने विधवा विवाह और स्त्रियों के आभूषण प्रेम की समस्याएँ उठाई। प्रेमा उर्दू में प्रकाशित उन्ही का 'हमखुर्मा व हमसवाब' का हिन्दी तर्जुमा है।

तदुपरांत उन्होंने वरदान (जलवा - ए ईसार, उर्दू नाम) लिखा जो उनके साहित्यिक जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। किशन नाम से जो उपन्यास उर्दू में प्रकाशित किया, उसी को प्रेमचंद ने गबन के रूप में प्रस्तुत किया था। 1912 उर्दु में प्रकाशित जलवा-ए-ईसार नामक उपन्यास 1921 ई में वरदान शीर्षक से हिन्दी में प्रकाशित हुआ। इसमें देश-सेवा, देश-भक्ति, आदि नए विषयों के प्रतिपादन का प्रयास किया गया है।

प्रेमचंद के उपन्यास लेखन का उत्कर्ष काल 1918 ई से सेवासदन के प्रकाशन से शुरू होता है। इसकी लेखन तिथी की निश्चित सूचना नहीं मिलती। परंतु यह निर्विवाद है कि 'बाज़ारे हुस्न' नामक अपने उर्दू उपन्यास का अनुदित रूप ही प्रेमचंद ने 'सेवासदन' नाम से प्रकाशित किया था सन् 1918 ई के लगभग अंत में सेवासदन कोलकत्ता से प्रकाशित हो गया। कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में उर्दू साहित्य में प्रेमचंद का योगदान महत्वपूर्ण है। उनकी पाँच उर्दू कहानियाँ 'सोज़े-वतन' में संकलित है।

प्रेमचंद का उर्दू से हिन्दी में आगमन

प्रेमचंद जी ने पहले तो उर्दू में लिखना आरम्भ किया था, हिन्दी में तो वे बाद में लिखने लगे थे। उर्दू में उन्हीं की कहानियों द्वारा कहानी-साहित्य का सूत्रपात हुआ। उनकी सर्वप्रथम कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' है, जिसका प्रकाशन कानपुर से प्रकाशित होने वाले उर्दू के प्रसिद्ध पत्रिका 'जमाना' में हुआ। उसी पत्रिका में उनकी

अनेक कहानियाँ छपी। उनकी इस पहली कहानी के बाद की कहानियों का संकलन 'सोजेवतन' नाम से छपा और इसके पश्चात् तो उनके कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए, यथा 'खाके परवाना', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेम-बत्तीसी', 'प्रेम-चाली।', 'फिरदोसये खबाल', 'जादेराह', 'दूध की कीमत', 'वारदात', 'नजात' आदि। इन कहानियों में ग्रामीण चित्रों का अंकन बहुत ही स्वाभाविक और कौशल-पूर्ण है अतः पठनीय और दर्शनीय भी है उनकी उर्दू में लिखी गई कहानियों की कुल संख्या 178 है और उपन्यासों की संख्या 30। जिनका अनुवाद हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में भी हो चुका है।

हिन्दी में प्रेमचंद का आगमन सं. 1973 वि. अर्थात् सन् 1916 ई. में हुआ। कहा जाता है कि आचार्य पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें हिन्दी में लिखने की प्रेरणा दी। हिन्दी में लिखना प्रारम्भ करने के पहले उर्दू कहानीकार के रूप में उन्हें पर्याप्त ख्याति मिल चुकी थी। इन्होंने सबसे पहले उर्दू में ही लिखना आरम्भ किया और इनका ध्यान हिन्दी में लिखने की ओर बाद में गया, इसका कारण शायद यह था कि उस समय तक सम्भवतः हमारी हिन्दी आगे बढ़ने के लिए बल संचित कर रही थी और उर्दू पर उनका अच्छा अधिकार था। जब उन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया तो भाषा-परिवर्तन की ही एक विशेष कठिनाई उनके सामने आयी, पर बाद में उन्होंने उस कठिनाई पर भी काबू पा लिया और हिन्दी पर भी उनको अच्छा अधिकार हो गया ।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद ने अपने कर्म पर विश्वास रखा था। जीवन पर वे कर्मयोगी बने रहे। वे एक अत्यंत उत्कृष्ट साहित्यकार है। उर्दू साहित्य में प्रेमचंद का महत्वपूर्ण योगदान है। धनपत राय प्रेमचंद्र का असली नाम है। 1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षो का सामाजिक-सांस्कृतिक दस्तावेज है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है।

हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918-1936 के कालखंड को प्रेमचंद युग कहा जाता है। समाज सेवक स्पष्ट चित्रण उनके रचनाओं में व्यापक रूप से पडता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- उर्दू भाषा में साहित्य लेखन प्रारंभ किया।
- नवाबराय नाम से लेखन कार्य आरंभ किया।
- पहला उर्दू कहानी संग्रह सोजेवतन 1908 में प्रकाशित हुई। इसमें पाँच कहानियाँ संकलित है।
- उर्दू उपन्यास रचना 1903 ईं में आरंभ की।
- प्रेमा, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि आदि उर्दू के प्रधान उपन्यास है।
- तत्कालीन सरकार ने प्रेमचंद की रचनाओं को ज़ब्त कर लिया।
- प्रेमचंद नाम से हिन्दी साहित्य में प्रवेश किया।
- नवाबराय नाम से प्रेमचंद्र नाम तक प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा।
- उर्दू साहित्य में उनका ख्याति।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उर्दू भाषा में प्रेमचंद की स्वीकृत नाम क्या है?
2. प्रेमचंद का साहित्य रचना का आरंभ किस भाषा में है?
3. प्रेमचंद्र जी का असली नाम क्या था?
4. वरदान उपन्यास का उर्दू नाम क्या है?
5. उर्दू भाषा में लिखा गया पहला कहानी संग्रह?
6. चौगाने हस्ती उर्दू उपन्यास का हिन्दी रूपांतर क्या है?
7. 'दुनिया के सबसे अनमोल रत्न' किस कहानी संग्रह में संगृहित कहानी है?
8. प्रेमचंद का अपूर्ण उपन्यास का नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. नवाबराय।
2. उर्दू भाषा में।
3. धनपत राय श्रीवास्तव।
4. जलवा-ए-ईसार।
5. सोजेवतन।
6. रंगभूमि।
7. सेजेवतन।
8. मंगलसूत्र।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. उर्दू साहित्य में प्रेमचंद जी का स्थान।
2. प्रेमचंद जी के उर्दू उपन्यासों के नाम लिखिए।
3. उर्दू साहित्य में प्रेमचंद जी का ख्यति का वर्णन कीजिए।
4. उर्दू साहित्य रचनाओं के आधार पर समाज सेवक प्रेमचंद के बारे में लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रंगभूमी (उपन्यास) - वाणी प्रकाशन।
2. 'प्रेमचंद और उनका युग': डॉ. रामविलास शर्मा – राजकमल प्रकाशन।
3. 'प्रेमचंद घर में' शिवरानी देवी – आत्माराम एंड सन्स।
4. 'कलम के सिपाही' – अमृत रॉय।
5. 'कलम का मजदूर' प्रेमचंद – मदन गोपाल।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में प्रवेश

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उपन्यास सम्राट के रूप में समझाता है
- आदर्श और यथार्थ का समन्वयात्मकता उनके रचनाओं में प्राप्त होता है
- उनके ख्याति का आधार ग्रन्थ गोदान उपन्यास का परिचय प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद जी के आगमन से हिन्दी उपन्यास क्षेत्र का विकास आरंभ हुआ। प्रेमचंद ने उपन्यास साहित्य में अनेक प्रकार के मानव चरित्रों का निर्माण किया है। प्रेमचंद के पात्रों में उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का प्रकाश है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके उपन्यास की मुख्य विशेषता है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के युग प्रेमचंद युग कहा जाता है। प्रेमचंद सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार एवं विचारक है। उन्होंने लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यासों की रचना की। हिन्दी में लिखा गया पहला उपन्यास 'सेवासदन' है। उनके लोकप्रिय एवं कीर्ति का आधार 'गोदान' उपन्यास है। यह उपन्यास कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में जाने जाते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जटिल अनुभव, उत्कृष्ट मानवीय मूल्य, समाजवादी विचारधारा, मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद ने उपन्यास साहित्य को एक नया उन्मेष प्रदान किया। उन्होंने उपन्यास को अधिक संगठित और क्रमबद्ध कथावस्तु प्रदान दी। प्रेमचंद के शब्दों में 'मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में यथार्थ चित्रण के माध्यम से अपने विचारानुसार विभिन्न समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए हैं। अपने उपन्यासों में प्रेमचंद जी ने भारत का सजीव और मार्मिक इतिहास चित्रित किया था। 1918 से लेकर 1936 तक का भारत का यथार्थ इतिहास प्रेमचंद के उपन्यासों में उपलब्ध है।

प्रेमचंद के उपन्यास के पात्र उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का प्रकाश डालता है। सत्य, न्याय, अहिंसा, दया, करुणा, सहानुभूति सेवा, त्याग, देश भक्ति, मानव प्रेम, आस्था, सदाचरण, संवेदना, परोपकार इत्यादि उनकी रचनाओं में व्यापक रूप में है। प्रेमचंद जी के उपन्यासों के दो प्रमुख अंग है, एक आदर्शवाद दूसरा यथार्थवाद, उनके अधिकांश रचनाओं में ये दोनों भाव मौजूद है। उपन्यास के अधिकांश पात्र यथार्थ जीवन से लिए गए हैं।

प्रेमचंद का उपन्यास क्षेत्र में प्रवेश

प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास हुआ। उनके सेवासदन (1916) ने नया उन्मेष प्रदान किया। उन्होंने उपन्यास को अधिक संगठित और क्रमबद्ध कथावस्तु दी, जीते-जागते मानव-चरित्रों की

प्रतिष्ठा की। उन्होंने ऐसे उपन्यासों का प्रणयन किया जिनसे समाज को आगे विकास का मार्ग मिला। प्रेमचंद ने सस्ते मनोरंजन के स्थान पर अपने युग और समाज की ज्वलंत समस्याओं को अपनी कला का लक्ष्य बनाया। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में किसी न किसी सामयिक समस्या का चित्रण मार्मिक रूप में होता है।

प्रेनचन्द ने अपने उपन्यासों में यथार्थ चित्रण के माध्यम से अपने विचारानुसार विभिन्न समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए हैं। अपने उपन्यासों में प्रेमचंद ने स्वाधीनता केलिए संघर्षरत भारत का सजीव और मार्मिक इतिहास चित्रित किया था। गाँधीजी के नेतृत्य में हुए स्वाधीनता आन्दोलन का सन् 1918 से लेकर 1936 तक का यथार्थ इतिहास प्रेमचंद के उपन्यासों में उपलब्ध है।

प्रेमचंद ने पहली बार पाठकों को कल्पना जगत से जीवन की यथार्थ भूमि पर पहुँचाया। अपने पूर्ववर्ती कथा साहित्य में बीज-रूप में प्राप्त यथार्थ जीवन के कुछ चित्रों से प्रेरणा लेते हुए उन्होंने उन बीजों को उनकी सारी संभावनाओं के साथ विकसित किया, पल्लवित किया। प्रेमचंद ने सोद्देश्य लिखा, मनोरंजन का एक नया स्तर उद्घाटित किया। 'अपने समय के पाठक वर्ग की कलात्मक चेतना को विकसित कर उसे एक सजग और सामाजिक बोधवाले पाठक वर्ग के रूप में विकसित कर प्रेमचंद ने सही अर्थों में उपन्यास क्षेत्र में एक नये युग-प्रवर्तन को बनाया।' (प्रकाशचन्द्र मिश्र, अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य, पृ 22-23)

प्रेमचंद युग के अनेक लेखक समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे, लेकिन प्रेमचंद के समान किसी ने ऐसी दृढता से इतनी लम्बी अवधि तक और इतने सुसंगत रूप से पीड़ित मानवता का पक्ष नहीं लिया। यह उनका युगान्तकारी महत्व है हिन्दी साहित्य केलिए भारतीय साहित्य केलिए (उमृतराय, कलम का सिपाही, पृ 333)

पीडितों के प्रति इतनी सहानुभूति रखनेवाले अन्य उपन्यासकार बिरले ही हुए। 'जनता को समझनेवाले, जनता के प्रति वास्तविक सहानुभूति रखनेवाले, जन-जीवन को अपना जीवन समझनेवाले, जनहित केलिए आत्माहुति देनेवाले भारत के राजनीतिक क्षेत्र में एक गाँधीजी हुए और हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक प्रेमचंद।' (डॉ. गणेशन हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, पृ 60)

दरअसल प्रेमचंद एक समर्थ यथार्थवादी कलाकार थे। उनके मानवतावाद की तरह उनका क्रांतिकारी जनवाद भी उनके साहित्य की बहुत बडी शक्ति है। वे केवल यथार्थवादी कलाकार ही नहीं, यथार्थवाद की सही व्याख्या प्रस्तुत करनेवाले स्रष्टा व्यक्तित्व थे। 'कविता यथार्थवाद की उपेक्षा कर सकती है, संगीत यथार्थ को छोडकर भी जी सकता है पर उपन्यास और कहानी के लिए यथार्थ प्राण है।' (डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, पृ.95)। 'वरदान' से लेकर 'गोदान' तक का उनका संपूर्ण उपन्यास साहित्य एवं जीवित साधना का प्रतीक है। उनके अनेक पात्र चिरस्मरणीय हैं। विचारों से प्रेमचंद मूलतः क्रांतिकारी रहे हैं। उनके संपूर्ण उपन्यासों में क्रांति का स्वर गूंजता हुआ सुनाई पडता है। भारत के तत्कालीन समाज और शासन तंत्र पर जैसे तीखे और निर्मम प्रहार प्रेमचंद ने किये हैं, उनको मिसाल नहीं मिलती। वे भारतीय जीवन के सूक्षम द्रष्टा और अद्भुत रूप (श्री राजनाथ शर्मा, हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास पृ 763) से जागरूक भविष्य द्रष्टा थे।

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में प्रसाद (कंकाल और तितली) का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद युगीन उपन्यास की विशेषता यह है कि वे गाँधीवाद से प्रभावित और इस कारण आदर्शवादी हैं। प्रेमचंद के समय में उग्र, ऋषमचरण जैन, चतुरसेन शास्त्री आदि उपन्यासकार भी सामाजिक उपन्यास लिख रहे थे। परन्तु उन उपन्यासकारों ने अश्लीलता को प्रधानता दी। इसलिए उनके उपन्यास यथार्थवादी न रहकर अति-यथार्थवादी बन गए।

सन् 1929 के आसपास मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों की धारा फूट निकली। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी दोनों मनोविश्लेषणवादी परपरा का पोषण कर रहे थे। प्रेमचंद युग सामाजिक उपन्यासों का युग था। परन्तु इस युग में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा का भी विकास हुआ था। वृन्दावनलाल वर्मा के 'गढ़ कुंडार' (1928) और 'विराटा की पद्मिनी' इस काल के प्रसिद्ध दो ऐतिहासिक उपन्यास है।

प्रेमचंद जी के उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण

1. **असरारे माअबिद** पहला उर्दू उपन्यास है। धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी रूपांतर 'देवस्थान रहस्य' नाम से हुआ।
2. **हमखुर्मा व हमसवाब** : दूसरा उर्दू उपन्यास है। जिसका

हिन्दी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 ई में प्रकाशित हुआ। इसमें विधवा विवाह का प्रतिपाध्य है।

3. **किशना** : उर्दू उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष 1907 ही कल्पित किया गया। इसी को प्रेमचंद ने 'गबन' रूप में प्रस्तुत किया था।
4. **वरदान** : उर्दू में प्रकाशित जलवा-ए-ईसार नामक उपन्यास 1921 ई में वरदान शीर्षक से हिन्दी में प्रकाशित हुआ। इसमें देश सेवा, देश भक्ति आदि विषयों की प्रतिपादन का प्रयास किया गया है।
5. **सेवासदन** : बाज़ारे-हुस्न नाम से उर्दू में लिखा गया उपन्यास का हिन्दी रूपांतर है 'सेवासदन'। जिसमें दहेज प्रथा, अनमोल विवाह, वेश्यावृत्ति, स्त्री पराधीन्ता आदि समस्याओं का चित्रण है।
6. **प्रेमाश्रम** (1922) : यह किसान जीवन पर उनका पहला उपन्यास है। इसका मसौदा भी पहले उर्दू में 'गोशए-आफियत' नाम से तैयार हुआ था। लेकिन इसे पहले हिन्दी में प्रकाशित कराया।
7. **रंगभूमि** (1925) चौगाने हस्ती नाम से उर्दू में लिखा गया उपन्यास है। इसमें प्रेमचंद एक अंधे भिखारी सूरदास को नायक बनाकर हिन्दी कथा साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव का सूत्रपात करते हैं।
8. **निर्मला** (1925) : यह अनमोल विवाह की समस्याओं को रेखांकित करने वाला प्रेमचंद का श्रेष्ठ उपन्यास है।
9. **कायाकल्प** (1926) : प्रेमचंद का सर्वप्रथम हिन्दी में लिखा गया उपन्यास है। आरंभ में प्रेमचंद ने उपन्यास के 3 नाम से रखे थे- असाध्य साधना, माया सपने और अतिनाथ। लेकिन इन तीनों नामों को अनुपयुक्त समझकर कायाकल्प नाम से उपन्यास प्रकाशित कराया। इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक, सांप्रदायिक तथा राजनीतिक समस्याओं को लिया है, उनका समाधान भी प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।
10. **प्रतिज्ञा** (1927) : यह विधवा जीवन तथा उसकी समस्याओं को रेखांकित करने वाला उपन्यास है।
11. **कर्मभूमि** (1932) : यह अछूत समस्या, उनका मंदिर में प्रवेश तथा लगन इत्यादि की समस्याओं को उजागर करने वाला उपन्यास है।
12. **गोदान** (1936) : प्रेमचंद का अंतिम तथा पूर्ण उपन्यास है, जो किसान जीवन पर लिखी अद्वितीय रचना है। कृषक जीवन का महाकाव्य के रूप में हिन्दी साहित्य में जाने जाते हैं । इस ग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद 'द गिफ्ट ओफ काओ' प्रकाशित हुआ।
13. **मंगलसूत्र (अपूर्ण)** : प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है, जिसे उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया प्रेमचंद जी का उपन्यास साहित्य एक नई चेतना लेकर आगे बढ़े थे। उनकी संपूर्ण उपन्यासों में क्रांति का स्वर गूंजता हुआ सुनाई पड़ता है। अपने उपन्यासों के माध्यम से भारत के तत्कालीन समाज और शासन तंत्र पर तीखे और निर्मम प्रहार प्रेमचंद ने किए हैं।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास एक नयी चेतना लेकर आगे बढ़े थे। इस युग का प्रधान स्वर राष्ट्रीयता का था। स्वतंत्रता प्राप्ति केलिए देश को अग्रसर करना कलाकारों का लक्ष्य था। इस युग में चरित्र चित्रण, पात्र योजना विषय वस्तु चयन, भाषाशैली एवं उद्देश्य की दृष्टि से हिन्दी उपन्यास ने अभूतपूर्व प्रगति की। वस्तुतः प्रेमचंद युग के अंत तक हिन्दी उपन्यास का स्वरूप निर्दिष्ट हो गया था जो बहुमुखी रूप धारण कर परवर्ती युग में विकसित हुआ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य के उपन्यासकारों में प्रेमचंद का योगदान महत्वपूर्ण है।
- लगभग डेढ़ दर्जन से अधिक उपन्यासों की रचना की।
- उर्दू भाषा में उपन्यास रचना आरंभ की।
- पहला उर्दू उपन्यास असरारे मआविद है। इसका हिन्दी रूपांतरण देवस्थान नाम से हुआ।
- हिन्दी में लिखा गया पहला उपन्यास कायाकल्प है।
- वो एक कर्मी साहित्यकार है।
- सामाजिक परिवर्तन के लिए अपना रचना का उपयोग किया।
- वह हिन्दी उर्दू भाषियों को समान रूप से स्वीकृत करते हैं।
- अंतिम और श्रेष्ठ उपन्यास है गोदान।
- हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ट लेखक है प्रेमचंद।
- उपन्यास साहित्य का बहुमुखी प्रतिभा है प्रेमचंद।
- हिन्दी उपन्यास जगत की अभूतपूर्व प्रगति।
- प्रेमचंद युग - हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास युग।
- प्रेमचंद जी के उपन्यासों में व्याप्त ज्वलंत समस्याओं का चित्रण।
- आदर्श और यथार्थ के साथ उपन्यासों का रचना।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद युग का समय सीमा लिखिए?
2. उर्दू भाषा में लिखा गया पहला उपन्यास का नाम क्या है?
3. बाज़ारे-हुस्न उर्दू उपन्यास का हिन्दी रूपांतर क्या है?
4. हिन्दी भाषा में लिखा गया पहला उपन्यास का नाम क्या है?
5. प्रेमचंद की अंतिम उपन्यास का नाम क्या है?
6. कृषक जीवन के महाकाव्य के रूप में ख्याति प्राप्त प्रेमचंद का उपन्यास का नाम?
7. गोदान का प्रकाशन वर्ष कब है?
8. सूरदास किस उपन्यास का पात्र है?

Answers / उत्तर

1. 1918 से 1936 तक।
2. असरारे मआविद।
3. सेवासदन।
4. कायाकल्प।
5. गोदान।
6. गोदान
7. 1936
8. रंगभूमि

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी-उर्दू भाषी उपन्यासकार प्रेमचंद।
2. प्रेमचंद की उपन्यास साहित्य का संक्षिप्त विवरण लिखिए।
3. प्रेमचंद के उपन्यासों का नाम लिखिए।
4. 'समाज सुधारक के रूप में प्रेमचंद' - उनके उपन्यासों के आधार पर लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रंगभूमी (उपन्यास) - वाणी प्रकाशन।
2. 'प्रेमचंद और उनका युगः डॉ. रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन।
3. 'प्रेमचंद घर में' शिवरानी देवी - आत्माराम एंड सन्स।
4. 'कलम के सिपाही' - अमृत रॉय।
5. 'कलम का मजदूर' प्रेमचंद - मदन गोपाल।

इकाई 3

प्रेमचंद के उपन्यासों की विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान का परिचय प्राप्त होता है
- प्रेमचंद जी के जीवन का आदर्श उनके उपन्यास साहित्य द्वारा समझाता है
- प्रेमचंद की उपन्यास कला का परिचय प्राप्त होता है
- तत्कालीन भारतीय इतिहास उनके उपन्यासों में प्राप्त होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की ही नहीं विश्व साहित्य के महान व्यक्तित्व है। आधुनिक युग के इस प्रगतिशील लेखक ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को नया रूप-भाव, नई दिशा और लक्ष्य दिया है। वे प्रथम भारतीय उपन्यासकार हैं, जिन्होंने किसानों और निम्न व मध्यम वर्ग के जीवन का चित्रण बड़े उत्साह और ईमानदारी से किया है। उनके उपन्यास साहित्य दरिद्र और पीड़ित मानवता के लिए मानवीय प्रेम के संदेश के रूप में परिवर्तित हो गई। उनके उपन्यासों की आवाज़ भारत की अजेय जनता की आवाज़ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जनवादी चेतना, समकालीन भारतीय दशा, उन्मुक्त हास्य, ग्रामीण जीवन, शहरी सभ्यता

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की ही नहीं विश्व साहित्य के महान व्यक्तित्व है। आधुनिक युग के इस प्रगतिशील लेखक ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को नई दिशा प्रदान दिया। हिंदुस्तान की नई राष्ट्रीय और जनवादी चेतना के प्रतिनिधि उपन्यासकार माने जाते हैं।

प्रेमचंद ने जिस समय उर्दू से हिन्दी में पदार्पण किया, उस समय हिन्दी उपन्यास साहित्य के इतिहास में एतिहासिक महत्व का समय था। भारतीय संस्कृति का चित्रण करना प्रेमचंद जी का लक्ष्य था, इसका सशक्त उदाहरण है उनके उपन्यास साहित्य। डेढ़ दर्जन उपन्यासों की रचना से हिन्दी साहित्य के उपन्यास सम्राट का पद प्राप्त होता है। उन्होंने न अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय जनता की चित्तवृत्ति उनका व्यापक धरातल पर सूक्ष्म अध्ययन किया था।

प्रेमचंद के सबसे महत्वपूर्ण तीन उपन्यास है सेवासदन, निर्मला और गोदान। सेवासदन प्रेमचंद का प्रथम महान उपन्यास माना जाता है यह उपन्यास उर्दू में लिखा गया था, बाद में उसे हिन्दी में प्रकाशित किया गया।

उपन्यास साहित्य की विशेषताएँ

उपन्यास के संवाद विशिष्ट आकर्षक स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण है। उनके उपन्यासों में तत्कालीन भारतीय इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी उपन्यासों में जनसाधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का चित्रण किया है। मनोविज्ञान के स्तर पर भी अपने उपन्यास के पात्रों को मजबूत करते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जमींदारी प्रथा, ग्रामीणों का शोषण, जातिगत कुत्सिकता, असमानता, बेमेल विवाह और उससे उत्पन्न समस्याएँ आदि का यथार्थ चित्रण प्रेमचंद ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से किया है। प्रेमचंद जी की भाषा अत्यंत सरल सहज और पात्रानुकूल है। वे भरी भरकम शब्दों में से बचते हैं, यह उनकी लेकिन नीति का हिस्सा है। भारतीय हिन्दी साहित्य में उपन्यास सम्राट की उपाधि से सुशोभित प्रेमचंद जी के सभी उपन्यास निम्नलिखित है: देवस्थान रहस्य, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, वरदान, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण)। गोदान हिन्दी उपन्यास साहित्य की महान उपलब्धि है। ग्रामीण जीवन का इतना वास्तविक व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हिन्दी साहित्य के किसी अन्य उपन्यास में नहीं हुआ। उनके सेवासदन अत्यंत उत्कृष्ट उपन्यास है। सुमन के माध्यम से भारतीय नारी की पराधीनता व्यक्त करते हैं। अपने उपन्यासों में प्रेमचंद ने स्वाधीनता के लिए संघर्षरत भारत का सजीव और मार्मिक इतिहास चित्रित किया था।

सन् 1918 से लेकर 1936 तक का भारत देश का यथार्थ इतिहास प्रेमचंद के उपन्यासों में उपलब्ध है। उनके मानवतावाद की तरह उनका क्रांतिकारी जनवाद भी उनके उपन्यासों की बहुत बड़ी शक्ति है। देवस्थान से लेकर गोदान तक का उनका संपूर्ण उपन्यास साहित्य, जीवन साधना का प्रतीक है। उनकी संपूर्ण उपन्यासों में क्रांति का स्वरूप गूंजता हुआ सुनाई पड़ता है। प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य एक नई चेतना लेकर आगे बढ़े थे।

Recap / पुनरावृत्ति

- उपन्यास सम्राट प्रेमचंद।
- लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यासों में व्याप्त विषय वस्तु।
- उपन्यासों का परिचय।
- उनकी भाषा की सरलता।
- रचना की विशिष्टता।
- उच्चकोटि के साहित्यकार।
- उपन्यासों में चित्रित समाकालीन भारत का प्रतिबिंब।
- प्रेमचंद के उपन्यासों का महत्व।
- प्रेमचंद के उपन्यासों में व्याप्त क्रांतिकारी मनोभाव।
- प्रेमचंद के जीवन का आदर्श और उच्च विचार।
- उपन्यासों में व्याप्त तत्कालीन भारतीय दिशा और दशा का वर्णन।

प्रेमचंद एक त्रिकालदर्शी साहित्यकार है। उनकी उपन्यास साहित्य का मूल धारणा परिवर्तन के लिए साहित्य का उपयोग करना था।

उर्दू भाषा से लिखते हुए, प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी भाषा अद्भुत है, यह प्रेमचंद के उपन्यासों का जादू है। उन्हें कर्म पर विश्वास था और जीवन भर वे कर्मयोगी बनी रहे। उन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा सिद्ध कर दिया कि साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन नहीं आलोचना है। प्रेमचंद जी के उपन्यास साहित्य बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के हिंदुस्तान का सच्चा इतिहास है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद हिन्दी के युग प्रवर्तक रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। वे सर्वप्रथम उपन्यासकार थे जिन्होंने उपन्यास साहित्य को तिलस्मी और अय्यारी से बाहर निकाल कर उसे वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। प्रेमचंद की रचनाओं को देश में ही नहीं विदेशों में भी आदर प्राप्त हैं। प्रेमचंद और उनकी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय महत्व है। आज उन पर और उनके साहित्य पर विश्व के उस विशाल जन समूह को गर्व है जो साम्राज्यवाद, पूँजीवाद और सामंतवाद के साथ संघर्ष में जुटा हुआ है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद की उपन्यास रचना का प्रारंभ किस भाषा में थी?
2. कायाकल्प किस भाषा में रचित उपन्यास है?
3. कृषक जीवन के आधार पर लिखी गई उपन्यास का नाम क्या है?
4. प्रेमचंद का अपूर्ण उपन्यास का नाम क्या है?
5. नारी जीवन की पराधीनता पर आधारित उपन्यास कौन-सा है?
6. प्रेमचंद के सबसे महत्वपूर्ण तीन उपन्यासों का नाम लिखिए?
7. हिन्दी साहित्य के उपन्यास सम्राट कौन है?
8. प्रेमचंद की भाषा किस प्रकार का है?

Answers / उत्तर

1. उर्दू
2. हिन्दी
3. गोदान
4. मंगलसूत्र
5. सेवासदन
6. सेवासदन, निर्मला और गबन
7. प्रेमचंद
8. सरल, सहज और पात्रानुकूल

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. प्रेमचंद की उपन्यास कला का परिचय निर्धारित कीजिए।
3. उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान व्यक्त कीजिए।
4. प्रेमचंद के उपन्यासों में व्याप्त आदर्श और यथार्थवाद का चित्रण अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रंगभूमी (उपन्यास) - वाणी प्रकाशन।
2. 'प्रेमचंद और उनका युगः' डॉ. रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन।
3. 'प्रेमचंद घर में' शिवरानी देवी - आत्माराम एंड सन्स।
4. 'कलम के सिपाही' - अमृत रॉय।
5. 'कलम का मजदूर' प्रेमचंद - मदन गोपाल।

इकाई 4

उपन्यास रंगभूमि (विस्तृत अध्ययन के लिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रंगभूमि का परिचय प्राप्त होता है
- उपन्यास में गांधीजी के अहिंसावाद दृष्टिकोण का प्रभाव समझता है
- उपन्यासों में चित्रित समस्याओं को समझता है
- गांधीजी एवं सूरदास के चरित्रों की समानता समझता है
- ग्रामीण जीवन तथा स्त्री की दुर्दशा का भयावह चित्र समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमाश्रम उपन्यास के बाद रंगभूमि उपन्यास लखनऊ से प्रकाशित हुआ। रंगभूमि 'चौगाने हस्ती' उर्दू उपन्यास का हिन्दी रूपांतर है। सन् 1925 ईं में उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करते समय उन्होंने उर्दू सामग्री में कुछ परिवर्तन भी किया, और साथ ही कुछ अध्याय सर्वप्रथम हिन्दी में लिख कर मूल सामग्री के हिन्दी अनुवाद के साथ यथास्थान जोड़ दिया। पूरी कथा गांधी दर्शन निष्काम कर्म और सत्य के आलंबन को रेखांकित करती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गांधीदर्शन, निष्काम कर्म, सत्य, निष्ठा, अहिंसा के प्रति आग्रह, स्त्री दुर्दशा का भयावह चित्रण, राष्ट्रीय वाद

Discussion / चर्चा

रंगभूमि उपन्यास के नायक 'सूरदास' की सृष्टि प्रेमचंद ने गांधीवाद के आदर्श के नमूने पर किया। सूरदास गांधीजी के अहिंसावाद का पुजारी है। वह सत्य, अहिंसा, और त्याग का साक्षात् उदाहरण है। यह उपन्यास मनुष्य जीवन की विशाल रंगस्थली है। इसमें अनेक वर्गों के पात्र है। गरीब, अमीर, भिखारी, पूँजीपति, मजदूर, किसान, समाज सेवक इत्यादि। लेकिन, इनमें सूरदास, सोफिया, विनय, प्रभुसेवक प्रमुख हैं।

सूरदास शारीरिक रूप से दुर्बल होते हुए भी उपन्यास में मज़बूत चरित्र के रूप में चित्रित है। प्रेमचंद एक अंधे भिखारी सूरदास को उपन्यास का कथानायक बनाकर हिन्दी उपन्यास साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव का सूत्रपात करते हैं।

काशी के बाहरी भाग में बसे पांडेपुर गांव को रंगभूमि की कथा का स्थल बताया गया है। ग्वाले, मजदूर गांडीवान और खोमचेवालों की इस गरीबी बस्ती में एक गरीब और अन्धा चमार रहता है - सूरदास। वह है तो भिखारी परंतु पूरखों की 10 बिघा धरती भी उसके पास है, जिसमें गाँव के ढोर चरते-विचरते हैं। सामने ही एक खाल का गोदाम है, जिसका आढती है, एक ईसाई - जोन सेवक। वह सिगरा मोहल्ले का निवासी है। इस जमीन पर उसकी बहुत दिनों से निगाह है, वह इस पर सिगरेट का कारखाना खोलना चाहता है। सूरदास किसी भी तरह अपने पुरखों की निशानी उस धरती को बेचने के लिए

जब राजी नही होता है तो जॉन सेवक अधिकारियों से मेल-जेल का सहारा लेकर उसे हिलाने की योजना बनाता है। अपनी बेटी सोफिया के माध्यम से राजा भारत सिंह और उसके परिवार से जॉन सेवक का परिचय संबंध स्थापित होता है। राजा साहब के परिवार में पत्नी राणी, जाह्वी, पुत्री इन्दू, पुत्र विनय और राजासाहब। एक दिन विनय अपने स्वयंसेवकों के साथ आग बुझाने का अभ्यास करते हुए आग की लपटों में फंस जाता है। संयोग से सोफिया अपनी मां से झगड़ा कर उधर जा निकली थी। वह आग में कूदकर विनय को बचा लाई। आग ने उसे कई जगह झुलसा दिया। विनय के माता-पिता सोफिया को अपने साथ ले गई और उसका इलाज कराया। वह उसके प्रति इतने स्नेहासक्त हो गए है कि उसे अपने ही घर रखने की सोचने लगे। इंदु सोफिया की सहपाठी और सखी थी, उनका विवाह छतारी के राजा महेंद्र कुमार से हुआ था। राजा महेंद्र कुमार सिंह बनारस मुंसिपल बोर्ड के अध्यक्ष थे। इन्दू के दौरान उन्हें सोफिया और जॉन सेवक के बारे में थोड़ा बहुत मालूम हो चुका था। जॉन सेवक, इस संयोग से पूरा-पूरा लाभ उठाया। एक और उसने राजा महेंद्र कुमार सिंह से सूरदास की जमीन दिलवा देने की हामी भरवा ली। उस समय बनारस का जिलाधिकारी क्लार्क नामक एक अंग्रेज था, वह सोफिया पर आसक्त था, और उसके लिए सोफिया के माता-पिता की ओर से प्रोत्साहन मिला था। सोफिया उससे मिली और हठ करके, राजा महेंद्र सिंह के आदेश को रद्द करवाकर क्लर्क से आज्ञा जारी करवा दी कि सूरदास की ज़मीन किसी को नहीं मिल सकती। लेकिन राजा महेंद्र कुमार ने गवर्नर से मिलकर वह ज़मीन जॉनसेवक को दिलवा दी। क्लार्क का उदयपुर के लिए तबादला हो गया।

कारखाना निर्माण और उसके साथ ही मजदूरों के लिए घर बनाने का क्रम रखा गया। जमीन प्राप्त करने के बाद मजदूरों के लिए घर बनाने की आवश्यकता हेतु पांडेपुर बस्ती पर निगाह डाली गई। अतः पांडेपुर बस्ती को खाली करवाने की योजना बनी। प्रांतीय सरकार से लिखा पढ़ी हुई, इजाजत मिल गई। बस्ती के लोगों को अपना अपना मुआवजा लेकर घर छोड़ने के लिए कहा। झगड़े ने आंदोलन का रूप धारण कर लिया। सूरदास जी की मदद के लिए इंद्रदत्त, सोफिया और विनय आ गये। दूसरी ओर आंदोलन को दबाने के लिए बहुत फौज आ धमकी। आंदोलन बढता ही गया, गोलियाँ चली, इंद्रदत्त शहीद हो गए। सूरदास को गोली लगी और विनय जब मंच पर आए तो जनता ने उन पर व्यग्यों की बौछार की। अशांत जनता को फौजी की गोलियों से बचाने के लिए विनय ने अपने ही रिवाल्वर अपने सीने में दाग ली। इस आत्म बलिदान से आंदोलन की आग थम गई। सूरदास को अस्पताल पहुंचाया गया, सोफिया जाह्नवी, इंदु, भारत सिंह आदि ने उसकी सेवा की, किंतु उसे बचा नहीं सके। जनता सूरदास की चमड़ी की जगह उसकी मूर्ति स्थापित करती है। राजा महेंद्र कुमार रात में उसे मिटाने के लिए जाते हैं और स्वयं उस मूर्ति के नीचे दबकर मर जाते हैं। इस प्रकार राजा महेंद्र कुमार जीत कर भी हार जाते हैं, और सूरदास हारकर भी विजय पा जाता है।

प्रेमचंद ने इस उपन्यास में वर्तमान समाज के सब स्तरों को उधेड कर सामने रखा है। क्लार्क साम्राज्य का प्रतीक है। नायक सूरदास उसकी रक्षा के लिए लडता-जूझता हुआ समाप्त हो जाता है। पूंजीवाद और कारखानेदारी का इस युग का एक सत्य है, अगर उसके अतिरिक्त और कोई भी सत्य है तो वह इसके सामने टिक नहीं सकता। एक पुरानी सामाजिक और राजनीतिक पद्धति को अब कोई आदर्शवादी बचा नहीं सकता। भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्या उनके बीच राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उपन्यास प्रेमचंद के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बहुत ऊँचा उड़ाता है।

'रंगभूमि' प्रेमचंद का सबसे बड़ा उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से जनवरी 1925 में हुआ था। उर्दू में रंगभूमि का अनुवाद 'चौगाने हस्ती' सन् 1927 में दारूल इशायत, लाहौर से प्रकाशित हुआ था। वस्तुतः पूर्व के उपन्यासों की तरह प्रेमचंद ने इस उपन्यास को भी मूल रूप में उर्दू में ही लिखा था। आलोचकों ने गोदान के बाद रंगभूमि को ही प्रेमचंद का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास माना हैः "हिन्दी में प्रेमचंद के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास गोदान के बाद प्रेमचंद के जो अन्य महत्त्वपूर्ण चर्चित उपन्यास हैं, रंगभूमि का स्थान उनमें काफ़ी ऊँचा है।"

'रंगभूमि' उपन्यास के केंद्र में पांडेपुर गाँव है। यही उपन्यास की रंगभूमि है। इसी रंगभूमि में अनेक पात्र अपना-अपना पार्ट खेलते हैं। वस्तुतः इस उपन्यास में

प्रेमचंद ने ईसाई, हिंदू और मुस्लिम परिवारों के माध्यम से धार्मिक रूढ़ियों, परंपराओं और धार्मिक चेतनाओं का उद्घाटन तो किया ही है, साथ ही इस उपन्यास में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद और औद्यागिकीकरण के दुष्परिणामों को भी उजागर किया है। डॉ. शैलेश जैदी के अनुसारः "रंगभूमि हिन्दी का प्रथम उपन्यास है, जिसमें फैलते हुए औद्योगिक जीवन की लपेट में एक जीते-जागते क़स्बे के उजड़ जाने की कथा लिपिबद्ध की गई है।"

जीवन एक रंगभूमि है, जिसमें सभी पात्र अपना-अपना अभिनय खेलते हैं। जो जीवन में जीत व हार की कामना न कर, ज़िन्दगी को जीता चला जाता है, वही इस रंगभूमि का असली खिलाड़ी कहलाता है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में दर्शाया है कि मनुष्य को धर्म, नीति एवं अपनी मर्यादा को ध्यान में रखकर जीवन में अपना कर्म निष्काम भाव से करते रहना चाहिए। इस उपन्यास का नायक सूरदास एक ऐसा ही खिलाड़ी है, जो अपने निश्चय पर दृढ़ रहकर हँसते-खेलते हुए इस जीवन रूपी रंगभूमि में अपना पार्ट एक मँझे हुए अभिनेता की तरह खेलता है। वही पांडेपुर की रंगभूमि का भी असली खिलाड़ी है। पांडेपुर की मूल कथा उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। युद्धभूमि एक ही होने के बावजूद उसे दो मोर्चों पर संघर्ष करना पड़ता है, पहला जॉन सेवक के विरुद्ध दूसरा अपने गाँव के निवासियों के विरुद्ध। जॉन सेवक सूरदास की ज़मीन में अपना सिगरेट का कारखाना खोलना चाहता है, किन्तु सूरदास गाँव के निवासियों के हित को ध्यान में रखकर ज़मीन बेचने से इनकार कर देता है। जॉन सेवक क़ानूनी, फ़ौजदारी, नीति-अनीति, दमन-शोषण आदि सभी प्रयासों के बावजूद अपने मक़सद में सफल नहीं हो पाता। उसके द्वारा अपनाई साम, दाम, दंड, भेद की नीतियाँ पूर्ण रूप से असफल हो जाती हैं, और अंततः सूरदास ही इस पहले मोर्चे पर विजयी होकर उभरता है।

दूसरी तरफ़ उसके गाँव के अपने लोग ही, यहाँ तक कि उसका अपना भतीजा मिठुवा भी उससे छोटी-छोटी बातों पर राग-द्वेष रखने लगता है। भैरों पासी उसकी झोपड़ी में आग तक लगा देता है, बावजूद इसके वह हमेशा उसके साथ उदारता, अपनत्व और भाईचारे का बर्ताव करता है। वह उनके छल-कपटों को माफ़ तो करता ही है, साथ ही उनकी यथासंभव मदद भी करता है। अपने विराट् और देवोपम व्यक्तित्व तथा आदर्श चरित्र के कारण ही वह इस दूसरे मोर्चे पर भी विजय ध्वज लहराता है। उसके हितैषी तो सदैव उसके क़ायल रहते ही हैं, किन्तु उसके दुश्मन भी उसकी धर्म-नीति और आदर्शों का लोहा मानते हैं। वह ज़िन्दगी को एक खेल की तरह जीता है और 'तू रंगभूमि में आया, दिखलाने अपनी माया' गीत गाता हुआ ज़िन्दगी के हर रस का आनंद लेता हैः "हमारी बड़ी भूल यही है कि खेल को खेल की तरह नहीं खेलते। खेल में धाँधली करके कोई जीत ही जाय, तो क्या हाथ आएगा? खेलना तो इस तरह चाहिए कि निगाह जीत पर रहे, पर हार से घबराए नहीं, ईमान को न छोड़े। जीत कर इतना न इतराए कि अब कभी हार होगी ही नहीं। यह हार-जीत तो ज़िंदगानी के साथ है।"

सूरदास के अतिरिक्त सोफिया, जाह्नवी और विनय भी इस रंगभूमि के आदर्श और साहसी योद्धा हैं। सोफिया की अध्ययनप्रियता, धार्मिक चेतना और विनय के प्रति समर्पण का भाव तथा विनय की मातृभक्ति और समाज सेवा उल्लेखनीय है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसारः "रंगभूमि शायद हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें एक ईसाई लड़की और एक हिंदू लड़के का प्रेम दिखाया गया है।" इस प्रकार विनय-सोफिया का पवित्र प्रेम भी इस उपन्यास की ख़ूबी है। जाह्नवी राष्ट्रप्रेमी नारी है, जो देश की ख़ातिर अपने पुत्र विनय को बलिदान करने में गर्व की अनुभूति करती हैः "यह सच्चा शहीद था। तुम लोग क्यों रोते हो? विनय के लिए? तुम लोगों में कितने ही युवक हैं, कितने ही बाल-बच्चों वाले हैं। युवकों से मैं कहूँगी जाओ और विनय की भाँति प्राण देना सीखो। दुनिया केवल पेट पालने की जगह नहीं है। देश की आँखें तुम्हारी ओर लगी हुई हैं, तुम्हीं इसका बेड़ा पार लगाओगे।" डॉ. गांगुली का चरित्र भी एक समाजसेवी राष्ट्रभक्त का चरित्र है।

वस्तुतः प्रेमचंद के उपन्यासों में सबसे प्रमुख विशेषता है उनकी आदर्शवादिता। चरित्रों और उनकी प्रवृत्तियों का निर्देश करने में वे आदशोन्मुखी हैं। यही बात उनके इस उपन्यास के चरित्रों में दिखाई देती है। सोफिया, विनय, जाह्नवी, डॉ. गांगुली और सूरदास जैसे चरित्र इस बात की पुष्टि करते हैं। सूरदास की सृष्टि तो प्रेमचंद ने गाँधीवादी आदर्श के नमूने पर ही की है। रंगभूमि न सिर्फ़ अपने आदर्श चरित्रों के लिए बल्कि आज़ादी से पूर्व की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति के यथार्थ चित्रण, व्यापक

देशकाल, युगप्रामाणिकता और अपनी महाकाव्यात्मकता के कारण भी हिन्दी उपन्यास जगत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। 'रंगभूमि' लेखक का पहला ऐसा उपन्यास है, जिसके महाकाव्यीय उपकरण सर्वाधिक मुखरित हैं। मुझे आश्चर्य होता है, डॉ. कमलकिशोर गोयनका के पूर्व के आलोचकों ने 'रंगभूमि' को महाकाव्यात्मक उपन्यास घोषित क्यों नहीं किया? अगर गोदान 'कृषक जीवन का महाकाव्य' है तो निश्चित रूप से रंगभूमि भी 'मानव जीवन का महाकाव्य' है क्योंकि इस उपन्यास में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक संदर्भों का युगानुकूल चित्रण होने के साथ-साथ मानवीयता, मनोवैज्ञानिकता, ऐतिहासिकता, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, साहित्यिकता, पौराणिकता और मानवीय समस्याओं, संघर्षों, आदर्शों और जीवन मूल्यों का बख़ूबी चित्रण हुआ है। और साथ ही सूरदास जैसे वीर नायक की स्थापना भी हुई है। डॉ. गोयनका भी मानते हैं कि रंगभूमि की महाकाव्यात्मकता युग के अनेकोन्मुखी चित्रण एवं वीर चरित्रों की विद्यमानता से पुष्ट होती है। इतना ही नहीं इस उपन्यास में भारतीय दर्शन की अनुगूँज सुनाई देती है। 'गीता' का कर्मवाद 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' इस उपन्यास का आधार है। सोफिया और विनय के प्रेम में धर्म का बाधक बनना धर्म की कमज़ोरी और उसकी विडंबना को दर्शाता है। धर्म क्या है? धर्म का मानव जीवन में क्या महत्व है? जीवन क्या है? जीवन का उद्देश्य क्या है? इन सारे सवालों के जवाब रंगभूमि में मिलते हैं। वस्तुतः धर्म, दर्शन और जीवन इन तीनों चीज़ों से मिलकर बनी है 'रंगभूमि'। रंगभूमि की अनेक विशेषताओं के कारण ही आलोचक प्रकाशचंद्र गुप्त इसे एक महान साहित्यिक कृति और हिन्दी उपन्यास लेखन का उत्तुंग हिमशिखर घोषित करते हैं।

प्रेमचंद की भाषा शैली

प्रेमचंद की भाषा सरल और सजीव और व्यावहारिक है। उसे साधारण पढ़े-लिखे लोग भी समझ लेते हैं। उसमें आवश्यकतानुसार अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी आदि के शब्दों का भी प्रयोग है। प्रेमचंद की भाषा भावों और विचारों के अनुकूल है। गंभीर भावों को व्यक्त करने में गंभीर भाषा और सरल भावों को व्यक्त करने में सरल भाषा को अपनाया गया है। इस कारण भाषा में स्वाभाविक उतार-चढ़ाव आ गया है। प्रेमचंद जी की भाषा पात्रों के अनुकूल है। उनके हिंदू पात्र हिन्दी और मुस्लिम पात्र उर्दू बोलते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण पात्रों की भाषा ग्रामीण है। और शिक्षितों की भाषा शुद्ध और परिष्कृत भाषा है।

डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं: 'उनके उपन्यासों की भाषा की खूबी यह है कि शब्दों के चुनाव एवं वाक्य-योजना की दृष्टि से उसे 'सरल' एवं 'बोलचाल की भाषा' कहा जाता है। पर भाषा की इस सरलता को निर्जीवता, एकरसता एवं अकाव्यात्मकता का पर्याय नहीं समझा जाना चाहिए।

Critical Overview / अवलोकन

रंगभूमि उपन्यास में वर्णित समस्याओं को प्रेमचंद ने परिवारों की कथा की सीमाओं में ही बाँधा है। व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में मानकर समाज के प्रति उसका उत्तरदायित्व अवश्य स्वीकार करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- चौगाने हस्ती उर्दू उपन्यास का हिन्दी रूपांतर।
- नायक सूरदास शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्ति है।
- सूरदास अहिंसा वाद का पुजारी है।
- पूंजीवाद के साथ जन संघर्ष का तांडव।
- सोफिया का चरित्र।
- सोफिया-विनय के प्रेम की गाथा।
- शाश्वत प्रेम का प्रतीक।
- सूरदास की मृत्यु।
- राष्ट्रपति महात्मा गांधी की छवि।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

- सूरदास के पक्ष पर लेखक की सहानुभूति
- राष्ट्रीयता का प्रभाव।
- गांधीदर्शन, निष्काम कर्म और सत्य के अवलंबन।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रंगभूमि का नायक कौन है?
2. सोफिया किस से प्रेम किया?
3. रंगभूमि उपन्यास का प्रकाशन वर्ष लिखिए?
4. विनय किसका बेटा है?
5. इन्दू किसकी सखी थी?
6. जॉन सेवक कौन सी कारखाना खोलना चाहते थे?
7. रंगभूमि उपन्यास का प्रकाशक कौन है?
8. प्रेमचंद का सबसे बडा उपन्यास कौन-सा है?

Answers / उत्तर

1. अंधे भिखारी सूरदास
2. विनय
3. सन् 1925 ई
4. राजा साहब
5. सोफिया
6. सिगरेट का कारखाना
7. गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ
8. रंगभूमि

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. सूरदास का चरित्र चित्रण।
2. रंगभूमि उपन्यास और गांधीवादी प्रभाव।
3. रंगभूमि उपन्यास का उद्देश्य लिखिए।
4. सोफिया का चरित्र चित्रण लिखिए।
5. रंगभूमि उपन्यास की मूल समस्या पर टिप्पणी लिखिए।
6. रंगभूमि उपन्यास पर चित्रित गांधीवाद का प्रभाव।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद - मदन गोपाल, संस्करण 1995, नई दिल्ली।
2. कुछ विचार - प्रेमचंद।
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास - डॉ. श्री कृष्ण लाल।
4. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉक्टर त्रिभुवन सिंह।
5. रंगभूमि - प्रेमचंद।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेन्द्र।
7. प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान; डॉ. कमलकिशोर गोयनका।
8. प्रेमचंद की उपन्यास यात्राः नव मूल्यांकन; डॉ. शैलेश जैदी।
9. प्रेमचंदः साहित्यिक विवेचन; नंददुलारे बाजपेई।
10. प्रेमचंदः व्यक्ति और साहित्यकार; मन्मथनाथ गुप्त।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 03

कहानीकार प्रेमचंद

इकाई 1

हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के बारे में समझता है
- हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का योगदान समझता है
- प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

धनपत राय का साहित्यिक नाम प्रेमचंद था, जो इनके द्वारा जीवन के अधिकांश वर्षों के व्यतीत हो जाने के बाद अपनाया गया। शुरुआत में जब उन्होंने सरकारी नौकरी करते हुए कहानी का लेखन आरंभ किया था तब वह नवाब राय के नाम से लिखा करते थे। भारत सरकार के द्वारा इनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' को ज़ब्त कर लिया गया जिसके कारण इन्हें नवाब राय का नाम छोड़ना पड़ा। इसके बाद का साहित्य इनका प्रेमचंद के नाम से लिखा गया।

पहला कहानी संग्रह सोजे वतन को भारत सरकार द्वारा ज़ब्त कर लेने के बाद प्रेमचंद ने बड़े पैमाने पर कहानियों और उपन्यासों को पढ़ना प्रारंभ किया। शुरू में वे एक तंबाकू विक्रेता की दुकान में जाकर कहानियों के अक्षय भंडार 'तिलिस्मे होशरूबा' का पाठ सुने जिसे 'फैजी' ने अकबर के मनोरंजन हेतु लिखा था। इन्हीं कहानियों को पूरे वर्ष होने के बाद प्रेमचंद की कल्पना को नई दिशा मिली तथा साहित्य की अन्य अमूल्य रचनाएँ भी प्रेमचंद के द्वारा कही गई। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में बुद्धि लाल नाम के पुस्तक विक्रेता से उनकी दोस्ती हुई और प्रेमचंद इनकी दुकान की किताबें अपने विद्यालय में बेचा करते थे और इसके भुगतान में वे कुछ कहानियों और उपन्यासों को कुछ समय के लिए पढ़ने के लिए ले जाते थे। इस प्रकार से उन्होंने शुरुआती के वर्षों में सैकड़ों कहानियों और उपन्यासों को पढ़े और उसके बाद इन्होंने गोरखपुर में ही अपने सबसे पहली साहित्य कृति को रूप दिया।

प्रेमचंद की कृतियाँ भगवान शंकर के स्वरूप से प्रभावित जान पड़ती है। इन्होंने सत्यम शिवम सुंदरम के तथ्य को अपनाया है। भगवान शिव की कलात्मकता को उन्होंने आत्मर्पित किया है। प्रेमचंद ने ना तो भूतकाल का गुणगान किया है और ना ही भविष्य काल की कल्पनाओं को जीया है। उन्होंने बड़ी ही ईमानदारी के साथ वर्तमान में जीते हुए वर्तमान काल की परिस्थितियों को अपने कृतियों में समुचित स्थान दिया है। प्रेमचंद गरीबों व किसानों के विषय में कहते हैं कि 'इनके ऊपर बंधन नहीं है बल्कि यह मानसिक रूप से बंधन के जाल में जकड़े हुए हैं यदि यह सभी मानसिक रूप से यह स्वीकार कर ले कि इन्हें कोई भी दवा नहीं सकता, उनका उत्पीड़न नहीं कर सकता तो वे सभी अपनी समस्याओं और उत्पीड़न की विभिन्न प्रताड़नाओं से मुक्त हो जाएँगे।'

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रेमचंद, नवाबराय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्रमुख कहानी, प्रेमचन्द युग

Discussion / चर्चा

डाक टिकट पर प्रेमचंद

प्रेमचंद

1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें उस दौर के समाजसुधार आन्दोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आन्दोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को 'प्रेमचन्द युग' कहा जाता है

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था। आरंभ में वे नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। प्रेमचंद की पहली रचना के संबंध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- प्रेमचंद की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था जो उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के फलस्वरूप चमारों द्वारा उनकी पिटाई पर लिखा था। इसका जिक्र उन्होंने 'पहली रचना' नाम के अपने लेख में किया है। उनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी रूपांतरण देवस्थान रहस्य नाम से हुआ। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' है जिसका हिन्दी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ। 1908 ई. में उनका पहला कहानी संग्रह सोजेवतन प्रकाशित हुआ। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत इस संग्रह को अंग्रेज़ सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया और इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर ली गयी और इसके लेखक नवाब राय को भविष्य में लेखन न करने की चेतावनी दी। इसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा। उनका यह नाम दयानारायण निगम ने रखा था। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' ज़माना पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई।

1914 ई. में उस समय की प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका सरस्वती के दिसम्बर अंक में पहली बार उनकी कहानी सौत नाम से प्रकाशित हुई। 1918 ई. में उनका प्रकाशित पहला हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिन्दी का कथाकार बना दिया। हालाँकि उनकी लगभग सभी रचनाएँ हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे।

असहयोग आंदोलन के दौरान 1921 में सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सृजन में लग गए। उन्होंने 'मर्यादा' नामक पत्रिका का संपादन किया था। इसके बाद उन्होंने लगभग छह वर्षों तक हिन्दी पत्रिका 'माधुरी' का संपादन किया। 1922 में उन्होंने बेदखली की समस्या पर आधारित प्रेमाश्रम उपन्यास प्रकाशित किया। 1925 ई. में उन्होंने 'रंगभूमि' नामक बृहत् उपन्यास लिखा, जिसके लिए उन्हें मंगलप्रसाद पारितोषिक भी मिला। 1926-29 ई. के दौरान उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा संपादित हिन्दी मासिक पत्रिका चाँद के लिए धारावाहिक उपन्यास के रूप में 'निर्मला' की रचना की। इसके बाद उन्होंने कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान की रचना की। उन्होंने 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन शुरू किया। 1932 ई. में उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'जागरण' का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की आजंता सिनेटोन कंपनी में कथा-लेखक की नौकरी भी की। 1934 में प्रदर्शित फिल्म मजदूर की कहानी उन्होंने ही लिखी थी। 1920-36 तक प्रेमचंद लगभग दस या अधिक कहानी प्रतिवर्ष लिखते रहे। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से 8

खंडों में प्रकाशित हुई। उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त वैचारिक निबंध, संपादकीय, पत्र के रूप में भी उनका विपुल लेखन उपलब्ध है।

हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान

प्रेमचन्द युगीन कहानी ने अपने स्वरूप को संवारने एवं निखारने का काम किया। उसमें विषय वैविध्य एवं शिल्प सजगता का विकास हुआ। यदि इस काल की कहानियों एवं कहानीकारों का वर्गीकरण करें तो उन्हें तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में अंदरमुखी परंपरा के कहानीकार है जिनका प्रतिनिधित्व करते हैं जयशंकर प्रसाद। दूसरे वर्ग में बहिरमुखी परम्परा के प्रतिनिधि कथाकार है प्रेमचंद तथा तृतीय वर्ग में मध्यवर्ती परंपरा के कहानी लेखन का प्रतिनिधित्व सुदर्शन करते हैं।

इस काल की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण भी प्रदान रूप से हुआ है। व्यक्ति चरित्र एवं नारी को इस काल में प्रमुखता दी जाने लगी थी तथा शैली एवं शिल्प की दृष्टि से कहानी प्रौढ़ता प्राप्त कर रही थी। इस युग की कहानियाँ भाषा की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है। लोक मंगल एवं लोकरंजन की प्रवृत्ति इस काल में देख सकते हैं। कथा सम्राट प्रेमचंद का आविर्भाव भारतीय इतिहास के संधिकाल में हुआ। उस समय गुलाम भारत के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक विसंगतमयी अस्तव्यस्त परिदृश्य का मानचित्र अंग्रेजी साम्राज्यवादी शोषण-नीतियों से और ज्यादा दयनीय हो बिखर चुका था। यही कारण है कि 1905 ई. में रूसी क्रांति के पश्चात् समस्त एशिया के साथ-साथ भारतीय जन आन्दोलन भी जागरूकता व विद्रोह की नई लहरों से उद्वेलित हो उठा। उसी समय उत्तर प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में 'देशप्रेम' नामक छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह प्रकाशित हुआ। जिसमें पाँच छोटी कहानियाँ संग्रहित थीं। देश प्रेम की भावना इन पृष्ठों में सांसें ले रही थी। और इसका लेखक प्रेमचंद थे। प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का सूत्रपात इसी तरह हुआ। जीवन की कठोर वास्तविकता अर्थात् जमींदारों, महाजनों के निष्ठुर पंज़ों से मुक्ति की छटपटाहट लिए किसानों का मूक विद्रोह, नौकरीपेशा मध्यम वर्ग की अल्पवेतन में सफेदपोशी की समस्या व आत्मरक्षा के लिए आजीवन प्रयास, अंध-संस्कार, अछूतों की दरिद्रता-ताड़ना, क्रांतिकारी देशभक्तों का उबलता आक्रोश, मानवीय विश्वासों के विरूद्ध धर्म के नाम पर ढोंग, न्याय के नाम पर नीति कुशल घूसखोर विचारकों के कुचक्र, विदेशी शासन के दोष यह सब विषय बने। साहित्य लेखन के। इसी विषयगत विविधता व शोषितों के प्रति मानवतावाद तथा उनके लिए आज़ादी के अधिकार को सर्वमान्य करने हेतु प्रेमचंद के अथक प्रयत्नों ने उन्हें समस्त बंधनों से ऊपर उठाकर अनेक भाषाओं में विभक्त अखिल भारतीय लेखक की मर्यादा में अधिष्ठित किया।

प्रेमचंद के अमूल्य योगदान से आज कहानी विधा विषय, कथ्य स्वरूप, आदर्श व शिल्प की दृष्टि से नये-नये आयामों को आत्मसात करती हुई संतोषजनक पड़ाव तय करती विकास की मंजिल तक पहुँचने में सक्षम हो चुकी है। इनकी सार्थक कहानी कला के विषय में एक आलोचक कथन है, "ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, चरित्र व व्यक्तिगत स्तरों तक फैले प्रेमचंद की भावपक्ष की विविधता व गहनता इसकी कलात्मकता व साहित्यिक महत्ता की द्योतक है। विषय की व्यापकता, चरित्र चित्रण की सूक्ष्मता, सशक्त संवाद, सजीव वातावरण, भाषा की गंभीरता, प्रवाहमयी शैली व लोक संग्रह भावना की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियाँ अद्वितीय हैं। पंच परमेश्वर, आत्माराम, बड़े घर की बेटी, शतरंज के खिलाड़ी, नशा, ठाकुर का कुआँ, पूस की रात व कफ़न विश्व की श्रेष्ठ कहानियों की पंक्ति में खड़े होने के योग्य हैं।"

वास्तव में कहानियों की यह उत्कृष्टता, श्रेष्ठता, परिपक्वता प्रेमचंद की अथाह भाव-राशि, संवेदन-शक्ति, चित्रण-कला, पैनी अन्तर्दृष्टि व विलक्षण प्रतिभा के कारण संभव हो पाई है साथ ही यह तथ्य भी विचारणीय है कि प्रत्येक लेखक लेखन की कच्ची उम्र में समकालीन प्रसिद्ध लेखकों से सीखता है, कला संबंधी धारणाओं का अनुकरण भी करता है, प्रेमचंद भी सीखा, वे भी प्रभावित हुए, पर जिस लेखक में जितनी अधिक अनुभव शक्ति होती है और अनुभूत सत्य को व्यक्त करने की जितनी अधिक सामर्थ्य और शक्ति होती है उसकी अपनी देन उतनी ही अधिक होती है। लेखन शैली में निर्माण-तत्व, मौलिकता का समावेश जितना बढ़ता है, उतनी ही वह उसकी निजी शैली कहलाने लगती है, साथ ही समकालीन घटनाओं, युगीन ऐतिहासिक सत्यों, साहित्यिक रुचियों व प्रवृत्तियों को संग-संग साथ चलाने में उतनी सफलता मिलती है, युग प्रवर्तक कहलाने की मंजिल भी करीब आने लगती है। जीवन उन्हें नये-नये अनुभवों की पाठशाला जान

पड़ता था। जीवनानुभवों ने ही उन्हें सिखाया कि सिद्धांतों की अपेक्षा मनुष्य अधिक आदरणीय है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद ने पहले उर्दू में, फिर हिन्दी में लेखन कार्य किया। हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द नाम से साहित्य लेखन किया। प्रेमचन्द नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' ज़माना पत्रिका में प्रकाशित हुई। हिन्दी में उनकी पहली कहानी, 'सौत' 1915 में तथा पहला लघु कथा संग्रह, 'सप्त सरोज' 1917 में सरस्वती नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा, आत्माराम, शतरंज के खिलाड़ी, नशा, ठाकुर का कुआँ, कफ़न विश्व की श्रेष्ठ कहानियों की पंक्ति में खड़े होने के योग्य हैं। कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण देख सकते हैं। विषय की व्यापकता, चरित्र चित्रण की सूक्ष्मता, सशक्त संवाद, सजीव वातावरण, भाषा की गंभीरता, प्रवाहमयी शैली व लोक संग्रह भावना की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियाँ अद्वितीय हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचन्द व्यक्तित्व
- प्रेमचन्द के रचना संसार
- उर्दू में नवाबराय नाम से लेखन की शुरुआत
- तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण
- प्रेमचंद का योगदान

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद की समग्र कहानियों के संकलन का क्या नाम है?
2. प्रेमचंद की किस कृति को अंग्रेज़ी सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था?
3. प्रेमचंद ने पहले किस भाषा में लेखन कार्य शुरू किया?
4. प्रेमचंद के 'बड़े घर की बेटी' नामक कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई?
5. प्रेमचंद उर्दू में किस नाम से लिखते थे?
6. प्रेमचंद का मासिक पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन कब और कहाँ से हुआ?
7. प्रेमचंद का पहला हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' का प्रकाशन वर्ष कब है?
8. प्रेमचंद का 1908 ई. में प्रकाशित पहला कहानी संग्रह का नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. मानसरोवर (आठ भागों में)
2. सोजे वतन
3. उर्दू
4. जमाना
5. नवाबराय

6. 1930 में बनारस से
7. 1918
8. सोजेवतन

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद पूर्व कहानी साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।
2. कहानी क्षेत्र में प्रेमचंद के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।
3. प्रेमचंद के समकालीन कहानीकार के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।
5. प्रेमचंद की कहानी की विशेषताएँ लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. कहानीकार प्रेमचंद : रचना दृष्टि और रचना शिल्प - शिवकुमार मिश्र
3. कफन एवं अन्य कहानियाँ - प्रेमचंद
4. मानसरोवर (भागा।) - प्रेमचंद
5. कलम का सिपाही- अमृतराय
6. प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
7. कुछ विचार- प्रेमचंद
8. मानसरोवर- प्रेमचन्द

इकाई 2

प्रेमचंद की कहानी साहित्य की विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के कहानीकला के बारे में समझता है
- प्रेमचंद युगीन परिस्थितियों के बारे में समझता है
- कहानी सम्राट के रूप में प्रेमचंद का स्थान समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद की कहानियाँ ऐसी है जिनमें ग्रामीण कथाओं का रस और उनकी शैली अपनाई गई है। प्रेमचंद ने ग्राम-कथाओं से कहानी कहना सीखा था, उनकी नकल न की थी। प्रेमचंद की कहानियाँ पढ़ते समय घटन-कुतुहल कम रहता है, चरित्र-चित्रण की बारीकियों में पाठक का मन ज्यादा रहता है। उनकी कहानियों में घटनाओं का वैसा महत्व नहीं जैसा चरित्र का। प्रेमचंद की कहानियाँ केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं लिखी गई। उन सभी में कोई-न-कोई सुझाव, जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण या किसी समस्या का हल जरूर मिलता है। यह उनकी खूबी है कि सारी बात वह ऐसा चित्र खीचकर कहते कि कहानी में उपदेशकों का रूखापन नहीं आने पाता। उनके अधिकांश पात्र हास्य-प्रेमी, जिंदादिल, कठिन परिस्थितियों का धीरज से मुकाबला करनेवाले, अन्याय के सामने सिर न झुकानेवाले होते हैं। प्रेमचंद ने ये सब बातें जनता में देखी थीं, इसलिए कहानियों में उन्हें चित्रित कर सके थे। उनकी शैली की चित्रमयता, भाषा पर असाधारण अधिकार, चरित्र-चित्रण का कौशल और हर जगह व्यंग्य और हास्य ढूँढ़ लेने की क्षमता उन्हें एक प्रभावशाली कलाकार बनाती है। उनकी सहृदयता और मानव-प्रेम उन्हें जनता का प्रिय कलाकार बनाते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, मध्यवर्गीय जीवन तत्कालीन समाज, किसान समस्या, दलित, सौन्दर्यवाद

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद के कहानी-साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचंद की रचनाओं में जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है। उन्होंने मालिक और मजदूरों, ज़मीदारों और किसानों तथा नवीनता और प्राचीनता का संघर्ष दिखाया है। प्रेमचंद ने अपने पात्रों का चुनाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से किया है, किंतु उनकी दृष्टि समाज से उपेक्षित वर्ग की ओर अधिक रहा है। प्रेमचंद जी ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनाया है। उनके पात्र प्रायः वर्ग के प्रतिनिधि रूप में सामने आते हैं। घटनाओं के विकास के साथ-साथ उनकी रचनाओं में पात्रों के चरित्र का भी विकास होता चलता है। उनके कथोपकथन मनोवैज्ञानिक होते हैं। प्रेमचंद जी एक सच्चे समाज सुधारक और क्रांतिकारी लेखक थे। उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान-स्थान पर दहेज, बेमेल विवाह आदि का सबल विरोध किया है। नारी के प्रति उनके मन में स्वाभाविक श्रद्धा थी। समाज में उपेक्षिता, अपमानिता और पतिता

स्त्रियों के प्रति उनका हृदय सहानुभूति से परिपूर्ण रहा है। कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं।

जीवन का यथार्थ अंकनः– प्रेमचंद साहित्य को जीवन की आलोचना मानते हैं, उनकेलिए साहित्य का केन्द्र बिन्दु मानव जीवन है। प्रेमचंद का कहना है कि मानव जीवन का दर्पण ही साहित्य है। इस साहित्य की उत्पत्ति इनके शब्दों में–'हमारी आत्मा के विकास को शक्ति कहाँ से मिलती है– शक्ति संघर्ष में है। हमारा मन समस्त बाधाओं को परास्त कर अपने स्वाभाविक कर्म को प्राप्त करने को सदैव प्रयासरत रहता है। इसी संघर्ष से साहित्य उपजता है। साहित्य में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि वह जीवन की सच्चाइयों का दर्पण हो।

तत्कालीन उच्च कोटि की साहित्यिक कथाओं, शैली की विशिष्टता कौतूहल, नाटकीयता, चरित्र व भावों के कुशल अंकन के बावजूद साहित्यिकता की दृष्टि से घटना वैचित्र्य, यथार्थवाद व मनुष्यता का अभाव का अंकन प्रेमचंद ने अपने 'कहानी कला' लेख में सशक्त ढंग से किया। लिखते हैं– वे 'विद्वानों व आचार्यों ने कला के विकास के लिए जो मर्यादाएँ बना दी, उससे कला का रूप निखरा है, प्रकृति में जो कला है, वह प्रकृति की है, मानव की नहीं। मनुष्य को वही कला मोहित करती है जिस पर मनुष्य की आत्मा की छाप हो, जो गीली मिट्टी की भांति मानव हृदय के सांचे में पड़कर परिष्कृत हो जाए। हमने जिस युग को अभी पार किया है, उसे जीवन से कोई मतलब नहीं था। साहित्यकार मनमोहक कल्पना की सृष्टि बांधकर मनमाने तिलस्म बांधने में व्यस्त थे, कहीं फिसानय अज़ायब की दास्तां थी, कहीं दोस्ताने ख्याल की, तो कहीं चंद्रकांता सन्तति की, इन आख्यानों में घटना वैचित्र्य के कारण मनोरंजन तो है और है हमारे अद्भुत प्रेम रस की तृप्ति, पर उस रस की कमी है जो शिक्षित रुचि साहित्य में खोजती है। साहित्य का जीवन से कोई लगाव नहीं है, यह कल्पनातीत था। लेकिन अब स्थिति बदली है, अब हम राजाओं की अलौकिक वीरता या भूतप्रेतों के काल्पनिक चरित्रों को देखकर प्रसन्न नहीं होते, उन्हें यथार्थ के कांटे पर तोलते हैं। आज अस्वाभाविक बातों की गुंजाइश नहीं, हम उनमें अपने जीवन का प्रतिबिंब देखना चाहते हैं', एक-एक वाक्य, एक-एक पात्र को यथार्थ रूप में देखना चाहते हैं। उनका निष्कर्ष है– 'जो कुछ स्वाभाविक है, वही सत्य है, स्वाभाविकता से दूर कला अपना आनंद खो देती है, जिसे समझने वाले थोड़े से कलाविद् ही रह जाते हैं, उनमें जनता के मर्म को स्पर्श करने की शक्ति नहीं रह जाती। जबकि प्रेमचंद ने यथार्थवाद, मानवतावाद, मार्मिक संवेदना व मनोविज्ञान का दमन पकड़ कर जनता के मर्म को गहराई से स्पर्श किया। कफन, पूस की रात, जुर्माना, सद्गति, नशा इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है।

सौन्दर्यवाद व उपयोगितावादः- कला के संबंध में प्रेमचंद ने अपने विचार व्यक्त किये हैं– 'मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तोलता हूँ निस्संदेह कला का उद्देश्य सौहार्द पुष्टि करना है। वह हमारे आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है' लेकिन आज कला नाम है संकुचित पूजा का, शब्द योजना का, भाव निबन्धन का, कोई आदर्श नहीं, भक्ति-वैराग्य-आध्यात्म, दुनिया से तटस्थता उसकी ऊंची कल्पनाएँ हैं, ऐसी कला जनजीवन को नव प्रेरणा नहीं दे सकती, वह चिरंतन सौंदर्य की निष्प्राण प्रतिमा की तरह व्यर्थ रहती है। ऐसे कलाकार की दृष्टि इतनी व्यापक नहीं कि जीवन संग्राम में सौंदर्य का चरमोत्कर्ष देखे, उसके लिए सौंदर्य का सुंदर स्त्री के रंगे होंठों, कपोलों व कटीली भौंहों में वास है– उस बच्चे वाली गरीब, रूप रहित स्त्री में नहीं जो बच्चे को खेत की मेड़ पर सुलाए कड़ी दोपहरी में पसीना बहा रही है– उसके उलझे रूखे बालों, पपड़ियाँ पड़े होठों व कुम्हलाए गालों में सौंदर्य का प्रवेश कहाँ? इस संकीर्ण दृष्टि में अगर विस्तार आ जाए तो देख सकेगी रंगे होठों व कपोलों की आड़ में रूप गर्व व निष्ठुरता छिपी है तो मुरझाए होठों, कुम्हलाए गालों पर बहते आंसुओं में त्याग, श्रद्धा, कष्ट सहिष्णुता छलक रही है'। इसलिए आगे लिखा– 'साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नही जाता। उसका लक्ष्य केवल महफिल सजाना व मनोरंजन के साधन जुटाना नहीं, वह देश भक्ति राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं अपितु उनके आगे मशाल दिखाती सच्चाई है। प्रभुत्व, अन्याय, आत्म-सर्वस्वता के विरूद्ध मानव के मन में जो विद्रोह जल उठता है वही साहित्य है। लेखक का काम उस विद्रोह को जन भाषा में रूपांतरित करना है और हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की प्रेरणा हो जो हममें गति व संघर्ष, बैचेनी

पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि सोना मृत्यु का लक्षण है।'

और विस्तार से प्रेमचंद के विचार इन शब्दों में रूपाकार लेते हैं–'भावोत्तेजक कला का मौसम अब नहीं रहा स्थितिनुरूप सामान्यजन को अब उस कला की जरूरत है, जिसमें जटिलताओं से जूझने का क्षमता हो, जो समस्या को उभार सके, कर्म का संदेश दे, जिससे हमें अपनी दूषित अवस्था की अनुभूति हो, हम देखें कि किन अन्तः बाहरी कारणों से हम निर्जीवता व ह्यास की अवस्था तक पहुँच गये हैं, उन्हें दूर करने की कोशिश करें।'

स्पष्टतः सौंदर्यानुभूति, साहित्य व कला के प्रति उपयोगी दृष्टि, कर्मशीलता का संदेश व सुप्त जनचेतना में जागरूकता का एहसास जगाना, सभी विशेषताएँ प्रेमचंद की कहानी कला में अत्यंत मुखर हुई। साहित्य पर सर्वत्र शिव का शासन रहा– सत्य व सुंदर शिव के अनुचर होकर आये और कला इनके लिए स्वीकृत रूप से जीवन के लिए थी, जिसका ध्येय था सामान्य लोक हित-चिंतन।

आदर्श व यथार्थ की परिकल्पनाः– इस संदर्भ में प्रेमचंद का यह कहना कितना अर्थगर्भित व सटीक है– 'सूखी रोटियाँ सोने के थालों में परोस देने से पूरियाँ नहीं बन जाती' अर्थात जीवन में जो कुछ सत्य-शिव-सुंदर है उसी को दर्शाना मुख्य उद्देश्य रहा पर यथार्थ चित्रण हेतु साहित्य की उपयोगिता को तिरस्कृत नहीं किया। सदैव सत्य व न्याय की विजय चाही, यदि यथार्थवाद से यह विजय असंभव लगती वहाँ आदर्श से समझौता कर सुधारवाद व हृदय परिवर्तन द्वारा विजय घोषित करने से परहेज नहीं करते। आलोचकों ने इस समझौतावादी प्रवृत्ति को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का नाम दिया। इन्होंने कहानियों में समस्याएँ उकेरी, कारण दूषित व्यवस्था में खोजा, समाधान आदर्शवाद में ढूंढ़ा। पर दूसरी ओर समीक्षकों को यह तथ्य भी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि प्रेमचंद का आदर्शवाद मानवतावाद से परिचालित था ताकि दुःखी-पीड़ित सामान्यजन जीवन जटिलताओं के प्रति आकर्षित हो व कटुता को मिटाने का प्रयास करे यानि जो काम समाज द्वारा संभव नहीं वो कहानियों द्वारा संभव हो पाया। उनका दृढ़ विश्वास था– 'मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं यदि मानव पतन के गर्त में गिर सकता है तो आकाश गंगा में भी नहा सकता है'। यही है प्रेमचंद के स्थापन का रहस्य। लेकिन आदर्श की यह विजय इतनी भी शक्तिशाली नहीं कि वो जीवन के यथार्थ को कहानियों के पृष्ठों से हटा सके क्योंकि जहाँ कहीं अस्वाभाविक सिद्धांतों का प्रतिपादन करने हेतु यथार्थ का दामन छोड़ा, वहीं कृत्रिमता आयी व मनोविज्ञान हाथ से फिसला।

धीरे-धीरे स्थितियों में आये बदलाव से टूटती मान्यताओं, जिंदगी की ठोकरों, संघर्षो से उपजे निजी कटु अनुभवों व परिपक्वता ने जीवन के अंतिम पर्व में आदर्शवादी प्रवृति को सर्वथा असंगत व अप्राकृतिक परिभाषित कर दिया तो वे तत्काल इससे दामन छुड़ाने को व्यग्र हो उठे। 'कफ़न' संग्रह की कहानियाँ इसी व्यग्रता की सूचक हैं। प्रेमचंद ने साफ महसूस किया कि बुराइयाँ आदर्शो के कृत्रिम आवरण में ढक दी जातीं, पर समाप्त होने की बजाय नीचे बराबर पलती रहतीं और पहले से भी ज्यादा भयंकर रूप धारण कर लेतीं। ये भी जाना कि समाज के बनाये सिद्धांत अटल नहीं वरन् अर्थगत दबावों से बनते-बिगड़ते, टूटते हैं। साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता, किसानों की दरिद्रता इन सभी को सन् 1930-32 के असहयोग व सविनय आंदोलन के उपरांत भी फलते फूलते देखा।

ग्रामीण जीवन

प्रेमचंद अपने साहित्य में ग्रामीण जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों को चित्रित करने के बावजूद मानवीयता की अलख को जगाये रखते थे और उनकी इसी अद्भुत क्षमता के कारण उनकी रचनायें कालजयी बन गए।

साहित्य समीक्षकों के अनुसार प्रेमचन्द के उपन्यासों और कहानियों में कृषि प्रधान समाज, जाति प्रथा, महाजनी व्यवस्था, रूढ़िवाद की जो गहरी समझ देखने को मिलती है, उसका कारण ऐसी बहुत सी परिस्थितियों से प्रेमचंद का स्वयं गुजरना था। प्रेमचंद के जीवन का एक बड़ा हिस्सा घोर निर्धनता में गुजरा था।

दो बैलों की कथा में दो प्राणियों हीरा और मोती के माध्यम से उन्होंने आम जन की आज़ादी की अकुलाहट दिखाई है। दोनों बैल कांजीहाउस की दीवार को ढाह देते हैं। यह कथा आज़ादी की छटपटाहट का प्रतीक है। वर्तमान हिन्दी कथा और उपन्यास जगत में यथार्थवाद के पैरोकार उदय प्रकाश ने कहा कि उपन्यास को जब फैंटसी और गल्प का प्रतीक माना जाता था, उस समय प्रेमचंद ने उसे आम जन की भावनाओं के संदेश के रूप में

प्रस्तुत किया। बाल मनोविज्ञान को अभिव्यक्त करने में भी प्रेमचंद की कोई सानी नहीं थी। अमर रचनाकार ने अपनी कहानी ईदगाह के पात्र हामिद से बड़ी-बड़ी बातें कहलवा दी हैं। हामिद दादी के सानिध्य में परिपक्व है और अन्य हमउम्र साथियों की तरह खेल खिलौनों और गुड्डे गुड़ियों के प्रलोभन में नहीं पड़ता।

आमजीवन की संवेदना को प्रकट करने के लिए व्यापक अनुभूति की जरूरत होती है। गांधीजी, टैगोर और तुलसीदास के बाद प्रेमचंद में यह भावना कूटकूट भरी थी। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में खोखले यथार्थवाद को प्रश्रय नहीं दिया। प्रेमचंद के खुद के शब्दों में वह आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के प्रबल समर्थक हैं। उनके साहित्य में मानवीय समाज की तमाम समस्याएँ हैं तो उनके समाधान भी हैं। उन्होंने अपने साहित्य में संघर्ष के बजाय विचारों के जरिये परिवर्तन की पैरवी की है। उनके दृष्टिकोण में आदमी को विचारों के जरिये संतुष्ट करके उसका हृदय परिवर्तित किया जा सकता है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचन्द के समय में अनूदित कहानियों का बोलबाला था, विशेषकर बंगला कहानियों को पढ़कर हिन्दी कहानियों की रचना होती थी, किन्तु प्रेमचन्द ने अपनी कहानी-कला का निर्माण स्वयं किया। जैसे प्रसाद ने अपना अलग क्षेत्र चुना, अलग शैली और 'तकनीक' अपनायी, उसी प्रकार प्रेमचन्द ने भी किया। प्रेमचन्द की कहानियों का उद्देश्य था- हमारे दैनिक जीवन का चित्रण और ग्रामीण वातावरण का भव्य रूप प्रस्तुत करना। अपनी स्वाभाविकता के कारण उनकी कहानियाँ लोगों को अत्यन्त मार्मिक प्रतीत हुई। प्रेमचन्द जी की कहानियों में यथार्थ एवं आदर्श दोनों का समन्वय है। दूसरे शब्दों में, उनकी कहानियों में आदर्शवाद की प्रधानता है पर यथार्थ की कहीं भी अवहेलना नहीं हुई है। उनकी कहानियों में वास्तविक 'मानव-जीवन का' चित्रण है। उनकी कहानियाँ मानव जीवन के लघु दर्पण की भाँति है, जिनमें हम किसी घटना विशेष का सही और सच्चा चित्रण देख सकते हैं और उससे मनोरंजन, प्रेरणा तथा स्फूर्ति प्राप्त कर सकते हैं। अन्तर्द्वन्द दृष्टि से भी उनकी कहानियाँ उच्चकोटि की हैं।

चरित-चित्रण तथा पात्रों के गुण-शील-निरूपण में भी अद्वितीय हैं। उनकी कहानियों में देशकाल का सच्चा प्रतिविम्ब देखने को मिलता है। उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्ग के सभी लोगों - किसान, मज़दूर, पूँजीपति, जमींदार तथा नौकरी पेशा आदि सभी वर्गों के सफल चित्र उन्होंने खीचे हैं। भारतीय ग्राम्य-जीवन के सच्चे चित्र उनकी कहानियों में देखे जा सकते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में भी उनकी अन्य रचनाओं के समान 'सत्यम्, शिवम् एवं सुन्दरम्' का भाव परिलक्षित होता है, क्योंकि उनमें भी जीवन की व्याख्या है, लोक-कल्याण की भावना है और कला की चरम सीमा है। कहानी-साहित्य के लिए अनुकूल आदर्श तैयार करने का श्रेय श्री प्रेमचन्द जी को प्राप्त है। आदर्शवादी कहानीकार होने के नाते प्रेमचन्द जी मुख्यतः उपयोगितावादी हैं। उनकी कहानियों में जीवन के ऐसे ही चित्रण उपस्थित होते हैं, जो हमारी नैतिक भावनाओं को स्वच्छ और दृढ़ करते हैं। उन्होंने केवल चित्रण के लिए जीवन का चित्रण नहीं किया है। वे तटस्थ भाव से पाप-पुण्य को कला की एक ही तुला पर तोलने वाले या एक ही कसौटी पर परखने वाले कलाकार नहीं हैं। वस्तुतः पाप (बुरे कर्म) के प्रति उनके आकर्षण नहीं और इसीलिए वे उसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं प्रस्तुत करते-वे नैतिकता-मूलक कलाकार है।

निष्कर्षतः प्रेमचन्द जी की कहानियाँ उनके उपन्यासों से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। संख्या और व्यापकता की दृष्टि से तो उनकी कहानियाँ अद्वितीय है। जीवन का कोई अंग उन्होंने अछूता नहीं छोड़ा। सर्वांगीणता और विविधता में प्रेमचन्द जी की समता करने वाले लेखक विश्व साहित्य में भी कम ही मिलेगे, हिन्दी में तो वे प्रत्येक दृष्टि से अद्वितीय ही है। अपनी उपर्युक्त विशेषताओं के कारण उनकी कहानियों का हिन्दी-कहानी-साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः प्रेमचन्द अपने समसामयिक हिन्दी कहानीकारों में अग्रगण्य ठहरते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- जीवन का यथार्थ अंकन।
- सौन्दर्यवाद व उपयोगितावाद के महत्व का चित्रण।
- मानवीय धरातल पर आदर्श व यथार्थ की परिकल्पना।
- उनके साहित्य में मानवीय समाज की तमाम समस्याएँ हैं तो उनके समाधान भी हैं।
- ग्रामीण जीवन का चित्रण।
- आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के प्रबल समर्थक।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या था?
2. बड़े घर की बेटी किसकी कहानी है?
3. प्रेमचंद के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता?
4. प्रेमचंद साहित्य को क्या मानते हैं?
5. प्रेमचंद कहानियाँ का आधार क्या है?
6. 'सूखी रोटियाँ सोने के थालों में परोस देने से पूरियाँ नहीं बन जाती' किसका कथन हैं?
7. दो बैलों की कथा किसकी रचना हैं?
8. प्रेमचंद के कथोपकथन किसप्रकार का है?

Answers / उत्तर

1. धनपतराय
2. प्रेमचंद
3. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद।
4. जीवन की आलोचना
5. सामाजिक समस्या
6. प्रेमचंद
7. प्रेमचंद
8. मनोवैज्ञानिक

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद के स्थान' विषय पर टिप्पणी लिखिए।
2. प्रेमचंद की शैलीगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।
3. कहानी के सम्राट प्रेमचंद।
4. प्रेमचंद की पात्र-योजना पर टिप्पणी लिखिए।
5. कहानी साहित्य में प्रेमचंद के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. कहानीकार प्रेमचंद : रचना दृष्टि और रचना शिल्प - शिवकुमार मिश्र
3. कफन एवं अन्य कहानियां - प्रेमचंद
4. मानसरोवर (भागा I) - प्रेमचंद
5. कलम का सिपाही- अमृतराय
6. प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
7. कुछ विचार - प्रेमचंद
8. मानसरोवर - प्रेमचन्द

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 3

प्रेमचंद की पाँच कहानियाँ (विस्तृत अध्ययन के लिए)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'पंच परमेश्वर' कहानी के बारे में समझता है
- 'ईदगाह' कहानी के बारे में समझता है
- 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के बारे में समझता है
- 'ठाकुर का कुआं' कहानी के बारे में समझता है
- 'कफ़न' कहानी के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचन्द वास्तव में उपन्यासकार की अपेक्षा कहानीकार अधिक थे। इन कहानियों में भी हमें भारत का वही चित्र मिलता है, जो उनके उपन्यासों में है। यहाँ हमें सामाजिक यथार्थ का सच्चा चित्र मिलता है- स्त्री और पुरुष अपने-अपने क्षेत्रों में उन्नत प्रेरणा से प्रेरित होकर कार्यरत और संघर्षरत हैं। इन कहानियों में सबसे महत्वपूर्ण हैं: 'बड़े घर की बेटी'- जो प्रेमचन्द को सबसे अधिक प्रिय थी, 'पंच परमेश्वर', 'ईश्वरी न्याय', 'नमक का दरोगा'। कुछ कहानियाँ व्यक्तियों के चित्र हैं, प्रतिनिधि और महत्वपूर्ण चित्र, जैसे 'बूढ़ी काकी', 'कजाकी', 'आत्माराम' या 'ईदगाह' की बूढ़ी दादी। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कहानियों में अग्रगण्य हैं- 'क्षमा', 'रानी सारन्धा', 'राजा हरदौल'। अनेक कहानियाँ जीवन की सम्पूर्ण व्यथा और पीड़ा की एक झलक हमें दे जाती हैं, जैसे 'पूस की रात', 'सवा सेर गेहूँ', 'ठाकुर का कुआँ', 'मुक्ति- घन', और 'सद्गति'। कुछ कहानियाँ देशभक्ति से लबालब भरी हैं, जैसे 'समर-यात्रा'। 'मोटेराम शास्त्री' के समान कहानियाँ व्यंग्यचित्र हैं। भारतीय जीवन के सतरंगे और उदासी-भरे कारवाँ का भरपूर चित्रण हमें यहाँ मिलता है। इस चित्रण में सजीवता है, शक्ति है और बहुत गहरी भावनाएँ इसके पीछे हैं।

यहाँ परिवार टूट रहे हैं। बच्चा अपनी दादी की मुसीबतों को सोचकर दुःखी है। घरजमाई अपनी पत्नी के घर रहकर अपमानित होता है। गुल्ली- डण्डे का खेल, गाँव की भली लड़की, कर्कश वृद्धा- जिसका जीवन में एक ही पेशा है, चरित्र-हत्या सभी यहाँ मिलते हैं। हीरा और मोती, दो बैलों की कहानी यहां मिलती है। घोर अन्धविश्वासों और पिछड़ेपन की कहानियाँ भी मिलती हैं। विलीन होते हुए युग की कथा भी है, जैसे 'शतरंज के खिलाड़ी'। इन कहानियों में हमें भारत के हृदय और आत्मा के अन्तरंग चित्र मिलते हैं। यहाँ पिछड़ेपन का साम्राज्य है, किन्तु इसके विरुद्ध लड़ने की आकांक्षा और लालसा भी है।

अपनी अनेक कहानियों में प्रेमचन्द मनुष्य के हृदय में स्वार्थ, और उदारता का अन्तः संघर्ष चित्रित करते हैं। अन्त में विजय उन्नत भावनाओं की होती है। प्रेमचन्द यथार्थ का निर्मम अंकन करते हैं, किन्तु उनका आदर्शवाद जीवन को दिशा देने का प्रयास करता है। इसीलिए अपनी सभी कहानियों में 'बड़े घर की बेटी' उन्हें सबसे अधिक पसन्द थी।

लाहौर के एक मासिक-पत्र ने प्रेमचन्द से पूछा कि 'आप कहानी कैसे लिखते हैं!' प्रेमचन्द का उत्तर था: 'मेरी कहानियाँ प्रायः किसी-न-किसी प्रेरणा या अनुभव पर आधारित होती हैं। इसमें मैं ड्रामाई रंग पैदा करने की कोशिश करता हूँ। परन्तु केवल घटना के वर्णन के लिए मैं कहानियाँ कभी नहीं लिखता। मैं कहानी में किसी दार्शनिक या भावात्मक तथ्य को दिखाना चाहता हूँ। जब तक इस प्रकार का कोई आधार नहीं मिलता, मेरी क़लम ही नहीं उठती।'

Keywords / मुख्य बिन्दु

पंच, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक कहानी, दलित समस्या, सामंती शोषण, शतरंज के खिलाडी

Discussion / चर्चा

3.3.1 पंच परमेश्वर

पंचपरमेश्वर- सारांश

'पंच परमेश्वर' शीर्षक कहानी प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी में प्रेमचंद्र जी ने यह दिखलाया है कि उत्तरदायित्व आ जाने से मनुष्य अपनी व्यक्तिगत परिधियों से ऊपर उठ जाता है। प्रस्तुत कहानी में हम प्रेमचंद जी के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की सफल अभिव्यक्ति देख सकते हैं। इसमें लेखक का उद्देश्य यह है कि जब न्याय करने के लिए किसी व्यक्ति को पंच परमेश्वर मनोनीत किया जाता है, तो यह व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को भूल जाता है और उसकी वाणी में ईश्वर का वास होता है। कहानीकार ने इसी तथ्य को दर्शाने के लिए 'पंच परमेश्वर' शीर्षक मनोरंजक कहानी की रचना की है।

कहानी का मूल उद्देश्य इस तथ्य का प्रतिपादन करना है की पंच में परमेश्वर का वास होता है और पंच की वाणी परमेश्वर की वाणी होता है। कहानी में जुम्मन शेख और अलगू चौधरी, जो एक-दूसरे के मित्र है, एक-दूसरे के अलग-अलग झगड़े में पंचायत करने के लिए चुने जाते है। दोनों पारस्परिक मित्रता का नाता भूलकर वही फ़ैसला करते है जो न्यायपूर्ण होता है। इस तरह प्रेमचंद्र ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है की पंच का आसन परमेश्वर का आसन होता है। इस आसन पर बैठकर कोई धर्म-विरुद्ध बात नहीं बोल पाता है। इस प्रकार न्याय-पालन के रूप में पंच के पद को परमेश्वर के पदस्वरूप दर्शाने वाली इस कहानी का शीर्षक 'पंच परमेश्वर' रखा जाना युक्तिसंगत और सार्थक है।

प्रेमचंद्र की कहानी 'पंच परमेश्वर' को पढ़ने से पंच-पद के प्रति आस्था और विश्वास के भाव उत्पन्न होते है। मन में यह विचार आता है की पंच का पद बड़े उत्तरदायित्व का पद होता है। पंच बन जाने पर हमें धर्म और न्याय की पूरी ईमानदारी से रक्षा करनी चाहिए। पंच-पद पर आसीन होकर गलत और अनुचित बात बोलना धर्म-विरुद्ध है क्योंकि निष्पक्ष और पूर्वाग्रहमुक्त होकर फैसला करना ही पंच का धर्म और कर्म है। जब तक खालाजान ने अपनी जायदाद जुम्मन शेख के नाम दर्ज नहीं कराई थी, तबतक जुम्मन उनकी खूब आवभगत करते रहे। परन्तु, जब खालाजान अपनी संपत्ति जुम्मन के नाम लिख चुकी, तब जुम्मन और उसकी पत्नी खालाजान के साथ दुर्व्यवहार करने लगे। अब खालाजान को फकेकशी तक की नौबत आ गयी। ऊपर से डाँट-फटकार भी मिलने लगी। खालाजान के लिए यह सब सहना मुश्किल हो गया था। ऊबकर उन्होंने पंचायत बुलाई ताकि उनके साथ न्याय हो सके।

बुढ़िया यह जानती थी की अलगू, जुम्मन का परम मित्र है, उसके मन में यह विश्वास भी अवश्य था की पंच के पद पर आसीन होकर अलगू गलत बात नहीं बोल सकेगा, बिगाड़ के डर से ईमान की बात करने में नहीं चुकेगा। अतः पंच-पद की गरिमा को समझते हुए उसने सरल मन से फैसले का भार अलगू को ही सौंप दिया। जुम्मन शेख, अलगू द्वारा दिए गए फैसला सुनकर अवाक् रह गया। उसे कतई विश्वास न था की अलगू उसके विपक्ष में फैसला करेगा। उसे अलगू से यह उम्मीद थी की मित्र होने के नाते अलगू उसका पक्ष लेगा, पर उसकी आशा पूरी नहीं हुई। वह अलगू के प्रति प्रतिशोध भाव से भर उठा।

यद्यपि जुम्मन शेख को अलगू चौधरी से बदला लेने का मौका मिला, फिर भी जुम्मन शेख ऐसा नहीं कर सका। सरपंच के पद पर आसीन होते ही उसका धर्म-ज्ञान जाग उठा। उसे पंच-पद के उत्तरदायित्व का ज्ञान हो आया। पंच-पद पर बैठते ही अलगू के प्रति उसका प्रतिशोध भाव ठंडा पड़ गया था। अतः उसने सच्चाई के पक्ष में फैसला किया।

प्रेमचंद्र जी को मानव प्रकृति की सद्‌वृत्तियों पर दृढ़ विश्वास है। इस कहानी में कहानीकार की यह शिक्षा है की मनुष्य मूलतः अच्छा होता है। परिस्थितियों के कारण मनुष्य कुवृत्तियों के फेर में पड जाता है। किन्तु ज्यों ही परिस्थितियाँ अनुकूल होती है त्यों ही उसकी आँखों से आवरण हट जाता है और वह अपनी मूल प्रकृति के अनुसार अच्छे आचरण करने लगता है। इस कहानी में कहानीकार ने यह बताया है की अनुकूल परिस्थितियों के आने से मनुष्य का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह अपनी कुवृत्तियों का त्याग करके सद्‌वृत्तियों की ओर अग्रसर होता है। इस कहानी में प्रेमचंद ने आशा और विश्वास का भी सन्देश दिया है। यदि मनुष्य में बुराई आ गयी है, यदि ग्रामीण जीवन दूषित हो गया है तो निराश होने का कोई कारण नहीं है, प्रयास करने पर ग्रामीण जीवन को फिर सुखी बनाया जा सकता है और हृदय-परिवर्तन के द्वारा मनुष्य के समस्त दोषों को दूर करना संभव है।

मुख्य पात्रः

यह कहानी प्रेमचंद की पहली कहानी है। 'पंच परमेश्वर' ग्रामीण जीवन के छल-प्रपंचों, दोस्ती, भाईचारा, न्याय-अन्याय के चक्र को परिभाषित करती हुई एक सजीव कहानी है।

पंचपरमेश्वर में हृदय परिवर्तन का दृश्य विधान है, लेकिन इस विधान की खूबी यह है कि अपने चरित्रों के हृदय परिवर्तन के लिए वे कोई अस्वाभाविक परिस्थितियों का या घटनाओं का निर्माण नहीं करते। ध्यान से देखा जाए तो दोनों मुख्य पात्र अपनी प्रकृति में सामान्य मनुष्य है और दुष्ट या क्रूर नहीं है।

जुम्मन

जुम्मन अपनी विधवा खाला के वारिस हो गए हैं और उन्होंने खाला से उनकी संपत्ति के दान पत्र की रजिस्ट्री अपने नाम करवा ली है। रजिस्ट्री के बाद उनकी पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गए बल्कि पहले एक पंक्ति में प्रेमचन्द बता चुके हैं कि जुम्मन ने लंबे चौड़े वादे करके वह मिल्कियत अपने नाम लिखवा ली थी। फिर जब खाला पंचायत करने की धमकी देती है तब फिर जुम्मन का रूप देखिए, जुम्मन हंसे, जिसतरह कोई शिकारी हिरण को जाली की तरफ जाते देख कर मन ही मन हँसता है। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पंचायत हुई भी तो फैसला उनके पक्ष में ही होगा। आखिर पंचायत में उन्हें बयान देना पड़ा जिसमें वे बोले, पंचों, 3 साल हुए खालाजान ने अपनी जायदाद मेरे नाम हिब्बा कर दी थी। मैंने उन्हें खाना कपड़ा देना कबूल किया था। खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाजान को कोई तकलीफ नहीं दी। मैं उन्हें अपनी माँ के समान समझता हूँ। उनकी खिदमत करना मेरा फर्ज है,मगर औरतो में ज़रा अनबन दिखती है, उसमें मेरा क्या बस है? खालाजान मुझसे माहवार खर्च अलग माँगती है। जायदाद जितनी है वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफा नहीं होता है कि माहवार खर्च दे सकूँ। इसके अलावा हिब्बा नाम में माहवार खर्च का कोई ज़िक्र नहीं। नहीं तो मैं भूलकर भी इस झमेले में न पड़ता। बस, मुझे यही कहना है। आइंदा पंचों का अख्तियार है, जो फैसला चाहें, करें। पंचायत जुम्मन के खिलाफ़ फैसला देती है जिसमें मुख्य भूमिका अलगू चौधरी की है। यहाँ से जुम्मन और अलगू के मध्य कड़वाहट और दूरी पैदा हो जाती है। प्रेमचंद ने लिखा है, जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खड़का करती थी। उसे हर घड़ी यहीं चिंता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले। जब खाला ने अलगू को अपना पंच चुना था तब जुम्मन ने मान लिया था कि पुरानी दोस्ती को निभाने में अलगू उसके खिलाफ़ फैसला नहीं देंगे और वे विजयी होंगे लेकिन अलगू ने उनकी आशा के विपरीत फैसला लिया जिससे दोस्ती में दरार आ गई। कहानी के अंत में जुम्मन का हृदय परिवर्तन हो जाता है जब ठीक इसी तरह के एक अन्य मामले में उन्हें अलगू चौधरी के विरुद्ध पंच बनने का अवसर मिलता है तब उसके आचरण की परीक्षा होती है। प्रेमचंद ने इस मनोविज्ञान को समझाने के लिए खासी भूमिका तैयार की है- अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा

हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूलकर भड़कने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ -प्रदर्शक बन जाता है। पत्र संपादक अपने शांति कूटी में बैठा हुआ कितने दृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है परंतु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्यायपरायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। नव युवक युवावस्था में कितना उद्दंड रहता है। माता पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल कलंक समझते हैं परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील कैसा शांतचित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है। यहाँ भी जुम्मन पर जब पंच का दायित्व आया तो उसके मन में कैसी हलचल हुई, जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा, मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मेरा सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं। आखिर उन्होंने पंच के रूप में ऐसा फैसला सुनाया जिसे न्यायोजित कहना होगा। आगे प्रेमचंद ने लिखा है, थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले-भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त है न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की ज़बान से खुदा बोलता है। यह सुनकर अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

अलगू

कहानी के दूसरे पात्र हैं अलगू। उसके बारे में प्रेमचंद ने लिखा है कि उन्हें विद्या ना आई। दोनों जुम्मन के पिता जुमराती के शिष्य थे। यद्यपि अलगू का मान उनके धन के कारण था तो जुम्मन शेख अपनी अनमोल विद्या के कारण सबके आदरपात्र बने थे। अलगू ठेठ भारतीय ढंग के मनुष्य है जो किसी पचड़े में पड़ना नहीं चाहते थे। जब खाला न्याय की आशा में उनके पास गई तो उन्होंने साफ साफ कहा, यो आने को आ जाऊंगा; मगर पंचायत में मूँह न खोलूँगा खाला के पूछने पर वह साफ-साफ कह देता हैं, जुम्मन मेरा पुराना मित्र हैं। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता। असल में अलगू की समझ यही है कि ये एक गांव में रहने वाले और बचपन के मित्र जुम्मन से दुश्मनी उचित नहीं। फिर दोनों का साझा भी है और एक दूसरे पर भरोसा भी। कहीं न कहीं अलगू को जुम्मन के कानूनी ज्ञान का भी डर था कि वह इस ज्ञान से कभी उनका अहित न कर दें। यही कारण है कि जब समझू ने जुम्मन को अपना पंच चुना तो अलगू का कलेजा धक धक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। लेकिन जब खाला ने उसे ललकार दिया और यह कहा कि, "क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?" तो वह पंच बनने से इनकार नहीं कर सका। प्रेमचंद ने लिखा है हमारे सोये हुए धर्म ज्ञान की सारी सम्पत्ति लूट जाए तो उसे खबर नहीं होता परन्तु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है। फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू इस सवाल का कोई उत्तर न दे सका, लेकिन उसके हृदय में ये शब्द गूंज रहे थे- क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे? अंत में अलगू को न सिर्फ पंचायत में आना पड़ा बल्कि खाला का पंच भी बनना पड़ा तथा जुम्मन के विरुद्ध फैसला भी सुनाना पड़ा। कहानी के अंत में अलगू की आंखो से छलके आंसू उसकी निश्चलता का प्रमाण है। दोनों पात्र परिस्थितिजन्य यथार्थ के समक्ष वही आचरण करते हैं जो उन्हें संगत लगता है।

3.3.2 ईदगाह

सारांश

प्रेमचंद की लिखी कहानी है 'ईदगाह'। प्रेमचंद आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार हैं। हामिद चार-पाँच साल का दुबला-पतला, भोला-भाला लडका है। उसके माँ-बाप चल बसे हैं, वह अपनी बूढी दादी अमीना की परवरिश में रहता है। उससे कहा गया है कि उसके माँ-बाप उसके लिए बहुत अच्छी चीज़ें लायेंगे। हामिद एकदम अच्छा और आशावान लडका है। उसके पैरों में जूते तक नहीं है। आज ईद का दिन है। सारी प्रकृति सुखदायी और मनोहर है। महमूद, मोहसिन, नूरे, सम्मी हामिद के दोस्त हैं। सब बच्चे अपने पिता के साथ ईदगाह जानेवाले

हैं। आमीना डर रही है कि अकेले हामिद को कैसे भेजे? हामिद के धीरज बँधाने पर वह हामिद को भेजने राजी होती है। जाते वक्त हामिद को तीन पैसे देती है। सब तीन कोस की दूरी पर ही स्थित ईदगाह पैदल जाते हैं। वहाँ नमाज़ के समाप्त होते ही सब बच्चे अपने मनपसंद खिलौने और मिठाइयाँ खरीदकर खुश होते हैं। हामिद तो खिलौनों को ललचायी आँखों से देखता है, पर चुप रहता है। लोहे की दुकान में अनेक चीजों के साथ चिमटे भी रखे हुए हैं, चिमटे को देखकर हामिद को ख्याल आता है कि बूढी दादी अमीना के पास चिमटा नहीं है। इसलिए तवे से रोटियाँ उतारते समय उसके हाथ जल जाते हैं। चिमट ा ले जाकर दादी को देगा तो वह बहुत प्रसन्न होगी और उसकी उंगलियाँ भी नहीं जलेंगी। ऐसा सोचकर दुकानदार को तीन पैसे देकर वह चिमटा खरीदता है। सब दोस्त उसका मज़ाक उडाते हैं। हामिद तो इसकी परवाह नहीं करता। घर लौटकर दादी को चिमटा देते हैं तो पहले वह नाराज़ होती है। मगर हामिद के तुम्हारी उंगलियाँ तवे से जल जाती थीं। इसलिए मैं इसे खरीद लाया कहने पर उसका क्रोध तुरंत स्नेह में बदल जाता है। हामिद के दिल के त्याग, सद्भाव और विवेक गुण से उसका मन गद्गद् हो जाता है। हामिद को अनेक दुआएँ देती है और खुशी के आँसू बहाने लगती है।

मुख्य पात्र

हामिद

कहानी का मुख्य पात्र हैं हामिद जो अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। हामिद के चरित्र के माध्यम से अभावग्रस्त जीवन के कारण बच्चे का समय से पहले समझदार होना और इच्छाओं का दमन करना दर्शाया गया है। किस प्रकार हामिद परिस्थितियों से समझौता करना सीख जाता है। कहानिकार ने इस कहानी के माध्यम से व्यक्त किया है।

अमीना

कहानी का दूसरा मुख्य पात्र हैं 'अमीना', जो अपने पुत्र तथा पुत्रवधू की मृत्यु के बाद अपने पोते हामिद का पालन पोषण कर रही हैं। वह लोगों के कपड़े सिलकर तथा दूसरे छोटे मोटे काम करके अपना और अपने पोते का गुज़ारा कर रही है। अपनी पोते को सभी सुख साधन न दे पाने की उसकी लाचारी पाठकों के हृदय को द्रवित कर देती है। कहानी के अंत में हामिद और अमीना का भावपूर्ण दृश्य कहानी को नए आयाम प्रदान करते हैं।

इसके अलावा कहानी में मोहसिन, सम्मी, महमूद, नूरे आदि पात्र हैं। यह सब गौण पात्र हैं फिर भी कहानी को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने में इनके महत्वपूर्ण योगदान है।

3.3.3 शतरंज के खिलाड़ी

शतरंज के खिलाड़ी - सारांश

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का संबंध वाजिदअली शाह के राज्यच्युत्त होने से है। लार्ड डलहौजी ने देशी राज्यों को हड़प कर अंग्रेजी राज्य में मिला लेने की नीति के अनुसार 13 फरवरी, 1856 को अवध को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। अवध के अंतिम नवाब वाजिदअली शाह को पकड़ कर कलकत्ता भेज दिया। अंग्रेज सेना ने जब लखनऊ पर अधिकार किया तब उसका कोई विरोध नहीं हुआ। प्रेमचंद ने अपनी कहानी में इस प्रश्न का उत्तर दिया है कि ऐसा क्यों हुआ? प्रेमचंद के अनुसार इसके कारण थे अमीरों की विलासिता, राजनैतिक भावों का अधःपतन एवं जनसाधारण का अमीरों-शासकों के द्वारा लूटा जाना और अराजकता की स्थिति। लखनऊ की विलासिता का चित्र कहानी के प्रारंभ में ही दिया गया है- 'वाजिदअली शाह का ज़माना था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। कहीं शतरंज का संग्राम छिड़ा हुआ है। राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे। यहाँ तक कि फकीरों को पैसे मिलते तो वे रोटियाँ न लेकर अफीम खाते या मदक पीते।... प्रेमचंद के द्वारा प्रस्तुत विलासिता का यह चित्र उनकी कल्पना से प्रसूत नहीं है; बल्कि उस समय के ऐतिहासिक प्रमाणों से पुष्ट है। विलासिता के साधन जुटाने के लिए जनसाधारण को खूब लूटा-खसोटा और मारा-पीटा जाता था। विलासिता के चित्र को कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत की है।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी को तत्कालीन ऐतिहासिक प्रमाणों की दृष्टि में रखकर पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने मिरजा साहब और मीर साहब के शतरंज खेलने और उसके पीछे मर जाने की घटना की चाहे कल्पना कर ली हो, लेकिन उस पृष्ठभूमि और वातावरण को प्रामाणिक इतिहास से लिया है जिसमें इस घटना को प्रस्तुत किया है। इस घटना को प्रस्तुत करने में लेखक ने यथार्थवादी दृष्टि को अपनाया है; किंतु इसके पीछे राष्ट्रीयता की भावना

भी प्रेरणा के रूप में काम कर रही थी- यह इस कहानी से बराबर ध्वनित होता है। प्रेमचन्द ने जिस उद्देश्य से यह कहानी लिखी है, उसे बड़ी कलात्मकता और सफलता के साथ पूरा किया है। इस कहानी में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विवरण, वर्णन, घटना-विन्यास और संवादों का बड़ा कुशल उपयोग किया गया है। कहानी के प्रारम्भ में विलासिता का चित्रण करने के लिए जो ब्योरे दिए हैं, वे पूरी कहानी के संदर्भ में बहुत सार्थक हैं। ये ब्योरे पूरी कहानी के लिए न केवल उपयुक्त वातावरण का निर्माण करते हैं बल्कि मिरजा और मीर के शतरंज के नशे की व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में प्रेमचंद की कला इतनी निखरी हुई है कि वे स्थिति, व्यक्ति, घटना आदि का जो संक्षिप्त-सा वर्णन प्रस्तुत करते हैं वह अनायास ही सांकेतिक हो उठता है। कहानी के चौथे खण्ड की ये प्रारंभिक पंक्तियाँ उदाहरण के रूप में नहीं, मन की भी होती है।

इस कहानी में प्रेमचंद ने जिस कुशलता से घटनाओं का विन्यास किया है उसी कुशलता के साथ संवादों का उपयोग भी किया है। इस कहानी में संवादों का परिमाण बहुत है, और वे संवाद कहानी के केंद्रीय वक्तव्य को आगे बढ़ाते हैं, उसे प्रखर बनाते हैं। मिरजा और मीर की मूल प्रेरक शक्ति शतरंज का खेल है। इसलिए शतरंज की किसी बाजी में उनकी क्या स्थिति है, इससे उनका आचरण निर्धारित होता है। यह बात और उनके शतरंज के नशे की अभिव्यक्ति संवादों में कितनी कुशलता के साथ की गई है, यह बात संवादों पर थोड़ा ठहर कर विचार करने से स्पष्ट हो जाएगी।

मुख्य पात्र

इसमें दो मुख्य पात्र हैं- मिर्जा और मीर। इन दो पात्रों को एक विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए गढा गया है, एक पतनशील समाज में शतरंज के दो खिलाड़ियों को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि शतरंज से जुड़ी उनकी मानसिकता और गतिविधियों की तो तस्वीर उभरे ही, साथ ही उनके माध्यम से पतनशील समाज के व्यक्तियों की भी तस्वीर उभरे। वे दोनों पात्र परिवार या समाज की किसी समस्या से नहीं टकराते और टकराहट से उत्पन्न होने वाले मानसिक ऊहा-पोह से नहीं गुज़रते केवल शतरंज खेलते हैं इसलिए इनके चरित्र के कुछ निजी और विशिष्ट पहलू नहीं उभरते। वे दोनों उच्च वर्ग और ऊंची हैसियत के हैं और दोनों शतरंज खेलते हुए शतरंज बोली बोलते हैं। दोनों शह और मात के बारे में सोचते हैं। जब मीर की बाजी कमजोर पड़ती है तब वे समाज की ओर देखते हैं और मिर्जा उन्हें बाजी की ओर घसीटते हैं और जब मिर्जा की बाजी कमजोर पड़ती है तब उन्हें समाज की चिंता हो उड़ती है और मीर उन्हें खेल की तरफ घसीटते हैं। जीत की मानसिकता में कभी एक गुनगुनाता है कभी दूसरा। कभी एक झल्लाते है कभी दूसरा और दोनों चरमसीमा पर पहुँच कर जान दे देते हैं। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि ये दोनों ऐसे वर्गीय पात्र हैं जो एक विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए रखे गए हैं। उनके चरित्र का वैशिष्ट्य को उभारना लेखक का उद्देश्य नहीं है। इनकी अपेक्षा इनकी पत्नियों की चरित्र की निजी विशेषताएँ ज्यादा उभरी है। मिर्जा की बीवी शतरंज का विरोध करती है क्योंकि वह इस मनहूस खेल के मारे मिर्जा का सहचर्य नहीं प्राप्त कर पाती है। “यहाँ तक कि मिर्जा की बेगम साहिबा को इससे इतना द्वेष था कि अक्सर खोज खोजकर पति को लताड़ती थी। पर उन्हें इसका अवसर मुश्किल से मिलता था। वह सोती ही रहती थी, तब तक उधर बाज़ी बिछ जाती थी, और रात को जब सो जाती थी तब कही, मिर्जा जी घर में आते थे। नौकरों पर वह अपना गुस्सा उतारती थी- क्या पान मांगे हैं। कह दो, आकर ले जाएँ। खाने की फुर्सत नहीं है? ले जा कर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहें कुत्ते को खिलाएँ।” दूसरी ओर मीर की बेगम व्यक्तिगत कारणों से मीर को शतरंज खेलने के लिए उत्साहित करती है लेकिन अपने घर में नहीं, बाहर। वह मिर्जा की बेगम के विपरीत इधर मीर के सहचर्य से बचना चाहती है- “मीर साहब की बेगम किसी अज्ञात कारण से मीर साहब का घर से दूर रहना ही उचित समझती थी। इसलिए वह उनके शतरंज प्रेम की कभी आलोचना न करती, बल्कि कभी कभी मीर साहब को देर हो जाती तो याद दिला देती थी।” यहाँ प्रेमचंद ने मिर्जा और मीर के बीच चरित्र वैशिष्ट्य की रेखा भले न खींची हो लेकिन उन दोनों को शतरंज के खिलाड़ियों की भूमिका में पूरी तरह उतारा है।

प्रेमचन्द ने जिस उद्देश्य से यह कहानी लिखी है, उसे बड़ी कलात्मकता और सफलता के साथ पूरा किया है। इस कहानी में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विवरण, वर्णन, घटना-विन्यास और संवादों का बड़ा कुशल उपयोग किया गया है। कहानी के प्रारम्भ में विलासिता का चित्रण करने

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

के लिए जो ब्योरे दिए हैं, वे पूरी कहानी के संदर्भ में बहुत सार्थक हैं। ये ब्योरे पूरी कहानी के लिए न केवल उपयुक्त वातावरण का निर्माण करते हैं बल्कि मिरजा और मीर के शतरंज के नशे की व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में प्रेमचंद की कला इतनी निखरी हुई है कि वे स्थिति, व्यक्ति, घटना आदि का जो संक्षिप्त-सा वर्णन प्रस्तुत करते हैं वह अनायास ही सांकेतिक हो उठता है।

3.3.4 ठाकुर का कुआं

'ठाकुर का कुआँ'- सारांश

'ठाकुर का कुआँ' शीर्षक कहानी प्रेमचन्द की 'अस्पृश्यता' या छुआछूत को लेकर लिखी गयी छोटी कहानी है। हमारे हिन्दू समाज में हरिजनों की जो दुर्दशा होती है, उन्हें जितना नीच समझा जाता है, उसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत करना ही इसका एकमात्र उद्देश्य है। समाज में हरिजनों को अभी तक उचित स्थान नहीं मिल सका है, उनके साथ मानवीय व्यवहार हमारे समाज के सवर्ण लोग नहीं करते, ऊंच-नीच का भेद आज भी कायम है जिससे हरिजनों का जीवन अब भी विषादपूर्ण ही बना हुआ है। इस स्थिति की ओर ही प्रेमचंद जी ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है और संकेत दिया है कि इस स्थिति में परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रकार उसमें आदर्श सांकेतिक रूप में ही व्यक्त हुआ है।

प्रेमचन्द जी की यह कहानी उनकी गांधीवादी विचारधारा को व्यक्त करती है और सामाजिक सुधार की प्रेरणा देती है। इस कहानी में वातावरण पूर्णतः ग्रामीण है और पात्र अशिक्षित तथा पुरातन रूढ़ियों के पंजे में फंसे हुए हैं। इसमें सामयिक जन-जीवन की एक विषम समस्या को बड़ी सादगी से प्रस्तुत किया गया है। परन्तु पाठक के मानस पर इसका अमिट प्रभाव पड़ता है। सारा चित्रण इतना स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी है कि पाठक के अन्तःकरण में यह बात घर कर जाती है कि हरिजनों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार का अन्त होना आवश्यक है, अन्यथा हमारा समाज दुर्बल ही बना रहेगा। पाठक के मन में एक विशेष प्रकार की करुण भावना उत्पन्न हो जाती है और वह मानवता के आदर्श को मानने-अपनाने के लिए उत्प्रेरित हो जाता है। यही इस कहानी की सफलता और सबसे बड़ी विशेषता है।

वस्तुतः 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में लेखक ने ग्रामीण दलितों के संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। मानव को जीने के लिए हवा, पानी और अन्न की जरूरत होती है। उसमें से एक भी चीज़ की आवश्यकता पूरी नहीं हुई कि उनकी मौत हुई नहीं। इस कहानी के जोखू को पानी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कहानी का पात्र जोखू बीमार है। वह पत्नी से पानी माँगता है। वह जो पानी लाती है उसमें सड़ागंध आ रही है, शायद कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा। अब गाँव में एक ही कुआँ है और वह ऊँची जात के ठाकुर का है, और नीच जात के ये दम्पति उससे पानी ले नहीं सकते। लेकिन गंगी साहस करती है और अंधेरे में छिपकर कुएँ तक जाती है। कुआँ ठाकुर के घर के सामने था। जब ठाकुर के घर से अतिथि लोग चले जाते हैं और उस समय घर के दरवाजे बन्द हो जाते हैं, तब यह औरत दबे पाँव कुएँ तक जाती है। और अपनी बाल्टी कुएँ में डालना शुरू करती है। उसके बाल्टी खींचने तक सबकुछ ठीक था। मगर जैसे ठाकुर के घर का दरवाजा खुलता है तब गंगी के हाथ में से रस्सी छूट जाती है। गंगी बाल्टी छोड़कर अपनी जान बचाकर भागती है। दूसरी ओर उनका पति गंदा पानी पी रहा था। इस प्रकार ग्रामीण दलितों को पानी के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। इस कहानी में दलितों के दर्द का यथार्थ चित्रण है।

इसकी भाषा-शैली भी सर्वथा भावानुकूल, स्वाभाविक, सरल और प्रवाहपूर्ण है। उसमें आदि से अन्त तक रोचकता और चित्रमयता है। शब्द-चयन एवं वाक्य-विन्यास प्रभावोत्पादक है। छोटे, हल्के तद्भव शब्द जो बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं, उन्हीं को ग्रहण किया गया है, जो तत्सम शब्द इसमें हैं, इने-गिने ही हैं और वे भी अत्यंत सरल हैं। वाक्य छोटे-छोटे, सुगठित और संक्षिप्त हैं तथा घटना, वातावरण और पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट करने में भाषा-शैली पूर्णतः सफल और सक्षम है। इस कहानी की स्वाभाविकता, सरलता, संक्षिप्तता और सामयिकता- ये चार प्रमुख विशेषताएँ हैं जिनके कारण यह कहानी बहुत लोकप्रिय है और लघुमाध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में इसे सदैव स्थान मिलता है। यह वास्तव में प्रेमचन्द जी की एक प्रतिनिधि छोटी कहानी है। इसका शीर्षक 'ठाकुर का कुआँ' बड़ा ही उपयुक्त और सार्थक है। इसमें गाँव के धनी ठाकुर के काइयाँपन और गरीब तथा कमज़ोर हरिजनों पर उसके द्वारा किये गये निर्दय और अनुचित व्यवहार, यहाँ तक कि हरिजनों के लिए उसके कुएँ से पानी लेने तक की मनाही की झाँकी प्रस्तुत की

गयी है। ठाकुर के मिथ्या बड़प्पन के साथ ही अन्य सवर्ण-ब्राह्मण तथा वैश्य के भी भ्रष्टाचार, दुराचार और अनाचार की स्पष्ट झलक अत्यन्त संक्षेप में दिखाई गयी है।

सवर्णों के झूठे एवं बनावटी बड़प्पन की इसमें ज़बर्दस्त चुटकी ली गयी है और उनके अत्याचारपूर्ण घृणित व्यवहार का पर्दाफाश कर दिया गया है जिससे कहानी अत्यन्त सशक्त हो गयी है ओर पाठक के मानस को पूर्णतः अभिभूत कर लेती है। पाठक मात्र शीर्षक देखकर ही अनुमान लगा लेता है कि इसमें कोई सामाजिक समस्या है और उसकी जिज्ञासा बढ़ जाती है तथा वह रुचिपूर्वक इसे अवश्य पढ़ता है। इससे इसका शीर्षक उचित एवं सटीक ही प्रतीत होता है।

ठाकुर का कुआं के मुख्यपात्र

जोखू और गंगी अछूत है, इसलिए उन्हें सवर्णों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं। अछूत जीवन की मूलभूत जरूरतों के लिए सवर्ण या तथाकथित उच्च मानी गई जातियों पर निर्भर है। सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जगहों में उनकी उपस्थिति निषेधाई मानी गई तथा संपत्ति प्राप्त करने व रखने के भी ये अधिकारी नहीं। आर्थिक उत्पादन की संपूर्ण व्यवस्था में इनकी भागीदारी केवल बकारी करने वाले मजदूर मात्र की है। उत्पादन के साधनों पर अधिकार के अभाव में अछूत गरीबी की दयनीय स्थिति में पानी, अन्न से वंचित जीवन जीने के लिए बाध्य है। गंगी और जोखू के कथन में उनकी इस स्थिति की वास्तविकता चित्रित हुई है। जाति के श्रेष्ठ और कनिष्ठ होने के आधार पर, सामाजिक सम्मान या अपमान, आर्थिक संपन्नता या अभाव, धार्मिक अधिकार या वंचना, राजनीतिक सत्ता अथवा गुलामी, मानव अधिकारों की प्राप्ति या वंचित होना निश्चित है। अछूत जोखू को पीने का पानी हासिल न होना तथा पानी की तलाश में गंगी का भयग्रस्त, शंकित, अपमानित स्थिति से गुज़रना दलित जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्ति देता है। ठाकुर के कुएँ से दो सवर्ण महिलाओं का बेहिचक, अधिकार पूर्ण विश्वास के साथ चढ़कर पानी भरना, और गंगी का पेड़ों की ओट में छिपकर ठाकुर के कुएँ पर चढ़कर पानी लेने के लिए घंटों इंतजार करना। अछूतों की सामाजिक स्थिति को स्पष्टतः बयान करता है। जातिप्रथा का उल्लंघन करने पर एक अछूत को मिलने वाले दंड की गंगी को जानकारी है। हाथ-पांव तोड़ने से लेकर मृत्युदंड तक की सज़ा मिल सकती है। उसका यह अपराध दंडनीय है, जबकि पंडित का अपने घर को जुआं घर बनाने, ठाकुर द्वारा गरीब की भेड़ चुराकर खा जाने और साहू द्वारा घी में तेल की मिलावट करने जैसे अपराधों को अपराध नहीं माना जाता। बल्कि सवर्ण जातियों को जाति श्रेष्ठत्व के ऐवज में मिले अधिकारों के रूप में मान्यता ही मिली है। यह एक ऐसे समाज का यथार्थ चित्र है, जिसमें इंसान अंधेरे विवर में ढकेल दिया गया है, जहाँ से ऊपर उठने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता। प्रेमचंदकालीन अस्पृश्यता की समस्या को चौवन वर्षों की आज़ादी नष्ट नहीं कर पाई है। आज भी अछूत अस्पृश्यता के कारण अपमानबोध से ग्रसित हैं। गरीबी की स्थिति में अभावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश है। पानी के स्रोत अभी भी इनके छूने से अपवित्र होते हैं, यह तथाकथित उच्च वर्ग की मानसिकता में जस का तस बैठा हुआ है। चार वर्ष की अछूत धनम की आंख आज भी, उसी के गुरु द्वारा फोड़ दी जाती है, जब अछूत बालिका प्यास बुझाने के लिए सवर्णों के लिए रखे गए मटके से पानी पीना चाहती है।

3.3.5 'कफन'

'कफन' -सारांश

'कफन' हिन्दी साहित्य की ही नहीं, बल्कि विश्व की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी में भारत के निम्न वर्गीय समाज की यथार्थ स्थिति का चित्रण मिलता है। बाप-बेटा घीसू और माधव आलसी, कामचोर और चोर हैं। कुछ ही समय पहले माधव की शादी बुधिया से हुई थी। आज बुधिया प्रसव पीड़ा से झोपड़ी में पछाड़ खा रही है, चीखती है, चिल्लाती है फिर भी माधव उठकर उसे देखने नहीं जाता। क्योंकि उसे अपने बाप पर भरोसा नहीं था। उसे डर था कि वह अंदर देखने जायेगा तो घीसू सभी आलू खा जायेगा। माधव का ब्याह एक साल पहले ही हुआ था। बुधिया सुबह होते-होते मर जाती है। दूसरों को सुनाने के लिए माधव और घीसू ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते हैं। फलतः कुछ लोग कफन तथा लकड़ी के लिए पैसे दे देते हैं। बाप-बेटा दोनों कफन खरीदने बाज़ार जाते हैं। पर कफन के लिए इकट्ठे किए रुपयों से वे शराब पीते हैं और वे तली हुई मछली, कलेजी खरीदते हैं। बचे हुए भोजन को भिखारी को देकर दान करने का पहला अनुभव का आनंद लेते हैं। कहानी का अंत बाप बेटे के नशे में उछलने, कूदने, गाना गाने से होता है। प्रेमचंद ने इस कहानी में यह बताने की कोशिश की है कि पेट की

आग की सामने मानवीय संवेदना शून्य हैं।

मुख्य पात्र

घीसू और माधव

कफ़न कहानी के मुख्य कथा पात्र हैं घीसू और माधव। वे दोनों नर श्रमिक वर्ग से संबंधित है, साथ ही दोनों कामचोर और बदनाम है। कोई इन्हें काम करने के लिए नहीं बुलाता अगर बुलाए तो, आधा घंटा काम करेंगे और एक घंटा चिलम पीएँगे। एक दिन काम करते हैं तो तीन दिन आराम। बुरी आदत के कारण ये मजदूरी नहीं पाते। आर्थिक समस्या ने दोनों को निर्दयी, कठोर, हृदयहीन बना दिया है। जब बुधिया प्रसव वेदना से तड़प तड़पकर प्राण छोड़ देती है तब वे दोनों अलाव पर बैठे बैठे चोरी के भुने आलु खाने में मग्न है। ये दोनों उसकी चीख सुनते हैं लेकिन दोनों पास नहीं जाते। आखिर वह मर जाती है। इसके जरिए संवेदनशील मनुष्य के दिल को इस समाज की आर्थिक संरचना पर सोचने के लिए बाध्य कर देती है।

बुधिया

कहानी के मुख्य पात्र है बुधिया। बुधिया माधव की पत्नी थी। वह बहुत अच्छे स्वभाव की थी। उसने घर को बहुत अच्छे से संभाल कर रखा था। वह दूसरों के घरों में जाकर मेहनत करती थी। इसके कारण ही माधव का पेट भरता था। लेकिन माधव बुधिया का कोई ध्यान नहीं रखता। जब वह प्रसव पीड़ा से तड़प रही थी तब उसे कोई देखने नहीं आया इसी कारण बुधिया की मृत्यु हो जाती है।

- कफ़न प्रेमचंद की आधुनिकता बोध की पहली कहानी है।
- इस कहानी का संबंध ग्रामीण जीवन से है और इसमें चमारों के रहन सहन पर विचार किया गया है।
- सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह की भावना।
- कफन का आधार मनोवैज्ञानिक है। मनोवैज्ञानिक यथार्थ की रचना होने के कारण इसका उद्देश्य है शोषण और गरीबी से उत्पन्न अकर्मण्यता और लापरवाही-उपजीविका का सच्चा चित्रण करना।
- समाज में व्याप्त शोषण व्यवस्था व उनके दुष्परिणामों की अभिव्यक्ति है।
- लेखक ने यहाँ किसानों और मज़दूरों में चेतना जगाने का प्रयास किया है।
- आर्थिक शोषण के विरुद्ध क्रांति भावना भरना।
- प्रेमचंद ने अपने पात्रों के मनोभावों का चित्रण नाटकीय एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर किया है।
- पूँजीवादी शोषण के नीचे दबे मनुष्य किस प्रकार अमानवीय हो जाता है। यही प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द्र ने बताना चाहा है।
- यह कहानी आदर्श और यथार्थ से आगे बढ़कर यथास्थिति के बरक्स एक नये समाज की संरचना के सूत्र भी देती है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में एक विशद फलक पर समाज को उसकी सम्पूर्ण वास्तविकताओं के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उच्च वर्ग और मध्य वर्ग की जिन्दगी में, भी वे गहरे उतरे हैं और घर-परिवार से लेकर बृहत्तर सामाजिक जीवन की समस्याओं से भी वे टकराए हैं। हिन्दू घर परिवारों में ही नहीं, वे मुसलमानों के घर-परिवारों में भी समान अधिकार के साथ गये हैं और उनके जीवन संदर्भों को भी उन्होंने समान चिंता के साथ उभारा है। 'ईदगाह' जैसी कहानी वही लेखक लिख सकता है, जो वर्ग, वर्ण, धर्म, जाति, संप्रदाय की भेदभाव मूलक मानसिकता से हटकर आदमी को आदमी के रूप में देखे, प्रेमचन्द की मानसिकता यही थी।

मनोविज्ञान पर आधारित 'मुंशी प्रेमचंद' द्वारा लिखी गई "ईदगाह" कहानी एक अप्रतिम कहानी है। यह बाल मनोविज्ञान को गहनता से दर्शाती है। इस कहानी को पढ़कर मालूम होता है कि परिस्थितियाँ उम्र नहीं देखती और एक छोटा सा बालक भी विषम परिस्थितियों में समय से पहले परिपक्व हो जाता है। शतरंज के खिलाड़ी कहानी में प्रेमचन्द ने सामन्तवादी व्यवस्था पर प्रहार किया है। प्रेमचन्द के यथार्थवाद पर आधारित यह रचना राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को प्रभावित करने

वाली है। तत्कालीन भारत की परिस्थितियों को चित्रित करनेवाली प्रेमचंद की एक सार्थक कहानी है शतरंज के खिलाड़ी। प्रेमचंद ने इसमें विलासिता तथा अय्याशी में डूबे सुप्तप्राय जनजीवन को पुनः जागरूक होने का सन्देश देता है। मिर्जा और मीर नामक इसके काल्पनिक पात्र उस काल की विलासी मनोवृत्ति के सच्चे प्रतिनिधि पात्र हैं। यह कहानी एतिहासिक यथार्थ पर आधारित है। भाषा संवाद और शैली की दृष्टि से यह एक अनुपम कहानी माने जाते हैं। पंच परमेश्वर कहानी प्रेमचंद जी के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की सफल अभिव्यक्ति है। ठाकुर का कुआँ दलित परिप्रेक्ष्य में लिखी कहानी है।

प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में एक है 'कफ़न' जो एक बहुस्तरीय कहानी है, जिसमें घीसू और माधव की बेबसी, अमानवीयता और निकम्मेपन के बहाने सामन्ती औपनिवेशिक गठजोड़ के दौर की सामाजिक आर्थिक संरचना और उसके अमानवीय रूप का पता मिलता है। प्रेमचंद ने बिना किसी आग्रह या पूर्वाग्रह के, समूचे भारतीय सामाजिक जीवन को, नगर तथा गाँव सभी को अपनी दृष्टि की परिधि में रखा है और सामाजिक जीवन के बहिरंग की वास्तविकताओं के साथ व्यक्ति के अंतरंग जीवन, उसके निजी जीवन संदर्भो पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया है। आदमी के चरित्र को उसकी अंतर्बाह्य विशेषताओं और कमजोरियों के परिप्रेक्ष्य में देखने और उजागर करने के नाते ही, वे पाठकों के बीच इतना लोकप्रिय हुए। उनकी कहानियाँ और उनके उपन्यास इस कथन के साक्ष्य हैं कि भारतीय सामाजिक जीवन की उनकी पहचान कितनी मुकम्मल और प्रामाणिक थी।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद की कहानी की विशेषताएँ
- आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की अभिव्यक्ति
- दलित समस्या का चित्रण
- बाल मनोवैज्ञानिक कहानी ईदगाह
- शतरंज के खिलाडी में कायरता और विलासिता का चित्रण
- यथार्थ का अंकन
- कहानी साहित्य में प्रेमचन्द का योगदान

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बुधिया किस कहानी का पात्र है?
2. हामिद किस कहानी का पात्र है?
3. शतरंज के खिलाड़ी कहानी में चित्रित समस्या क्या है?
4. कफन कहानी के रचनाकार कौन है?
5. ठाकुर का कुआं कहानी के पात्रों का नाम लिखिए?
6. ईदगाह किस प्रकार की कहानी है?
7. नमक का दारोगा किसकी कहानी है?
8. पंच परमेश्वर कहानी के मुख्य पात्रों के नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. कफन
2. ईदगाह
3. भारतीय शासकों का पतन।
4. प्रेमचन्द
5. गंगी, जोखू
6. मनोवैज्ञानिक
7. प्रेमचंद
8. जुम्मन, अलगू

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. ईदगाह में चित्रित मनोवैज्ञानिकता पर टिप्पणी लिखिए।
2. ईदगाह कहानी के संवाद योजना पर टिप्पणी लिखिए।
3. कफन कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखिए।
4. पंच परमेश्वर कहानी की उद्देश्य पर टिप्पणी लिखिए।
5. ठाकुर का कुआं कहानी में चित्रित दलित समस्या पर आलेख तैयार कीजिए।
6. प्रेमचंद की कहानियों की विशेषताएँ पठित कहानियों के आधार पर लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. कहानीकार प्रेमचंद : रचना दृष्टि और रचना शिल्प - शिवकुमार मिश्र
3. कफन एवं अन्य कहानियां - प्रेमचंद
4. मानसरोवर (भागा।) - प्रेमचंद
5. कलम का सिपाही - अमृतराय
6. प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
7. कुछ विचार - प्रेमचंद
8. मानसरोवर - प्रेमचन्द

BLOCK - 04

साहित्य विचारक
प्रेमचंद

SGOU

इकाई 1

प्रेमचंद की जीवन दृष्टि और साहित्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रचनाकार प्रेमचंद के सामाजिक जीवन दृष्टि से परिचय प्राप्त करता है
- समाज और साहित्य के संबंध से रूब-रू होता है
- साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याओं से अवगत होता है
- हिन्दी साहित्य क्षेत्र में प्रेमचंद की योगदान से अवगत होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हर एक साहित्यकार के व्यक्तित्व का निर्माण और जीवनदृष्टि का विकास समकालीन परिवेश से होता है। उसी प्रकार प्रेमचंद की व्यक्तित्व भी विकसित हुए। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं की बड़ी ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत की है। उनकी अधिकांश कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल एवं विस्तृत वर्ग के लिए अर्पित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानव-स्वभाव की आधारभूत तत्व पर बल दिया। उन्होंने अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट नाम अर्जित किया। उन्होंने कुल मिलाकर 12 उपन्यास, 300 से अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 से अधिक अनुवाद, बाल-पुस्तकें एवं लेख, संपादकीय, भाषण आदि रचनाएँ की हैं। उनकी कला एवं साहित्य मुख्य रूप से जीवन के लिए थी और जीवन का अर्थ उनके लिए वर्तमान साहित्य से जुडा हुआ था। प्रेमचंद की जीवन दृष्टि और साहित्य हमेशा वर्तमान संदर्भों से जुडे हुए थे। वे साहित्य और समाज के प्रति हमेशा ईमानदार था और वर्तमान काल अवस्था का विश्लेषण करना उनका कर्तव्य था। जीवन और साहित्य के प्रति उनका जो दृष्टिकोण है वह हमेशा से सामाजिक जागरूकता के प्रति प्रतिबद्धता दिखाती है। वह सामाजिक सुधार संबंधी भावना पर ज़ोर देनेवाला था। वे साहित्य में समय और समाज से रूब-रू होकर वास्तविक जीवन के सरोकारों का सच्चा चित्रण करते थे। प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में कई अद्‌भुत रचनाएँ लिखी हैं। जो सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सबसे महत्वपूर्ण देय माना गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

राष्ट्रीय चेतना, स्वराज्य, नवजागरण, प्रगतिशील, सांप्रदायिकता, आर्थिक संस्कृति, छुआछूत

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद और उनके साहित्य सरल परन्तु असाधारण था। उनके मन में हमेशा राष्ट्रीय चेतना भरा हुआ था। सामाजिक विद्रूपताओं के खिलाफ क्रान्तिकारिता जाग उठती थी। इसकी फलस्वरूप ही उन्होंने सरकारी नौकरी को त्यागकर सामाजिक कल्याण के लिए निकल पडा था। उसी क्रान्तिकारिता उनकी 'सोज़े-ए-वतन' में भी दिखाई दिया और उसे अग्रेज़ी सरकार द्वारा जब्त भी किया गया। फिर भी उन्होंने अत्याचार के खिलाफ लिखना छोडा नहीं। उन्होंने कुछ दिनों तक सरकार के खिलाफ टिप्पणियाँ और कहानियाँ लिखती रहीं और यह उनके मन में उभरने वाले

राष्ट्रीय चेतना का ही परिणाम था। इन सब के बीच उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना, स्वदेशी का प्रचार करना, सरकार विरोधी सत्याग्रह चलाना, पुलिस के अत्याचार आदि विषयों का चित्रण अपनी रचनाओं द्वारा प्रस्तुत करते थे। 10 मार्च, 1930 को 'हंस' पत्रिका का पहला अंक निकला और उसकी संपादकीय खुद प्रेमचंद ने लिखा और ब्रिटिश सरकार द्वारा उसकी आलोचना की गयी।

उसी प्रकार प्रेमचंद जी के मन में हमेशा किसानों के प्रति बडा ही गहरा लगाव था। उनके अनुसार स्वराज्य की कल्पना तभी संभव है जब किसानों और मज़दूरों की शोषण और दमन समाप्त हो जाएंगे। वे बार-बार कहते थे कि ब्रिटिश सरकार के राज्य में गरीबों-मज़दूरों की दशा जितनी खराब है उतनी समाज में किसी और नहीं हो सकता। यही कारण है उन्होंने अपने साहित्य में अक्सर गरीबों-मज़दूरों की ज़िक्र कर उनकी वेदना भरी जिंदगी को दर्ज करते थे। 'पूस की रात' किसान की स्थिति को दर्शानेवाली कहानी है। इसमें किसानों की ऋण ग्रस्तता, कर्ज़ चुकाने की असमर्थता, कृषक जीवन की हताशा एवं निराशा को प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार 'गोदान' उनके किसान विषय पर लिखा गया उपन्यास है। इन सब में छोटे और बडे लोग किसानों-मज़दूरों को ही नोचते हैं और उन्हीं के ही रक्त और मांस खाकर बडे होते हैं। इससे छुटकारा पाने केलिए वे अक्सर गरीब-मज़दूरों को संगठित होने की सलाह देते थे।

प्रेमचंद की रचनाओं में नारियों के प्रति जो दृष्टि है वह नवजागरण की चेतना से युक्त प्रगतिशील विचार रही है। उनके साहित्य में विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, समाज में स्त्रियों को समान अधिकार आदि पर समर्थन और बालविवाह, अनमेल विवाह परदा प्रथा आदि पर विरोधी प्रभाव देख सकते हैं। अपनी हर साहित्यिक विधाओं में प्रेमचंद ने समाज में स्त्री पर होनेवाली समस्याओं का चित्रण किया है। 'बूढ़ी काकी', 'कफन' जैसी कहानियों के स्त्री पात्र हो, 'निर्मला', 'रंगभूमि' जैसे उपन्यासों की नारी पात्र हो वे समाज की हरेक महिला की प्रतिनिधि रही हैं। उनकी समस्याएँ हमें सोचने पर मजबूर करती है। इसके बदौलत प्रेमचंद की नारी पात्र कथानक के संदर्भ में मन में प्रतिष्ठित हो जाती है।

प्रेमचंद की सांप्रदायिक विषयों को लेकर जो दृष्टिकोण है वह बहुत ही सामर्थ्य देनेवाला है। हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक प्रेमचंद अपने साहित्य में अपनी राय को बहुत ही हिमायत तरीके से की है। अपने लेखों, उपन्यासों, नाटको और अन्य साहित्यिक विधाओं में इसका चित्रण किया है। उनका नाटक 'कर्बला' सांप्रदायिक समस्या को लेकर लिखा है। उन्होंने सांप्रदायिक समस्याओं पर अपने तर्कसंगत दृष्टिकोण प्रस्तुत की है। उन्होंने वर्गीय विषयों को दूर हटाने के लिए यह बात स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया कि अब संसार में केवल एक ही संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति। यानि मनुष्य के बीच धर्म को लेकर नहीं अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने की चिंता पैदा होनी चाहिए।

दलित समाज के प्रति भी प्रेमचंद का दृष्टिकोण जो है वह बहुत ही मर्मस्पर्शी रहा है। प्रेमचंद का व्यक्तित्व सामाजिक भेदभाव को पूरी तरह से नकारनेवाला था। एक साहित्यकार होने के नाते वे समाज में भरी छुआछूत की समस्या को तोडना चाहता था। दलितों के प्रति उनके मन में हमेशा गहरी और पैनी मानवीय संवेदना थी। अपनी साहित्यिक रचनाओं में उन्होंने अस्पृश्यता का खूब विरोध प्रकट किया है। 'सद्‌गति', 'ठाकुर का कुआँ' जैसी कहानियाँ लिखकर दलितों के प्रति अपनी गहरी संवेदना को प्रस्तुत की।

प्रेमचंद का सम्पूर्ण लेखन एक लेखक के संवेदनशील मन का प्रमाण है। प्रेमचंद में जो मानवीय संवेदना है उसी के कारण वे अपने चरित्रों को इतनी सहानुभूति दे सके हैं और स्थितियों को इतनी मार्मिकता के साथ अंकित कर सके हैं। प्रेमचंद ने कभी किसी राजनीतिक प्रतिबद्धता की बात नहीं की है और ना ही किसी राजनीतिक दल से जुड़े। यदि कभी बात की भी है तो गांधी के साथ अपने को जोड़ा है। लेकिन गांधीवाद के साथ भी उनका मन शत प्रतिशत मेल नहीं खाता। वस्तुतः उनका साहित्य प्रगतिशील है और मानव का पक्षधर है। उनकी मूल चिंता मनुष्य की बेहतर जिन्दगी की चिंता है। वे दलित, शोषित, पीड़ित मनुष्यों की वकालत करते हैं। लेकिन यह सब वे किसी 'वाद' के तहत नहीं करते, अपनी सहज संवेदना से वशीभूत होकर करते हैं। प्रेमचंद ने जो कुछ

सीखा था सीधे जिन्दगी से सीखा था।

प्रेमचंद ने राजनीति को अछूत और अवांछनीय कभी नहीं माना, वह साहित्य, समाज और राजनीति को एक कड़ी के रूप में देखते थे। वे साहित्य की तरक्की पर समाज और राजनीति को निर्भर मानते थे। वे इन तीनों को साथ-साथ चलने वाली चीजें मानते थे।

प्रेमचंद सच्चे अर्थों में एक मानवतावादी लेखक थे। मनुष्य पर मनुष्य द्वारा किया जाने वाला अत्याचार उन्हें बेचैन करता है। समाज का हर कमजोर वर्ग जो शोषित और उत्पीड़ित होता है, प्रेमचंद की सहानुभूति और उनकी लेखनी का विषय बना है। कहना न होगा कि भारतीय समाज में किसान, मजदूर, अछूत, नारी और बालक-ये सब आज भी उपेक्षित हैं और प्रेमचंद ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणियों में इन सब की वकालत अपने समय में खूब की है। 'हतभागे किसान' शीर्षक अपनी टिप्पणी में वे लिखते हैं, 'भारत के अस्सी फीसदी आदमी खेती करते हैं। कई फीसदी वह हैं जो अपनी जीविका के लिए किसानों के मुहताज हैं, जैसे गाँव के बढ़ई, लुहार, कुम्हार आदि। राष्ट्र के हाथ में जो कुछ विभूतियाँ हैं, वह इन्हीं किसानों और मजदूरों की मेहनत का सदका हैं। हमारे स्कूल और विद्यालय, हमारी पुलिस और फौज, हमारी अदालतें और कचहरियाँ सब उन्हीं की कमायी के बल पर चलती हैं, लेकिन वही जो राष्ट्र के अन्न और वस्त्रदाता हैं, भरपेट अन्न को तरसते हैं, जाड़े-पाले में ठिठुरते हैं और मक्खियों की तरह मरते हैं।

कोई लेखक अपने समय की सच्चाइयों के प्रति जितना ही समर्पित होगा उतना ही अपने पूर्ववर्ती से अलग होगा और उतना ही वह अनुकरणवादियों की अपेक्षा उनके निकट होगा। मुख्य बात अपने समय की सच्चाइयों की पहचान और उस से जुड़ना है। यह आसान नहीं होता। यह लेखक के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। प्रेमचंद ने इस चुनौती को स्वीकार किया था। उन्होंने अपने समय के यथार्थ को अपने कथा-संसार में प्रकट किया पर आदर्शवाद के साथ। वह भली प्रकार समझते थे कि समाज के लिए न तो कोरा यथार्थ और न ही कोरा आदर्श फलदायी हो सकता है, दोनों का सम्मिलन ही उसे नई दिशा दे कर आगे बढ़ा सकता है।

इसी तरह प्रेमचंद की जीवन दृष्टि और साहित्य एक दूसरे का पूरक बनकर उभरा है। साहित्य और जीवन के सामजंस्य को कायम रखकर ही उन्होंने अपना साहित्यकार होने का कर्तव्य निभाया है। सामाजिक जीवन दृष्टि को मद्दे नज़र रखते हुए उन्होंने जो भी रचनाएँ लिखी है वे सब प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण माना गया।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद का कथा-संसार किसी भी दृष्टि से बंधा हुआ संसार नहीं है। यह निरन्तर विकसित होता हुआ, सृजित होता हुआ संसार है। इसमें किसी एक दौर को, एक पक्ष को भरा-पूरा और संपूर्ण समझने की भूल नहीं की जानी चाहिए। उनकी रचनात्मक विकास यात्रा को देखते हुए कहा जा सकता है कि वे एक पेड़ की तरह हैं जो बाहर से हवा-पानी लेता हुआ लगातार फलता-फूलता है। उन्होंने हिन्दी भाषा में विशाल साहित्य निर्माण किया, जिसमें 300 से अधिक कहानियाँ, 12 से अधिक उपन्यास, नाटक और विभिन्न विषयों पर निबंध लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में योगदान दिया। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने मानवीय अस्मिता और गरिमा को स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने इस निस्सार सांसारिकता के बीच सम्बंधों की ऊष्मा और मनुष्य की अस्मिता को बचाने की पुरजोर कोशिश की है। प्रेमचंद मनुष्य में छिपे देवता को देखते थे। मनुष्य और मनुष्य के बीच पैदा हुई जातिगत, धर्मगत, स्वार्थगत दीवारों को तोड़ते हुए मनुष्यों को उन्होंने इसी मानवतावादी दृष्टि से देखा है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद की रचनाओं में सबसे अधिक राष्ट्रीय चेतना की भाव उभरा है।
- 'सोज़े-ए-वतन' राष्ट्रीय चेतना से उभरी रचना होने के कारण अंग्रेज़ी सरकार द्वारा उसको जब्त किया गया।
- सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर साहित्यिक क्षेत्र में कार्यरत रहना।
- स्वदेश प्रेम के फलस्वरूप विदेशी वस्तुओं का विरोध प्रकट करना।
- मुख्य रूप से उनकी रचनाओं में सरकार विरोधी सत्याग्रह, पुलिस के अत्याचार, सरकारी स्कूलों का विरोध, स्त्रियों के सत्याग्रह आंदोलनों में भाग लेने और जेल जाने का प्रसंग आदि विषयों का चित्रण मिलते हैं।
- किसान और उनकी समस्याओं को प्रमुखता देना।
- स्वराज्य निर्माण का स्वप्न को किसानों एवं मजदूरों की शोषण और दमन की मुक्ति से जोडना।
- स्वराज्य के लिए जो लड़ाई है वह गरीब एवं किसानों की मदद से ही संपन्न हो पाएगा।
- स्त्रियों के प्रति उनकी दृष्टिकोण नवजागरण की चेतना से अनुप्राणित एवं प्रगतिशील है।
- प्रेमचंद की रचनाओं में खासकर स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, पारिवारिक संपत्ति में स्त्री का अधिकार, बालविवाह के विरोध आदि मुख्य विषय रहा है।
- प्रेमचंद हिंदू-मुस्लिम एकता का समर्थन करते हैं।
- सांप्रदायिक समस्याओं पर उन्होंने तर्कसंगत एवं मानवीय पक्ष पर विचार किया है।
- सांप्रदायिकता और संस्कृति की लड़ाई में आर्थिक संस्कृति को प्रमुखता देना।
- दलित जीवन के प्रति उनकी दृष्टिकोण संवेदनशील रही है।
- छुआछूत की समस्या को सामाजिक विद्रूपता का कारण बताकर उसका कठोर प्रतिरोध करना।
- उनके समग्र साहित्य में सामाजिक एवं जीवन दृष्टि के विविध आयाम विद्यमान है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राष्ट्रीय चेतना से उभरी उनकी प्रमुख रचना कौन सी है?
2. हंस पत्रिका का पहला अंक कब प्रकाशित हआ?
3. हंस पत्रिका के पहला संपादकीय किसने लिखा?
4. प्रेमचंद के अनुसार स्वराज्य की कल्पना कैसे संभव हो पायेगा?
5. प्रेमचंद के अनुसार ब्रिटिश शासन के समय राज्य में किसकी दशा खराब है?
6. प्रेमचंद गरीब-मज़दूरों को शोषणों से मुक्त होने के लिए कौन-सी सलाह देती थी?
7. प्रेमचंद के सांप्रदायिक विषय को लेकर लिखी गयी नाटक कौन-सा है?
8. दलित विषय को लेकर लिखी गयी दो कहानियों का नाम लिखिए।
9. किसानी समस्या पर प्रेमचंद द्वारा लिखी गयी कहानी का नाम लिखिए।
10. 'गोदान' उपन्यास की मुख्य समस्या क्या है?

Answers / उत्तर

1. सोज़े-ए-वतन
2. 10 मार्च 1930
3. प्रेमचंद
4. किसानों और मज़दूरों की शोषण और दमन समाप्त होने पर
5. गरीब-मज़दूरों की
6. संगठित होने की सलाह
7. सांप्रदायिकता
8. सद्गति और ठकुर का कुआँ
9. पूस की रात
10. किसान समस्या

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त जीवन विसंगतियों पर अपना मत प्रकट कीजिए।
2. 'प्रेमचंद का साहित्य' समाज का दर्पण है। स्पष्ट कीजिए।
3. प्रेमचंद के जीवन दृष्टि और साहित्य पर प्रकाश डालिए।
4. प्रेमचंद की साहित्य में अभिव्यक्त सामजिक जीवन पर विचार कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग : डॉ रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन
2. प्रेमचंद जीवन और साहित्य - मदन गोपाल
3. प्रेमचंद : साहित्य और समाज - अमृत राय
4. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव
5. प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन - रामविलास शर्मा

इकाई 2

कुछ विचार : एक सामान्य परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य और उसकी भाषा को समझता है
- हिन्दी साहित्य की क्रमगत विकास की दिशा को समझता है
- साहित्य के यथार्थ उद्देश्य को समझता है
- प्रेमचंद की साहित्य दृष्टि से सीधे साक्षात्कार होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

मुंशी प्रेमचंद

भारत के उपन्यास सम्राट के नाम से जाननेवाला मुंशी प्रेमचंद (जन्म-31 जुलाई 1880 - मृत्यु- 8 अक्टूबर 1936) का जन्म वाराणसी (उत्तरप्रदेश) जिले के लमही गाँव में हुआ था। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। आरंभ में वे उर्दू में नवाब राय नाम से लिखते थे। वे एक देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, उत्तरदायी संपादक एवं संवेदनशील लेखक रहे थे। उनकी रचनाएँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक साहित्य की दस्तावेज़ है। उनकी रचनाओं में समाजसुधार आंदोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों का समावेश दिखायी देती है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनकी रचनाओं की विशेषता है। उनका समय वास्तव में 'प्रेमचंद युग' से जाने जाते हैं।

साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन 1901 से प्रारंभ हो चुका था। प्रेमचंद की पहली रचना अप्रकाशित है। उनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असरारे मआविद' है। 1908 ई में उनका पहला कहानी संग्रह 'सोज़े-वतन' नाम से प्रकाशित हए। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होने के कारण अंग्रेज़ सरकार ने उसे प्रतिबंधित कर सारी प्रतियाँ जब्त कर दी। उसके साथ साथ उन्हें लेखनकार्य न करने की चेतावनी भी दी। इसी कारण उन्होंने नाम बदलकर प्रेमचंद रख दिया। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' ज़माना पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से आठ भागों में प्रकाशित हैं।

उपन्यासः- सेवासदन (1918), प्रेमाश्रम (1922), रंगभूमि (1925), निर्मला (1925), कायाकल्प (1926), प्रतिज्ञा (1927), गबन (1928), कर्मभूमि (1932), गोदान (1936), मंगलसूत्र (1948-उनका अधूरा उपन्यास है।)

कहानी संग्रहः- सप्तसरोज(1917),नवनिधि, प्रेमपूर्णिमा, प्रेम-पचीसी, प्रेम-प्रतिमा, प्रेम-द्वादशी, समरयात्रा, मानसरोवर।

नाटकः- संग्राम(1923), कर्बला (1924), प्रेम की वेदी (1933)

निबंध संकलनः- कुछ विचार

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

पुरस्कार:- मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की तरफ से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक रह चुके थे वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई।

प्रेमचंद के निबंध संग्रह 'कुछ विचार' नाम से जाने जाते हैं। इसमें उनके विचारोत्तेजक भाषण और लेख संलग्न है। इसमें कुल 11 निबंधों को समाहित किया गया है। इन रचनाओं द्वारा उन्होंने हिन्दी और राष्ट्र भाषा को लेकर उठी समस्याओं पर अपने जीवनानुभवों के प्रकाश में विचार-विमर्श किया है। बहुत साफ तरीके से अपनी बात को उन्होंने इस पुस्तक में प्रस्तुत करने की भरपूर कोशिश की है। एक अध्येयता होने के नाते सभी को यह रचना अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली रहेगी।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समाज चिंतक, प्रगतिशील लेखक संघ, अधिवेशन, साधन, साध्य

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक के नाम से जाने जाते थे। प्रेमचंद का कथा-साहित्य अपने समय का मजवूत सहायक मात्र नहीं अपितु राष्ट्र उत्थान तथा राष्ट्र निर्माण की स्वस्थ परंपरा को भी आगे बढाया है। उस समय के कलाकार या साहित्यकार केवल देशभक्ति व राजनीति के पीछे चलने वाले नहीं थे उसके आगे मशाल की आग को जलानेवाले साहित्यकार भी थे।

'कुछ विचार' उनके विचारोत्तेजक भाषण एवं लेख का संग्रह है। इसमें उन्होंने साहित्य का उद्देश्य, कहानी कला, जीवन में साहित्य का स्थान एवं भाषा को लेकर उठी समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किए हैं। प्रेमचंद कथाकार, उपन्यासकार के साथ-साथ समाज चिंतक भी हुआ करता था। समाज को लेकर प्रेमचंद की दृष्टि बहुत ही गहरी और पैनी थी। इस निंबध संकलन में जो भाषण संकलित है उन्हें पढकर अध्येता प्रेमचंद के विचारों को स्पष्टतः समझ सकेंगे। 'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक भाषण प्रेमचंद का अध्यक्षीय भाषण है जो उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन के संदर्भ में लखनऊ में दिया था। प्रेमचंद की राय में साहित्यकार के लिए भाषा जो है वह साधन है साध्य नहीं। साहित्यकार जो भाषा प्रयुक्त करती है वह बोलचाल की भाषा न होकर साहित्य की भाषा बन जाती है। साहित्य की भाषा प्रौढ एवं सुन्दर होना चाहिए और साथ में दिल और दिमाग पर एक असर डालने की क्षमता भी होना चाहिए। प्रेमचंद के नज़र में साहित्य जो है वह जीवन की आलोचना है। प्रेमचंद की राय में साहित्य वह है जो समाज की सच्चाई को प्रकट करने में सक्षम बने। उन्होंने कहा था कि पहले का साहित्य जो है वह मनोरंजन के लिए था। लेकिन आज के साहित्य सच्चाई को प्रकट करनेवाला है। 'कुछ विचार' निबंध संग्रह में उन्होंने लिखा है कि साहित्य अपने काल का प्रतिबिंब होता है। वे सदैव एक सामंजस्य पूर्ण तथा शोषण मुक्त समाज के हिमायती थे। उनकी भाषा सम्बन्धी दृष्टि, रहन-सहन, खान-पान, बोली-बानी सभी स्तरों पर पात्रगत और संवादगत सामंजस्य दिखाई देता है। कुछ विचार शीर्षक किताब में जो भाषण संकलित है उन्हें पढ़ने से भी प्रेमचंद के विचारों का दर्पण स्पष्ट हो जाता है।

'कुछ विचार' नामक इस निबंध संग्रह में निम्नलिखित निबंध संग्रहीत है:-

1. साहित्य का उद्देश्य
2. कहानी कला 1
3. कहानी कला 2
4. कहानी कला 3
5. उपन्यास
6. उपन्यास का विषय
7. एक भाषण
8. जीवन में साहित्य का स्थान
9. उर्दू, हिन्दी और हिंदुस्तानी
10. राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ
11. क़ौमी भाषा के विषय में कुछ विचार

उन्होंने भाषा और साहित्य को लेकर उठनेवाली

समस्याओं को अपने जीवनानुभवों के प्रकाश में प्रस्तुत किया है। समाज को लेकर उनकी दृष्टिकोण अक्सर बहुत ही पैनी और गहरी रही है। उनकी भाषा संबंधी दृष्टिकोण सभी स्तरों पर सामजंस्य से दिखाई देती है। ‘कुछ विचार’ नामक किताब उनके भाषणों का संकलन भी है और लेखों की संकलन भी है। उसे पढकर प्रेमचंद के साहित्य एवं भाषा संबंधी विचारों से अवगत होता है। इसमें से ‘साहित्य का उद्देश्य’ शीर्षक नामक रचना उनका अध्यक्षीय भाषण है जो उन्होंने 1936 को लघनऊ के प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में अध्यक्ष के रूप में दिया था। हिन्दी साहित्य के क्रमगत विकास की दिशा-दृष्टि को समझने के लिये यह भाषण बहुत ही उपयोगी तथा पठनीय है। ऐसे ही उस समय में शुरू हुई भाषा सम्बन्धी बहस का आधार क्या है तथा स्वरूप कैसा है इसके लिये हिन्दी-उर्दू, राष्ट्र-भाषा, और कौमी भाषा शीर्षक लेख देखने योग्य है। इस प्रकार ‘कुछ विचार’ शीर्षक किताब एक महत्वपूर्ण और उपयोगी किताब है।

साहित्य का उद्देश्य

भारत में ‘प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन ‘प्रेमचंद’ की अध्यक्षता में सन् 1936 में लखनऊ में हुआ था। सभापति के रूप में ‘प्रेमचंद’ ने इस सम्मेलन में दिये अपने भाषण में व्यक्तिवादी, रूढ़िवादी और संकीर्ण सौंदर्य-दृष्टि रखने वाले उन साहित्यकारों पर प्रहार करते हुए उन्हें आह्वान किया कि वे आज से सक्रिय ओर जीवंत साहित्य की रचना करें। प्रेमचंद के इस भाषण को साहित्य जगत में ‘प्रगतिवाद का घोषणापत्र’ भी माना जाता है जिसको हम प्रेमचंद के प्रसिद्ध निबंध ‘साहित्य का उद्देश्य’ में देख सकते हैं। इस निबंध के कुछ महत्वपूर्ण कथन इस प्रकार है:

- ‘साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गयी हो, उसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं सुन्दर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।’
- ‘साहित्य की बहुत-सी परिभाषाएँ की गयी हैं पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना’ है। चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानियों के, या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।’
- ‘साहित्य केवल मन-बहलाव की चीज नहीं है, मनोरंजन के सिवा उसका और भी उद्देश्य है। अब वह केवल नायक नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता; किन्तु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है, और उन्हें हल करता है।’

Critical Overview / अवलोकन

कथाकार प्रेमचंद सिर्फ रचनाकार ही नहीं धारदार चिंतक भी थे। इस पुस्तक में उनके विचारोत्तेजक भाषण, लेख का संग्रह है। इसमें साहित्य का उद्देश्य, कहानी कला, जीवन में साहित्य का स्थान, उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी तथा राष्ट्र भाषा को लेकर उठी तात्कालिक समस्याओं पर विचारक प्रेमचंद ने अपने जीवनानुभवों के प्रकाश में विचार प्रकट किये हैं।

इस पुस्तक के बहाने प्रेमचंद की साहित्य दृष्टि से सीधे साक्षात्कार कर सकेंगे। प्रेमचंद एक ऐसे रचनाकार हैं जो अपने से जुड़ने के लिए भी बनी-बनायी तिरपाल का भरोसा नहीं करते। वे खुद अपनी ज़मीन गोड़ते हैं। उसमें से पात्र तलाशते हैं। यही वजह है कि वे पात्र को उत्कृष्ट और आदर्श बनाने के लिए उसे खींचतान कर निर्दोष साबित करने पर उतारू नहीं होते। यदि अपनी सहज जीवन-यात्रा में कोई पात्र निर्दोष है तब तो ठीक है और नहीं तो उससे पात्र के समग्र जीवन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। जैसे कहा जाता है कि इतिहास में सब कुछ जस का तस है, फिर भी असत्य लगता है और कहानी में ज्यादातर काल्पनिक होता है, फिर भी सच लगता है। प्रेमचंद समय के गतिशीलता के रचनाकार हैं, इसलिए जस का तस लेखन उनका ध्येय नहीं है। उनकी कोशिश यह भी है कि समाज का वर्तमान चेहरा बदले और वह जीने लायक बन सके।

‘प्रेमचंद कुछ विचार’ दरअसल, उनके कुछ निबंध हैं। इसमें उर्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तानी, कहानी-कथा, राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्याएँ जैसे विषयों पर अलग-अलग स्थान पर कहा है। बहुत साफ तरीके से अपनी बात रखते हुए प्रेमचंद हिचकिचाते नहीं। उन्होंने लखनऊ में हुए प्रगतिशील लेकर संघ के सभापतित्व से बोलते हुए ‘प्रगतिशील’ शब्द पर ही आपत्ति दर्ज कराई थी। उनका कहना है वह रचनाकार हो ही नहीं सकता जो प्रगतिशील नहीं है। उनका वह भाषण भी इसी पुस्तक में है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद के विचारोत्तेजक भाषण और लेख का संग्रह 'कुछ विचार' नामक निबंध में संकलित है।
- इसमें उन्होंने साहित्य का उद्देश्य, कहानी कला, जीवन में साहित्य का स्थान एवं भाषा को लेकर उठी समस्याओं पर उनका मत प्रकट किया है।
- प्रेमचंद कथाकार, उपन्यासकार के साथ-साथ समाज चिंतक भी है।
- समाज को लेकर प्रेमचंद की दृष्टि बहुत ही गहरी और पैनी थी।
- इस निंबध संकलन में जो भाषण संकलित है उन्हें पढकर अध्येता प्रेमचंद के विचारों को स्पष्ट रूप से समझ पायेंगे।
- 'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक भाषण प्रेमचंद का अध्यक्षीय भाषण है जो उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन के संदर्भ में 1936 को लखनऊ में दिया था।
- प्रेमचंद की राय में साहित्यकार के लिए भाषा जो है वह साधन होना चाहिए साध्य नहीं।
- साहित्यकार जो भाषा प्रयुक्त करती है वह बोलचाल की भाषा न होकर साहित्य की भाषा बन जाती है।
- साहित्य की भाषा प्रौढ एवं सुन्दर होना चाहिए और साथ में दिल और दिमाग पर एक असर डालने की क्षमता भी रखनी चाहिए।
- प्रेमचंद के अभिप्राय में साहित्य का लक्ष्य जीवन की आलोचना करने से है।
- प्रेमचंद की राय में साहित्य वह है जो समाज की सच्चाई को उद्धृत करने में सक्षम बने।
- उनके नज़र में पहले का साहित्य जो है वह मनोरंजन के लिए था। लेकिन आज के साहित्य सच्चाई को प्रकट करनेवाला है।
- 'कुछ विचार' निबंध संग्रह में उन्होंने लिखा है कि साहित्य अपने काल का प्रतिबिंब होता है, जो समाज की हर स्थिति को प्रस्तुत कर सके।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कुछ विचार' संग्रह में संकलित हैं?
2. प्रेमचंद का पहला उपनाम क्या था?
3. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या है?
4. प्रेमचंद का जीवनकाल निर्धारित करें?
5. किस रचना के नाम पर प्रेमचंद का साहित्य अंग्रेजी सरकार ने प्रतिबंधित की थी?
6. प्रेमचंद की कहानियों का सकंलन किस नाम से जाने जाते हैं?
7. 'मानसरोवर' के कितने भाग है?
8. प्रेमचंद के अधूरा उपन्यास कौन-सा है?
9. प्रेमचंद नाम से लिखी गयी उनकी पहली कहानी कौन सी है?
10. 'सोज़े-वतन' का प्रकाशन वर्ष?

Answers / उत्तर

1. प्रेमचंद के निबंध
2. नवाब राय
3. धनपतराय श्री वास्तव
4. 1880 से 1936
5. सोज़-ए-वतन
6. मानसरोवर
7. आठ
8. मंगलसूत्र
9. बड़े घर की बेटी
10. 1908

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. साहित्य जगत में प्रेमचंद का जीवन परिचय दीजिए।
2. 'कुछ विचार' निबंध संग्रह पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेमचंद के साहित्य जीवन का परिचय दीजिए।
4. 'कुछ विचार' में उल्लिखित निबंधों पर प्रकाश डालिए।
5. साहित्य और भाषा पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कुछ विचार - प्रेमचंद
2. प्रेमचंद : उनके लेख और निबंध - संपादक : कमलेश्वर
3. प्रेमचंद के साहित्यिक विचार - नामवर सिंह
4. प्रेमचंद के विचार और दृष्टिकोण - मधुरिमा वर्मा
5. प्रेमचंद की साहित्य साधना - रांगेय राघव

BLOCK - 05

प्रेमचंद का साहित्यः आलोचनात्मक अध्ययन

SGOU

इकाई 1

प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषताएँ (कहानी,उपन्यास और अन्य गद्य विधाएँ)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की रचनाओं का परिचय प्राप्त करता है
- प्रेमचंद की कहानियों की विशेषताएँ समझता है
- प्रेमचंद की उपन्यासों की विशेषताएँ समझता है
- प्रेमचंद की गद्य विधाओं की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

31 जूलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के लमही ग्राम में जन्मे प्रेमचंद का असली नाम है 'धनपत राय'। 'प्रेमचंद' उनका साहित्यिक नाम है। सबसे पहले वे 'नवाबराय' नाम से लिखते थे। धनपत राय श्रीवास्तव, जो प्रेमचंद नाम से जाने जाते हैं, वो हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि करीब तीन सौ कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपने दौर की सभी प्रमुख उर्दू और हिन्दी पत्रिकाओं- ज़माना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा। उन्होंने हिन्दी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती प्रेस खरीदा जो बाद में घाटे में रहा और बन्द करना पड़ा। प्रेमचंद फिल्मों की पटकथा लिखने मुंबई आए और लगभग तीन वर्ष तक वहाँ रहे। साथ ही 3 नाटक लिखें। 'कुछ विचार' आपका निबंध संग्रह हैं। इसमें 11 निबंध संग्रहीत हैं। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे। 'महाजनी सभ्यता' उनका अंतिम निबन्ध, 'साहित्य का उद्देश्य' अन्तिम व्याख्यान, 'कफन' अन्तिम कहानी, 'गोदान' अन्तिम पूर्ण उपन्यास तथा 'मंगलसूत्र' अन्तिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है।

प्रेमचंद की रचनाएँ बहुत चर्चित हैं। समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने में प्रेमचंद सफल हुए हैं। अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों और दुर्व्यवस्थाओं को चित्रित करने में वे समर्थ थे। प्रेमचंद पहले अंग्रेज़ी में लिखा करते थे। बाद में उर्दू और हिन्दी में। और विभिन्न रचनाओं का अनुवाद भी करते थे। प्रेमचंद की मृत्यु 1936 में हुई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, समाज सुधारक, सामंत, ज़मींदार, पूँजीपति, श्रमिक

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद की साहित्य की विशेषताएँ

आधुनिक हिन्दी साहित्य की गति बदलने वाले महान लेखक प्रेमचंद जी अपने विशेष लेखन शैली, विषय चयन एवं प्रस्तुतीकरण केलिए जाने जाते हैं। प्रेमचंद समाज के विभिन्न वर्गों की दर्दनाक स्थिति प्रस्तुत करने में सक्षम हुए है। उनकी रचनाएँ वर्तमान सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। यथार्थवाद, स्त्री की उन्नति, श्रमिक वर्ग की संघर्ष, देश प्रेम, दलितों की समस्या, सामंतों और ज़मींदारों द्वारा शोषण, पूंजीपतियों का अत्याचार, शिक्षा का महत्व आदि अनेक विषयों पर प्रेमचंद बल देते हैं। समाज में व्याप्त भेद-भाव को सही ढंग से प्रस्तुत करने में प्रेमचंद सफ़ल हुए हैं। जनसाधारण की भाषा में उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करना उनके साहित्य की विशेषता है। उनकी हर रचना में चाहे वह कहानी हो, उपन्यास हो, नाटक हो या फिर निबंध हम उसमें निम्नलिखित विशेषताएँ देख सकते हैं।

1. देश प्रेम

प्रेमचंद एक सच्चा देशभक्त था। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है। उनकी प्रथम रचना 'सोजेवतन' ही देशप्रेम से ओतप्रोत था। तभी तो उसे अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था। और उन्हें आगे से न लिखने की चेतावनी भी दी। फिर भी वह पीछे नहीं हटे और नाम बदलकर आगे लिखने लगे। इनकी रचनाओं से लोगों को स्वराज्य केलिए लड़ने की प्रेरणा मिलती थी। और वे खुद भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिए। एक पत्रकार के रूप में भी वे जनता को सचेत करते रहे। एक साहित्यकार के रूप में देशहित में जो जो कर सकता था वह सब प्रेमचंद जी ने की। देशप्रेम से युक्त उनकी एक कहानी है 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' जो उनकी कहानी संग्रह 'सोजेवतन' में समाहित था। इसमें उन्होंने साबित किया है कि मातृराज्य केलिए बहाया गया खून की बूंद से अनमोल चीज़ दूसरी कुछ भी नहीं है।

प्रेमचंद के देशप्रेम के बारे में रामविलास शर्मा लिखते हैं, "प्रेमचंद बड़े ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे, लेकिन अपने सम्मान से ज्यादा उन्हें देश के सम्मान का ध्यान रहता था। ......प्रेमचंद केलिए देश-भक्ति और जनतंत्र दो विरोधी चीज़ें नहीं थीं। वह राष्ट्रीय और जनवादी आन्दोलन के समर्थक थे।"

अंग्रेज़ी शासन काल में जनता के मन में देश प्रेम जगाने केलिए लेखनी प्रस्तुत करना ज़रूरी था। 'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम', 'यही मेरा वतन है' आदि देशप्रेम से सम्बंधित उनकी कहानियाँ हैं। 'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम' इटली की राष्ट्रीय क्रांती से सम्बन्धित कहानी है। इस कोटि में 'प्रेमाश्रम' नामक उपन्यास भी उल्लेखनीय है।

2. स्त्री पात्रों का महत्व

प्रेमचंद यह मानते थे कि स्त्रियों की उन्नति के बिना समाज की उन्नति अधूरी रहेगी। इसलिए अपनी रचनाओं में स्त्री को उन्होंने प्रवल स्थान दिया। प्रेमचंद वर्तमान समाज में नारी की पराधीनता को प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं को तोड़ने की कोशिश भी करते नज़र आते हैं। दहेज प्रथा, वेश्या जीवन, शिक्षा का महत्व, अनमेल विवाह आदि विषयों पर बल देकर स्त्री को सम्मान देने की वे कोशिश करते हैं। प्रेमचंद जी की नारी पात्र हमेशा ही सामाजिक व्यवस्थाओं के खिलाफ आवाज़ उठाती नज़र आती है। अपने परिवार, बाल बच्चे, अपने पति एवं अपने समाज केलिए भी किसी भी हद तक जाने की क्षमता प्रेमचंद जी की नारी पात्रों में विद्यमान है। समाज की नवजागरण में, पुनर्निमिती में स्त्री की योगदान की ओर प्रेमचंद जी इशारा करते हैं। गोदान की मिस मालती, गोदान की ही धनिया, ठाकुर का कुआँ की गंगी, सेवासदन की सुमन आदि सामाजिक व्यवस्थाओं के तले दबकर रहना नहीं चाहते। जहाँ पुरुष भी चुपचाप रह जाते है स्त्री अपनी क्रांतिकारी रूप में सामने आती है। लेखक अपनी बदलाव की चाह, सामाजिक प्रश्न आदि ज्यादातर नारी पात्रों से ही कहलवाया है। उपन्यासों में 'सेवासदन', 'निर्मला', 'गबन' आदि इस कोटी के उपन्यास हैं। सेवासदन का पात्र 'सुमन' अन्यायों का सामना करनेवाली औरत है।

एक और स्त्री की क्रांतिकारी रूप दर्शाने पर भी स्त्री की समस्याओं की ओर भी प्रेमचंद जी पाठकों की ध्यान आकर्षित करते हैं। स्त्री लगातार सहती जाती है और समाज की कुरीतियाँ एवं अजीब व्यवस्थाएँ उनकी जीवन यातनामय बना देती है। तत्कालीन समाज में स्त्री जिन जिन समस्याओं का सामना की है, जिन जिन शोषण का

शिकार हुआ है इन सब का खुला चित्रण प्रेमचंद जी की रचनाओं में है। कहानियों में 'बड़े घर की बेटी', 'नरक का मार्ग', 'दुराशा', 'कुसुम', 'पेपुजी', 'बूढ़ी काकी' आदि उदाहरण हैं। यहाँ 'बड़े घर की बेटी' में स्त्री जीवन की त्रासदियों की चर्चा है तो 'नरक का मार्ग' में अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। 'दुराशा' पर्दा प्रथा के विरुद्ध है तो 'कुसुम', 'पेपुजी' जैसी कहानियों में दहेज प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाया गया है।

3. दलितों की समस्या

दलित हमेशा जाति व्यवस्था का शिकार रहा है। प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से दलितों की स्वतंत्रता और अधिकार केलिए लड़ते थे। दलित जीवन की त्रासदियों का मार्मिक अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में खूब मिलता है। लेखक समाज की इस व्यवस्था को बदलना चाहते थे। 'ठाकुर का कुआं', 'मंत्र', 'सौभाग्य के कोड़े', 'सद्गति' आदि कहानियाँ दलित जीवन की दर्दनाक दास्ताँ हैं। उस समय समाज में दलितों को इंसान नहीं समझा जाता था। उनको समस्त मानव अधिकारों से वंचित रखा जाता था। इन सबपर प्रेमचंद जी ने अपनी लेखनी चलाई है। तनतोड़ मेहनत करने के बावजूद भी एक वक्त भी भरपेट खाना नहीं खा पानेवाले अभावग्रस्त, तंगग्रस्त भारतीय आम जनता की वेदनाओं की ओर लेखक ने अपनी आँखें कभी भी नहीं मूँदा है।

4. पूँजीपतियों का अत्याचार

प्रेमचंद की अधिकांश कहानियाँ सामंतों और ज़मींदारों के अत्याचारों का खुला चित्रण करनेवाली हैं। पूँजीवादी व्यवस्था से पूँजीपतियों का जन्म हुआ। यह वर्ग सामन्तों और महाजनों की तरह लोगों को तंग करने लगे। आर्थिक लाभ के अलावा मानवता की अंश भी इन पूँजीपतियों में नहीं देखा जा सकता। ये दलितों के शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। अपनी रचनाओं में इस समस्या का भी उल्लेख प्रेमचंद जी ने की है। धार्मिक भेद-भाव के कारण समाज में विभिन्न वर्गों और जातियों का उदय हुआ। इस प्रकार विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं का भी उदय हुआ। प्रेमचंद के समय की सबसे बड़ी चुनौती थी सामन्तीय और ज़मींदारी व्यवस्था को ख़त्म करना। इन वर्गों से पीड़ित जनता की मुक्ति उस समय का बड़ा सपना था। गरीब हमेशा शोषित थे। सामंत और ज़मींदार वर्ग उनका शोषण करते रहते थे।

प्रेमचंद हमेशा इसके विरुद्ध आवाज़ उठाते थे। सामंतवाद पर घोर प्रहार करने वाली रचनाएँ है 'ठाकुर का कुआँ', 'रंगभूमी', 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'कायाकल्प' आदि।

5. कृषक जीवन

किसानों की ज़िन्दगी की यथार्थ स्थिति प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की अधिकांश रचनाओं में किसान वर्ग की वेदना का चित्रण हुआ है। उनकी उपन्यास 'प्रेमाश्रम' कृषक जीवन पर आधारित हिन्दी साहित्य की प्रथम रचना है। उनकी बहुचर्चित उपन्यास 'गोदान' तो कृषक जीवन की महाकाव्य कहा जाता है। किसानों की जीवन की हर समस्या की ओर प्रेमचंद जी ने अपनी लेखनी से प्रकाश डाला है। कृषक तनतोड़ मेहनत करते है लेकिन उसके फलों से वंचित रह जाते है। समाज की इन दोहरी नीति पर प्रेमचंद जी ने व्यंग्य कसा है। गरीब एवं अभावग्रस्त इन किसानों को धार्मिक पाखंडियों की भी नखरे झेलने पड़ते हैं। 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में धार्मिक लोगों की वजह से किसानों की दुर्दशा का चित्रण किया गया है। और कर्ज़ में डूबे किसान खेती छोड़ देने पर मजबूर भी होते है। और जमींदार एवं पूंजीपति उनके इन मजबूरीयों का भरपूर फायदा भी उठाते हैं।

प्रेमचंद जी की रचनाओं में किसान अपनी अस्तित्व केलिए एवं अपनी आजीविका केलिए लगातार अपनी परिस्थितियों एवं इन सामाजिक रूढ़ियों से लड़ते नज़र आते हैं। यही किसानों की जीवन की सच्चाई है। रामविलास शर्मा के शब्दों में, "प्रेमचंद के किसान देवता नहीं हैं, वे मनुष्य हैं। उनमें कमजोरियाँ हैं; वे उनसे लड़ते हैं। कभी जीतते है, कभी हारते हैं"।

प्रेमचंद का उपन्यास 'प्रेमाश्रम', 'रंग भूमी', 'गोदान' में किसानों का संघर्ष देख सकते हैं। कहानियों में 'पूस की रात', 'सवा सेर गेहूँ' आदि कृषक जीवन की यातनाओं का उदाहरण हैं।

6. शिक्षा का महत्व

प्रेमचंद यह जानते थे कि शिक्षा के बिना व्यक्ति की, समाज की और देश की उन्नति नहीं हो सकती। इसलिए अपनी रचनाओं में उन्होंने शिक्षा को स्थान दिया। 'नमक का दारोगा' नामक कहानी एक उदाहरण है। शिक्षा का लक्ष्य अच्छा इंसान बनना है न केवल आजीविका का साधन हाज़िल करना। अच्छा शिक्षा पाकर अच्छी नौकरी

पाकर समाज की सेवा करना है, साधारण जनता की उद्धारण करना है न कि पूँजीपतियों एवं सामंतों की तरह उनका शोषण करना। शिक्षा से इंसान को यह सीखना चाहिए कि अच्छा और ईमानदार कैसे बने और इस तरह की मानवीय गुणों का विकास कैसे करें। प्रेमचंद जी की रचनाओं की पढ़े-लिखे पात्र इन मानवीय गुणों से युक्त थे। और वे अपनी रचनाओं से समाज को यही संदेश देना चाहते हैं।

7. श्रमिकों का संघर्ष

समाज में मजदूरों की स्थिति दयनीय थी। दिन रात काम करने पर भी उन्हें भर पेट खाना नहीं मिलता। मज़दूरों की यथार्थ ज़िंदगी प्रेमचंद की 'पशु से मनुष्य', 'कफ़न' जैसी कहानियों में देख सकते है। कफन कहानी में घीसू और माधव यही पूछता है की अगर सब लोग इतना मेहनत करके भी आधा पेट सोता है तो मेहनत क्यों करे। अगर अपनी मेहनत का फल ही न मिले तो यूँ व्यर्थ में पिसना क्यूँ? इससे पता चलता है कि श्रमिकों का किस प्रकार शोषण होता था। किसान अपनी दुर्दशा के कारण श्रमिक बन जाते हैं। और तब भी इस उलझे सामाजिक स्थिति की वजह से बदकिस्मती उनका पीछा नहीं छोड़ता। तब भी उन्हें अपना जीवन में संघर्ष करना पड़ता है।

किसान केलिए खेती छोड़ना आत्महत्या जैसा है। लेकिन अपने परिवार केलिए उन्हें यह करना पड़ता है। लेकिन इतना बड़ा बलिदान देने पर भी उनकी जीवन में कोई सुधार नहीं आता। बल्कि ज़्यादा उलझनों में फँस जाते है। यहाँ तक की उनकी शोषण अगली पीढ़ी तक को नहीं छोड़ता। 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में प्रेमचंद जी हमें इस कड़वी सच्चाई से अवगत कराते हैं।

8. परम्परा और आधुनिकता में द्वंद्व

पाश्चात्य संस्कृति से आकृष्ट होकर भारतीय संस्कृति से दूर होने वाले भारतीयों पर भी प्रेमचंद अपना विचार प्रकट करते हैं। प्रेमचंद के अनुसार ग्रामीण संस्कृति से दूर होकर आधुनिक सुख-सुविधाओं से आकर्षित होने वाला हर व्यक्ति अपने आप से दूर चला जाता है। देशप्रेम से ओतप्रोत प्रेमचंद देशवासियों की पश्चिम प्रेम को देखकर दुःखी हो जाता है। और अपनी रचनाओं में पश्चिम की समस्याओं को उल्लिखित करके स्वदेश की महिमा बखानते हैं। उनकी रचनाओं में आधुनिकता एवं परंपरा का टकराहट देखने को मिलता है। पारिवारिक बातचीत में भी यह टकराहट नज़र आता है। इन दो विचारधाराओं की आपसी द्वन्द्व पारिवारिक संघर्षों तक पहुँचता है। और इसतरह लेखक अपनी विचारों को सामने रखता है।

प्रेमचंद की कहानी 'विषम समस्या' एक उदाहरण है। इसके नायक के घर में दो हलों की खेती है, हज़ारो लेन-देन होते हैं, कई भैंस भी हैं, लेकिन वह शहर में जाकर चपरासी का काम करता है। क्योंकि उसकेलिए खेती करना नहीं, बल्कि दफ्तर में काम करना और शहरीय जीवन बिताना बड़ी बात थी।

'सुहाग की साड़ी', 'विचित्र होली', 'यही मेरा वतन है' जैसी कहानियाँ भी उदाहरण हैं।

9. आर्थिक समस्याओं का चित्रण

तत्कालीन आर्थिक समस्याओं का खुला चित्रण प्रेमचंद की रचनाओं की एक और विशेषता है। समाज में व्याप्त भेद-भावों का एक मुख्य कारण आर्थिक परिस्थितियाँ थी। जाति व्यवस्था से उत्पन्न यह समस्या समाज को बुरी तरह निगल रहे थे। आर्थिक असमानता तत्कालीन समाज की सबसे बड़ी समस्या थी। अमीर और गरीब का फासला इतना बढ़ चुका था की गरीबों की जीवन पशु समान थी। आर्थिक विषमता के कारण किसानों को खेती छोड़कर मज़दूर बनना पड़ता था और कर्ज़ के तले दबे मज़दूर सीधा गुलाम बन जाता था। और यह गुलामी पीढ़ी से पीढ़ी पर थोपा जाता था। और इसी समय दूसरी ओर अमीरों के पास इतना धन इकट्ठा होता था कि उन्हें खुद नहीं पता चलता कि इस अतिरिक्त धन का क्या किया जाए। इस तरह आर्थिक समस्याओं ने आम जनता की ज़िंदगी को दुस्सह बना दिया। 'पूस की रात', 'सवा सेर गेहूँ', 'सद्‌गति', 'कफ़न' जैसी कहानियाँ उदाहरण हैं। रंगभूमि, निर्मला, कर्मभूमि जैसे उपन्यासों में भी आर्थिक समस्या का चित्रण है।

10. जनसाधारण की भाषा

आम जनता की भाषा में प्रेमचंद लिखते थे। उनकी रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग हुआ है। उनकी लेखनी सरल और सुलभ होती है, जिससे सामान्य लोग भी उनकी रचनाओं को समझ सकते हैं। उसमें ग्रामीण भाषा को अधिक स्थान दे दिया गया। ग्रामीण भाषा देश की संस्कृति को आगे बढाती है। समाज में विभिन्न वर्गों की भाषा उसी शैली में प्रस्तुत करने में निपुण है प्रेमचंद। 'पूस की रात', 'ठाकुर का कुआँ', 'कफ़न' जैसी अनेक कहानियों में हर

एक पात्र की भाषाशैली अलग है। 'रंगभूमी', 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला' जैसे उपन्यासों में भी यह देख सकते हैं। 'पूस की रात' कहानी में मुन्नी कहती है, "तुम छोड़ दो अब के खेती। मज़ूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी"। इस तरह आम जनता की भाषा को साहित्य में शामिल करने से उनकी जीवन स्थितियों से, उनकी परिस्थितियों से, देश, काल एवं वातावरण आदि की ज्ञान प्राप्त होता है। इस तरह वह रचना सफल होता है। और इस कला में प्रेमचंद जी निपुण थे।

11. समाज चिन्तक प्रेमचंद

कहानीकार और उपन्यासकार होने के साथ साथ प्रेमचंद साहित्य और समाज चिन्तक भी थे। उनकी रचनाएँ समाज के स्थिति के बारे में संवेदनशीलता का प्रतिष्ठान रखती हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक न्याय की प्रेरणा देती हैं और समाज में सुधार केलिए आवाज़ उठाती हैं। समाज के प्रति उनकी दृष्टि बहुत गहरी थी। समाज में सुधार की चाह उनकी हर रचना में नज़र आती है। समाज की असमानता, धार्मिक बिडम्बनाएँ, आर्थिक विपन्नता, अन्याय, अत्याचार, आदि को दूर करना उनका परम लक्ष्य था। अपनी लेखनी द्वारा समाज में परिवर्तन लाने में वह काफी हद तक सफल हुआ है। तत्कालीन वातावरण में साहित्यकारों का समाज में बड़ा दायित्व था। जिसको पूरा करने में प्रेमचंद जी सफल हुए थे। भारतीयों में स्वराज्य की आशय को बढ़ावा देने में भी प्रेमचंद जी का योगदान उल्लेखनीय है। समाज, साहित्य और भाषा संबंधी अपना विचार 'कुछ विचार' नामक निबंध संग्रह में संकलित है। प्रेमचंद के अनुसार, "जो भाव और विचार लोगों के हृदयों को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं।"(प्रेमचंद, 'कुछ विचार',पृ.8)

Critical Overview / अवलोकन

आम जनता की भाषा में आम जनता की समस्याओं को प्रस्तुत करने वाला सफल रचनाकार है प्रेमचंद। सच्चे समाज सुधारक के रूप में आप विख्यात हैं। उनकी रचनाओं में नारी के प्रति विशेष ममता देख सकते हैं। सरल भाषा का प्रयोग उनकी रचनाओं को जनसाधारण के निकट लाता भी है। अपनी रचनाओं में जनसाधारण की परिस्थितियों को यथार्थ ढंग से उन्होंने प्रस्तुत किया। इसलिए आपकी रचनाओं को तत्कालीन इतिहास कह सकते हैं। प्रेमचंद की रचनाएँ वर्तमान समाज में भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय के साथ चलने की प्रवृत्ति होने के कारण इसे समकालीन भी मान सकते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी के युग पवर्तक रचनाकार
- अपने समय के समाज की यथार्थ स्थिति का उल्लेख
- क्रान्तिकारी लेखक
- समाज सुधारक
- नारी के प्रति विशेष ममता
- किसानों, मज़दूरों और दलितों की समस्यायों का खुला चित्रण
- आम जनता की दर्दनाक ज़िंदगी पर बल
- सरल भाषा शैली
- तत्कालीन सामाजिक दुर्व्यवस्थाओं के खिलाफ लड़ाई

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. प्रेमचंद का असली नाम क्या है?
3. सबसे पहले प्रेमचंद किस नाम से लिखते थे?
4. किसानों की समस्याओं को प्रस्तुत करने वाली दो कहानियों के नाम?
5. नारी समस्या को चित्रित करने वाली कहानी का नाम लिखिए?
6. प्रेमचंद के दो उपन्यासों के नाम लिखिए?
7. प्रेमचंद की कहानी संग्रह का नाम क्या है?
8. 'रंगभूमी' कौन-सी साहित्यिक विधा है?
9. 'पूस की रात' कौन-सी साहित्यिक विधा है?
10. प्रेमचंद के निबन्ध संग्रह का नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. 31 जूलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के लमही ग्राम में हुआ
2. 'धनपत राय'
3. 'नवाबराय' नाम से
4. पूस की रात, सवा सेर गेहूँ
5. 'बड़े घर की बेटी', 'नरक का मार्ग'
6. 'रंगभूमी', 'निर्मला'
7. 'सोजेवतन'
8. उपन्यास
9. कहानी
10. 'कुछ विचार'

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद जी की सामान्य परिचय दीजिए।
2. प्रेमचंद जी की लेखन की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।
3. प्रेमचंद जी की देशप्रेम से संबंधित रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
4. प्रेमचंद जी की रचनाओं में किसानों की कैसी स्थिति रही है?
5. नारी को आदर और सम्मान देनेवाली रचनाएँ कौन कौन सी है?
6. सामंतों, जमींदारों एवं पूँजीपतियों का आम जनता के प्रति व्यवहार कैसा था?
7. वर्तमान समाज की आर्थिक स्थिति कैसी थी?
8. प्रेमचंद जी की लेखन के आधार पर उनकी व्यक्तित्व का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. 'प्रेमचंद और उनका युग' - रामविलास शर्मा
2. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', (सं) - डॉ. नगेन्द्र
3. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' - रामचंद्र शुक्ल
4. 'मानसरोवर' - प्रेमचंद
5. 'प्रेमचंद सम्पूर्ण रचनावली' - (सं)रामविलास शर्मा

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

प्रेमचंद की रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद की चर्चित कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन करता है
- प्रेमचंद के चर्चित उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन करता है
- प्रेमचंद की अन्य रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के विख्यात लेखक प्रेमचंद की अधिकांश रचनाएँ बहुचर्चित हैं। समाज के सभी जाति, वर्ग, वर्ण, धर्म, अर्थ, शिक्षा आदि अनेक भेद-भावों को मिटाना आपका जीवन लक्ष्य था। इसलिए ही अपनी रचनाओं में सब को स्थान दिया गया। स्त्री, दलित, बच्चा, बूढा, प्रकृति, पशु-पक्षियाँ आदि सबको प्रेमचंद की रचनाओं में स्थान दिया गया। यह विशेषता प्रेमचंद के उपन्यासों कहानियों और अन्य गद्य विधाओं में भी देख सकते हैं। तत्कालीन समाज में व्याप्त सभी कुरीतियों और विसंगतियों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करके एक नयी राष्ट्र संकल्पना की कोशिश भी वे करते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

औद्योगीकरण, बाज़ारीकरण, पूँजीवाद, किसान, श्रमिक वर्ग, आर्थिक अभाव, जाति भेद, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बाल विवाह, ऊँच-नीच भेद भाव, यथार्थवाद

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद की रचनाओं में उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, आदि विभिन्न विधाएँ आते हैं। प्रेमचंद जी ने कुल ग्यारह उपन्यास, करीब तीन सौ कहानियाँ (जो मानसरोवर नाम से आठ भागों में प्रकाशित है), तीन नाटक, अनेक निबंध आदि लिखे हैं। 'कुछ विचार' आपका निबंध संग्रह हैं। इसमें 11 निबंध संग्रहीत हैं। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे। महाजनी सभ्यता उनका अंतिम निबन्ध, साहित्य का उद्देश्य अन्तिम व्याख्यान, कफन अन्तिम कहानी, गोदान अन्तिम पूर्ण उपन्यास तथा मंगलसूत्र अन्तिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है।

प्रेमचंद की बहुचर्चित रचनाओं का अध्ययन हम कर चुके हैं। यहाँ प्रेमचंद की अन्य चर्चित रचनाओं का अध्ययन होगा। प्रेमचंद जी की कुछ उपन्यासों एवं कहानियों का अध्ययन इसमें किया जाएगा।

प्रेमचंद के उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद के अनुसार 'उपन्यास' मानव चरित्र का चित्र है। उपन्यास के मूल तत्व की चर्चा करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं, "मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"(कुछ विचार, 'उपन्यास, पृ.47)

प्रेमचंद के उपन्यास समाज की दुर्व्यवस्थाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। शुरुआत में वे शुद्ध आदर्शवादी

थे। जिन समस्याओं का उल्लेख वे करते थे उसका समाधान भी वे उसी उपन्यास में दर्शाते थे। लेकिन आगे चलकर समाज की कड़वी सच्चाई उन्हें इतना प्रभावित कर लिया कि वे घोर यथार्थवादी बन गए। इसलिए वे यथार्थवाद पर बल देते हैं। यह प्रेमचंद जी की उपन्यासों से गुज़रने पर हम देख सकते हैं।

'सेवासदन' प्रेमचंद की प्रथम हिन्दी उपन्यास है। 'सेवासदन' के पूर्व प्रेमचंद द्वारा लिखित सभी उपन्यासों की लेखन-तिथि तथा संख्या कम विवादास्पद रही है। प्रेमचंद का सबसे पुराना उपन्यास 'असरारे मआबिद' बनारस के उर्दू साप्ताहिक 'आवाज ए-खल्क' में 1905 में धाराप्रवाह प्रकाशित हुआ था। हिन्दी साहित्य-जगत् केलिए प्रेमचंद का यह उपन्यास अज्ञात था। इस उपन्यास में एक महन्त और उसके विलासमय, कुत्सित जीवन चित्रित किया गया है। यह उपन्यास प्राचीन फारसी शैली में रचा गया है, स्थानों, दृश्यों और वस्तुओं के वर्णन भी फारसी काव्यों की शैली में हैं।

प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'प्रेमा' (दो सखियों का विवाह) सन् 1907 ई में प्रकाशित हुआ। यह उनका पहला हिन्दी उपन्यास है। यह उर्दू में प्रकाशित उन्हीं का 'हमखुर्मा व हमसवाब' का हिन्दी तर्जुमा है। विधवा-विवाह ही इस उपन्यास का प्रतिपाद्य है।

प्रेमचंद के उपन्यास-लेखन का उत्कर्षकाल 1918 ई. से 'सेवासदन' के प्रकाशन से शुरू होता है। इसकी लेखन-तिथि की निश्चित सूचना नहीं मिलती। परंतु यह बात निर्विवाद है कि 'बाज़ारे हुस्न' नामक अपने उर्दू उपन्यास का अनूदित रूप ही प्रेमचंद ने 'सेवा सदन' नाम से प्रकाशित किया था । सन् 1918 ई. के लगभग अंत में 'सेवासदन' कलकत्ता से प्रकाशित हो गया।

प्रेमचंद ने कुल बारह उपन्यासों की रचना की है। उसमें सबसे प्रमुख 'गोदान' मानी जाती है। 'गोदान' उनकी ग्यारहवीं एवं अंतिम पूर्ण उपन्यास है। उनकी बारहवीं उपन्यास 'मंगलसूत्र' अपूर्ण रहा। उसी के बीच में उनका देहांत हो गया था। और उस उपन्यास को उनकी बेटे अमृत राय ने पूरा किया।

सेवासदन

प्रेमचंद के बहुचर्चित उपन्यासों में एक है 'सेवासदन'। विषयों की विविधता इस उपन्यास को ख़ास बनाता है। वेश्या जीवन, स्त्री शिक्षा, दहेज प्रथा आदि इनमें से कुछ हैं। भारतीय नारी की पराधीनता इसकी मुख्य समस्या है। भारत की पुरानी आदर्श नारी परम्परा को तोड़कर आधुनिक नारी की पराधीनता और विवशता इसमें प्रस्तुत हुई हैं।

इसकी नायिका है 'सुमन'। वह एक सुन्दर और अच्छे स्वभाव की लडकी है। साथ ही आत्म सम्मान को जीवन या प्राण मानती है। उसकी पिता कृष्णचन्द्र थानेदार है। उसकी माँ चाहती थी कि उसकी शादी बचपन में ही करा दिया जाय। यह इसलिए कि वे इस तरह विवाह की बोझ से मुक्त हो जाये। लेकिन यहाँ पिताजी अपनी बेटी की शादी छोटी उम्र में कराना नहीं चाहता है। यहाँ आधुनिक विचारधारा से संपन्न एक पुरुष को हम देख सकते है। नारी के जीवन में महत्वपूर्ण पहलू शादी मानने वालों के सामने पिताजी प्रश्न चिह्न बनकर खड़ा है।

लडकी को स्वर्ण और धन के बल पर माप-तोल करने वालों की ओर भी इशारा करते हैं प्रेमचंद। शिक्षित लोग भी इससे भिन्न नहीं। एक ओर ये लोग दहेज की कुप्रथा को बुराई कहते हैं। दूसरी ओर उस कुप्रथा को कायम रखने केलिए बहाने ढूँढ लिया करते हैं। यह आज भी प्रासंगिक है। शिक्षित नौजवान नौकरी को अपना सबसे बड़ा लक्ष्य मानते हैं। अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने केलिए उसको हिम्मत नहीं। आज के वर्तमान नौजवान भी इससे भिन्न नहीं। समाज की एक बड़ी त्रासदी दिखाने वाली प्रेमचंद की दूरदर्शिता यहाँ देख सकते हैं।

प्रेमचंद ग्रामीण ज़िन्दगी की विशेषता दिखाने के साथ-साथ सामाजिक दुर्व्यवस्थाओं के खिलाफ भी सजग है। भारतीय जाति व्ययस्था का खुला चित्रण प्रस्तुत करके सामन्तीय और ज़मींदारी व्यवस्था पर व्यंग्य भी करते हैं। इसलिए किसान और श्रमिक वर्ग के मेहनत का फल ये लोग पाते हैं।

सुमन की शादी एक गरीब आदमी के साथ कर लिया जाता है जिसके साथ सुमन अच्छे से नहीं रह पाती। इस तरह अनमेल विवाह का दुष्परिणाम भी पेश करते हैं। नारी की पराधीनता के कटु अनुभव सुमन को हुआ था। वह समझती है कि अपने घर में स्त्री हमेशा दासी बनकर रहती है और पति स्वामी बनकर। इसी कारण सुमन का शंकालू पति 'गजाधर' सुमन को अपने घर से निकाल

देता है। सुमन स्वाभिमानी होने के कारण घर छोड़ देती है। तब से पूरा समाज उसपर सन्देह करता है।

उपन्यास में 'भोली' नामक एक वेश्या को प्रस्तुत करके वेश्याओं की ज़िन्दगी की समस्याओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट करते हैं। सुमन की राय में समाज में स्त्री की कोइ इज़्ज़त नहीं है। अगर इज्ज़त मिली तो वह वेश्या 'भोली' को ही मिला था। वेश्या को मिलने वाले सम्मान एक घरवाली औरत को न मिलने के बारे में सुमन सोचती रहती है। इस सम्बंध में प्रेमचंद कहते हैं "अन्त में वह इस परिणाम पर पहूँची कि वह स्वाधीन है, मेरे पैरों में।"

आगे सन्देही समाज और सामाजिक व्यवस्थाएँ सुमन को भी वेश्या बना देती है। एक स्त्री के वेश्या होने के पीछे का कारण सामाजिक व्यवस्थाएँ ही हैं। भोली इस सबंन्ध में कहती है, "मेरे माँ-बाप ने भी मुझे एक बूढ़े मियाँ के गले में बाँध दिया था।.....मैंने किसी तरह छः महीने तो काटे, आखिर निकल खडी हुई।" अतः भोली भी अनमेल विवाह का शिकार है।

प्रेमचंद यहाँ नारी की पराधीनता के मुख्य कारण के रूप में समाज को मानते हैं और इसका समाधान भी देते हैं। सुमन के पति को बाद में पश्चाताप होता है। प्रेमचंद इस उपन्यास के माध्यम से नारी की पराधीनता पर प्रकाश डालना चाहते हैं। इसकी नायिका 'सुमन' आत्मसम्मान की रक्षा करने केलिए संघर्ष करने वाली स्त्रीयों का प्रतीक है।

प्रेमाश्रम

प्रेमाश्रम प्रथम महायुद्ध के बाद लिखा गया उपन्यास है। प्रेमचंद ने सेवासदन की अपेक्षा प्रेमाश्रम में नारी समस्या का और कटु रूप प्रस्तुस किए हैं। भारतीय किसान का संघर्ष पूर्ण जीवन पर भी प्रकाश डालते हैं। साथ ही ज़मींदारो और सामन्तों के अत्याचारों के खिलाफ भी संकेत करते हैं। ज़मींदार वर्ग हमेशा अंग्रेज़ो के साथ मिलकर किसानों और मजदूरों को तंग करते थे।

रामविलास शर्मा के शब्दों में, "प्रेमचंद ने यहाँ बड़ी खूबी से दिखला दिया कि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई से ज़मींदारो के विरुद्ध संघर्ष का क्या सम्बन्ध था। प्रेमचंद ने दिखलाया कि ज़मीन के वास्तविक स्वामी किसान हैं जब कि उसके मालिक बन बैठे है अंग्रेज़ और उनके दलाल।" (रामविलास शर्मा, 'प्रेमचंद और उनका युग',पृ.42)

हिन्दी साहित्य में किसानों पर लिखा गया पहला उपन्यास है 'प्रेमाश्रम'। रामविलास शर्मा के अनुसार, "'प्रेमाश्रम' किसान-जीवन का महाकाव्य है।" यह लखनपुर गाँव की कहानी है। इसके प्रमुख पात्र हैं, 'मनोहर', 'बलराज', 'कादिर', 'दुखरन' आदि। बलराज एक शिक्षित क्रांतिकारी किसान है। किसानों के अधिकारों केलिए संघर्ष करने केलिए तैयार भी है। बलराज मनोहर का बेटा है।

ज्ञानशंकर, गौसखां, पुलीस आदि खलनायक हैं। ज्ञानशंकर खुद जमींदार है और ज़मींदार जटाशंकर का पुत्र भी है। जटाशंकर की अपेक्षा ज्ञानशंकर ज्यादा बदनाम था। ज्ञानशंकर केलिए पैसा ही इज्ज़त है। ज्ञानशंकर अपने वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। वह एक कपटी, छली, कायर और निर्दय ज़मीन्दार है। लखनपुर के किसानों का मुख्य दुश्मन भी है।

प्रेमाश्रम का स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों से बन्धित रहना नहीं चाहती। आत्म सम्मान के साथ जीनेवाली औरतों का प्रतीक है 'विलासी'। विलासी कहती है "मैं विधवा हो गयी तो क्या, घर सत्यानाश हुआ तो क्या, किसी के सामने आँख तो नीची नहीं हुई।"

उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद यह साबित करना चाहते हैं कि आम जनता या श्रमिक वर्ग की उन्नति से देश की उन्नति होगी। किसान, मज़दूर, स्त्री, पुरुष सब देश के ही हिस्से हैं। देश की उन्नति केलिए इन सब की उन्नति ज़रूरी है।

निर्मला

नारी समस्या पर बल देकर लिखे गये उपन्यास हैं 'निर्मला'। स्त्री-पुरुष के रिश्ते का खोखलापन, पति-पत्नी का रिश्ता, प्रेम और लड़ाई आदि मध्यवर्गीय लोगों की ज़िंदगी की यथार्थ स्थिति का चित्रण इस उपन्यास में देख सकते हैं। 'निर्मला', उदयभानुलाल और कल्याणी, भालचन्द्र और रंगीलीबाई, डाक्टर और सुधा, तोताराम और निर्मला आदि दम्पति की ज़िंदगी की कहानी है। निर्मला इस उपन्यास की नायिका है। दहेज प्रथा और अनमेल विवाह का शिकार भी है।

उदयभानुलाल ने अपनी ज्येष्ठ कन्या निर्मला का विवाह भालचंद सिन्हा के बेटे भुवन के साथ तय करते हैं। शादी की तैयारियाँ जारी थी कि दुर्भाग्य से उदयभानुलाल की हत्या हो जाती है। डाक्टर निर्मला से शादी करने से इंकार कर देता है। कल्याणी चाहती तो बेटी का विवाह थोड़ा-

बहुत दहेज देकर किसी युवक के साथ करा सकती थी। परन्तु उसने दहेज के डर से निर्मला का विवाह चालीस साल के अधेड़, तीन बच्चों के बाप, वकील तोताराम से करा देती है।

पति-गृह में निर्मला को रुपए-पैसे, नौकर-चाकर, खान-पान सभी सुख प्राप्त है। अच्छी नहीं लगती तो दो बातें। एक बाप की उम्र के तोताराम के मूँह से प्यार और विनोद की बातें। और दूसरी ननद रुक्मणी की झिकझिक। निर्मला घर का मालकिन बन गई, इससे जलकर रुक्मणी हर दिन कोई न कोई गृहकलह खड़ा कर देती है। बच्चों को नई अम्मा के विरुद्ध भड़काती है।

तोताराम के तीन बेटे थे। पहला बेटा मंसाराम निर्मला का समवयस्क था तो निर्मला को उसकी बातें सुनना अच्छा लगता था। लेकिन यह तोताराम शक की नज़र से देखने लगा और बेटे को हॉस्टल भेज दिया गया। इन सब बातों से वह दुःखी होकर मर गया। लेकिन जाते जाते निर्मला को माता कहकर पिता की शक दूर कर दी। बेटे की मृत्यु के बाद तोताराम टूट गया और काम में मन नहीं लगा और इस तरह आर्थिक समस्या शुरू हो गई। डॉक्टर भुवन ने मंसाराम का इलाज किया था। निर्मला की हालत देखकर उसने अपने भाई की शादी निर्मला की छोटी बहन से करवा दी। उसके बाद भुवन और सुधा की बेटे का मृत्यु हो जाता है।

यहाँ आर्थिक समस्या होने पर तोताराम का दूसरा बेटा जियाराम निर्मला की गहने चोरी करता है और पकड़े जाने के डर से आत्महत्या करता है। इसके बाद निर्मला कठोर बन गई और तीसरे बेटे सियाराम से बाज़ार आने जाने का काम करवाती है। एक सौदे केलिए तीन तीन बार भगाती है और डाँटती भी है। इस से तंग आकर सियाराम घर छोड़कर भाग जाता है। अपनी परिवार की इस हालत केलिए निर्मला को जिम्मेदार ठहराते हुए तोताराम भी घर छोड़ देता है।

निर्मला का दुर्भाग्य का यही अंत नहीं हुआ। मन अशांत हुआ तो उसने एक दिन डॉक्टर भुवन के घर अपनी सहेली सुधा से मिलने गई। और सुधा वहाँ नहीं थी। और डॉक्टर भुवन निर्मला से बातें की तो निर्मला रोती हुई घर से निकल भागी और यह सुधा ने देख ली, इस बात पर भुवन और सुधा के बीच झगड़ा हुआ और भुवन ने ज़हर खाकर आत्महत्या कर ली।

इसी बीच में निर्मला ने एक बेटी को जन्म दी जिसका नाम आशा रखा गया। फिर निर्मला शय्याशयी हो गई और उसके प्राण पंखेरू अपने स्वर्ग नीड़ की ओर उड़ गए। तब एक ओर समस्या सामने आई कि दाह-संस्कार कौन करेगा? तभी एक वृद्ध वहाँ आ पहुँचा। वह तोताराम था।

यह है निर्मला का कथानक। दहेज और अनमेल विवाह के दुखांत को दिखाना प्रेमचंद का उद्देश्य था। उद्देश्य-प्रधान होने के कारण प्रेमचंद अपनी नायिका निर्मला के साथ बहुत कठोर हुए दिखाई देते हैं। डाक्टर और सुधा की कहानी मुख्य कथा के साथ लगी हुई है। केवल पंडित मोटेराम के प्रसंग में हास्य का पुट है। उपन्यास में एक के बाद एक हत्या और मृत्यु का चक्र चलता है। परंतु नायिका अंत तक धीरता से सब कुछ सहती है और ज़माने का खरा विष पी लेती है। इस प्रकार प्रेमचंद ने निर्मला में एक असाधारण नारी को उजागर किया है। कथानक रोचक है और कई स्थल मार्मिक हैं।

गोदान

10 जून 1936 में 'गोदान' का प्रकाशन हुआ। प्रेमचंद की अन्य उपन्यासों की भाँति 'गोदान' में भी विविध समस्याओं, जैसे अछूतों की समस्या, जमींदारी प्रथा, किसानों का शोषण, वैवाहिक समस्यायें, वेश्या समस्या, संयुक्त परिवार की समस्या आदि को अभिव्यक्त किया है। इसमें प्रेमचंद का व्यक्तित्व अत्यंत स्पष्ट है। श्री. नित्यानंद पटेल के अनुसार - 'जीवन में जो कुछ वह आरंभ से अंत तक सोचते-विचारते आए, जिन तत्वों, विचारों, सिद्धान्तों और आदर्शों को उन्होंने अपनाया, जो उनका जीवन दर्शन बना, वह सब 'गोदान' में प्रकट हुआ है। ग्रामीण समाज का चित्रण करना ही उपन्यास का मुख्य ध्येय है। धर्म के विकृत रूप, किसानों पर किए गए अत्याचारों का चित्रण आदि का सुन्दर और सजीव वर्णन इसका मुख्य अंश है। 'गोदान' के अधिकांश पात्र विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। होरी किसान है, पत्नी धनिया साहसी है, बेटा गोबर और बेटियाँ हैं रूपा और सोना। झिंगुरी, पटेश्वरी, सहुआइन, मँगरु तथा नोखेराम किसानों के शोषक भी हैं। ज़मींदार राय साहब, पूँजीपति खन्ना, मिस मालती, प्रेफ़ेसर मेहता आदि नगर जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन भी करते हैं। इस प्रकार नगर जीवन और ग्राम जीवन से संबंधित सभी पात्र अपनी सबलता और दुर्बलता के साथ

इसमें उपस्थित हैं।

'सेवासदन' में वेश्यावृत्ति के कारण और वेश्या समस्या का गहराई से विवेचन-विश्लेषण किया गया है। इसके बाद उन्होंने 'गोदान' में इस समस्या के आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। वे कहते हैं वेश्यावृत्ति को रोकने केलिए 'ज़ड पर जब तक कुल्हाड़ी न चलेगी, पत्तियाँ तोडने से कोई नतीजा नहीं।' 'गोदान' की स्वाभिमानी गोविन्दी, अपने पति खन्ना की पशुता और अमानुषिक व्यवहार से ही घर छोडकर बाहर जा खड़ी हुई। यदि डॉ. मेहता उसे समझा-बुझाकर फिर घर न ले आते तो बात और होती। लेकिन 'सेवासदन' की सुमन वेश्यावृत्ति द्वारा ही जीवन निर्वाह करने को बाध्य होती है। यदि सुमन की तरह गोविन्दी भी जीवन निर्वाह में असमर्थ होती तो, उसकी क्या दुर्गति होती, कहा नहीं जा सकता। उनके अनुसार स्त्री को घर में स्नेह सम्मान मिल जाय तो, वह भोग लालसा को भी बडी आसानी से काबू में रख सकती है। वे विकास क्रम में स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ समझते हैं। 'गोदान' के पूर्वार्द्ध में मालती के चरित्र में विलास-वैभव, फैशन, चंचलता, पश्चिमी रीति-रिवाज़ का अनुकरण आदि सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं, परंतु पश्चार्द्ध में प्रो. मेहता के संपर्क में आने पर भारतीय नारी मालती को दिखाया गया है। इस प्रकार एक ओर वैभव विलास-समृद्धि के चित्रण है तो दूसरी और दीन-दुःखी, पीडित, शोषित, भूखे- रोगी लोगों के चित्रण भी हैं।

'गोदान' के पात्रों में होरी, मेहता, गोबर आदि वर्ग चेतना से भरपूर हैं। सामाजिक वैषम्य पर राय साहब और मिर्जा खुर्शिद आत्म-विश्लेषण भी करते हैं। प्रेमचंद की मानव मूर्ति मेहता श्रमिक वर्ग, मिल मालिक पर ही नहीं, नारी की सामाजिक विषमता पर विचार व्यक्त करते हैं और विषमता को जन्म देनेवाली पारम्परिक व्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति कटु आलोचक के रूप में उभरते हैं। शोषण का विशद चित्रण और आर्थिक मीमांसा इस उपन्यास में पराकाष्ठा पर है। होरी का अंत कृषक के परंपरागत ग्रामीण जीवन का अंत है।

धनिया हिन्दू समाज की विषमता की वह शोषित पात्र है, जो अपने मानवीय मूल्यों पर अड़िग है। गोबर जब भोला अहीर की विधवा लड़की झुनिया को गर्भवती के रूप में अकेला छोड़कर भाग जाता है तो होरी समाज के भय से उसे अपने घर में जगह नहीं देना चाहता लेकिन मानव-भावना से पूर्ण धनिया ने न केवल उसे अपने घर में जगह ही दी बल्कि सारे गाँव समाज से लोहा लिया। अस्तित्व संकट को भी धनिया, होरी के समान ही गहराई से अनुभव करती है, होरी इस संकट को झेलता हुआ सभी शोषण-अत्याचार को चुपचाप सहन करता चलता है, वहाँ धनिया सभी शोषक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करती रहती है।

होरी की त्रासदी को शहरी गोबर के साथ रखकर देखें तो स्पष्ट होता है कि गोबर बेलारी गाँव से भागकर लखनऊ शहर पहुँचता है और चाय की दूकान खोल देता है। इस प्रकार धनी बन जाता है। डॉ. कमल किशोर गोयंका के शब्दों में - 'होरी और गोबर में यद्यपि पीढियों का अन्तर तो है ही, परंतु गाँव और शहर में रहने का भी अन्तर है। होरी यदि गोबर के समान या उसके साथ लखनऊ शहर जाकर मज़दूरी करता तो बेलारी जैसी त्रासदी नहीं होती और यदि गोबर होरी के साथ ही बेलारी गाँव में रहता, तब उसे भी होरी जैसी भयानक परिस्थितियों एवं त्रासदी का सामना करना पड़ता। होरी केलिए उसकी ज़मीन, उसके गाँव और ग्रामीण जीवन का अलावा कोई विकल्प नहीं है, उसी में जीवन है और उसी में मर जाना है, लेकिन गोबर ने शहर को स्वीकार कर लिया है और वह होरी के कृषक-कुल से नाता तोड़कर शहर का मज़दूर बन गया है। होरी का जीवन त्रासदी से भरा है, वह स्वयं शहरी सभ्यता से बचता है। होरी का कृषक-कुल उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाता है, लेकिन गोबर होरी बनकर जीने को तैयार नहीं है वह शहर का बन जाता है ।

इस प्रकार गोदान में एक ओर रीति-रिवाज़, खान-पान, शादी-विवाह, रूढि-परंपरा से चिपटे हुए लोगों के चित्र हैं तो दूसरी ओर परंपराओं ओर आडंबरों के प्रति विरोधात्मक भाव है। अन्याय-अत्याचार को चुपचाप सह लेने की प्रवृत्ति एक ओर है तो दूसरी और अन्याय-अत्याचार के प्रति रोष-क्षोभ, क्रोध-विद्रोह की अभिव्यक्ति है। 'गोदान के संबंध में डॉ. त्रिभुवन सिंह का कथन द्रष्टव्य है 'एक ही उपन्यास गोदान के अन्दर जन-जीवन तथा समाज अथवा देश की धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के जितने विविध चित्र लेखक ने समेटकर यथार्थ रूप में चित्रित किये हैं उतने चित्र संपूर्ण उपन्यास-साहित्य में ढूँढने पर ही मिलेंगे और एक ही स्थान पर मिलना तो असंभव

ही है। 'गोदान' ग्रामीण जीवन के वास्तविक पक्ष का गद्यात्मक महाकाव्य है। इस उपन्यास के अन्दर प्रेमचंदजी ने जीवन और जगत् के विविध क्षेत्रों का तदवत् चित्र, अपने जीवन के संपूर्ण अनुभवों से उतारना चाहा है, और लेखक को वैसी ही सफलता मिली है, यही इस उपन्यास की सबसे बड़ी यथार्थता है। लेखक ने अपने जीवन की अन्तिम रक्त-बूंद तक जो संघर्ष परिस्थितियों के साथ किया था, 'गोदान' उसी की सच्ची कहानी है।

प्रेमचंद की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद की प्रतिभा कहानी-कला में खिल उठी। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं। उनका कहानी साहित्य इतना व्यापक एवं समृद्ध है कि समूचा एक युग समा गया है। प्रेमचंद के कहानी साहित्य को तीन विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है।

1. प्रारंभिक अवस्था (1907-1920)
2. मध्यम अवस्था (1920-1930)
3. अंतिम अवस्था (1930-1936)

उनकी कहानी कला केवल वस्तु के स्तर पर ही विकसित नहीं वरन् कलात्मक-स्तर पर भी विकसित हुई। प्रेमचंद ने पुरातन भारतीय चेतना से लेकर प्रायः समस्त आधुनिक पश्चिमी भावधाराओं को अपनी कृतियों में समाहित किया है। जो काम बँगला कहानी साहित्य में टागोर ने किया वही काम हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद ने किया। 'सप्त सरोज' (1917) की कहानियों से लेकर 'मानसरोवर प्रथम भाग' (1936) की कहानियों की रचना विधान की दृष्टि से विविध राजनीतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा है। इन परिस्थितियों ने उनके भाव पक्ष को उज्ज्वल बनाया।

यह बताया जा चुका है कि सन् 1900 ई में 'सरस्वती' के प्रकाशन से हिन्दी में कहानी का आधुनिक रूप प्रकट हुआ था। प्रेमचंद ने 1901 ई. में उर्दू में पाँच कहानियों का संग्रह 'सोजेवतन' नाम से प्रकाशित किया। लेकिन सरकार ने इसे जब्त कर लिया। तत्पश्चात् प्रेमचंद ने मज़दूर और किसान को अपने साहित्य के केन्द्र में स्थान दिया। बाल-विवाह, बहुविवाह आदि सब सामाजिक विकृतियों के खिलाफ उनका तीव्र आन्दोलन था। इनकी सभी सामाजिक कहानियाँ तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश करती हैं।

1920-30 काल की कहानियों में सत्य और सुन्दर के सामंजस्य को प्रधानता दी गई है। प्रारम्भिक कहानियों में प्रेमचंद आदर्श की स्थापना में दिलचस्प रहे। परन्तु बाद में वे यथार्थोन्मुख हुए। स्वयं प्रेमचंद ने बताया 'हम ने इन कहानियों में आदर्श को यथार्थ से मिलाने की चेष्टा की है।' उनका यह आदर्शोन्मुख यथार्थवाद गाँधीवाद से प्रभावित है। 'सत्याग्रह', 'ब्रह्मा का स्वांग', 'महातीर्थ', 'जेल' आदि इसकेलिए श्रेष्ठ उदाहरण है। 'मैकू' में मद्यनिषेध का सन्देश है। इस प्रकार ऊपर बताई सभी कहानियों की शिल्प-विधि आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की बुनियाद पर विकसित की गई है।

प्रेमचंद की कहानियों का भाव पक्ष अत्यंत उज्ज्वल है। सामान्यतः इनकी कहानियों का भाव ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, व्यक्तिगत स्तरों में फैला हुआ है। अपने प्रारंभिक काल में उन्होंने 'रानी सारंघा', 'राजा हरदौल', 'मर्यादा की वेदी', 'जुगनू की चमक' आदि कहानियाँ ऐतिहासिक तथ्य तथा संवेदना से लिखी।

मुस्लिम शासन काल के वैभव, ऐश्वर्य और पतन के भावपक्षों से 'शतरंज के खिलाडी', 'दिल की राणी', 'लैला' आदि कहानियों की रचना की। 'सुहाग की साडी', 'सत्याग्रह', 'तांवान', 'विचित्र होली', 'अनुभव' आदि कहानियाँ राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत हैं। 'ठाकुर का कुआँ', दूध का दाम', 'सद्गति', 'मन्दिर' आदि कहानियों में अछूतोद्धार की आवाज़ है तथा गाँधीवाद को भी स्पष्ट किया गया है।

'सद्गति', 'दुर्गा का मन्दिर', 'सफेद खून', 'वेश्या', 'ठाकुर का कुआँ' आदि सर्वोत्कृष्ट व्यंग्यात्मक और संवेदनात्मक कहानियों में अछूत समस्या, वेश्या समस्या आदि सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया गया है। वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित पति-पत्नी, विधवा विवाह, अंतर्जातीय-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहुविवाह आदि बातों की चर्चा क्रमश : 'शान्ति', 'धिक्कार', 'बालक', 'कायर', 'नरक का मार्ग' और 'सौत' कहानियों में की गई है। अंधविश्वास और साधु समस्या के विरोध में प्रेमचंद ने 'सुभागी', 'केसर', 'भूत', 'मनुष्य का परम धर्म', 'गुरु का मंत्र' आदि कहानियाँ लिखीं। 'शंखनाद' में संयुक्त परिवार की समस्याएँ चित्रित की गई हैं।

लेखन में प्रवेश करते समय प्रेमचंद आदर्शवादी थे।

कर्तव्य, त्याग, प्रेम, न्याय, मित्रता, देश सेवा आदि मानव धर्मों की प्रतिष्ठा ही उनकी कई कहानियों में की गई है। असत् पर सत् की विजय दिखाकर प्रेमचंद ने आदर्श की स्थापना की है। 'बड़े घर की बेटी', 'पंच परमेश्वर', 'नमक का दारोगा', 'परीक्षा', 'उपदेश' आदि कहानियों में सत्य की विजय दर्शायी गई है। अपने विकास काल की कहानियों में उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थ की स्थापना की है। 'ईश्वरीय न्याय', 'धर्म संकट', 'लालफीता', 'आत्माराम' आदि कहनियाँ मनोवैज्ञानिक पक्ष लिए हुए यथार्थ पर आधृत है। कहानी का अंत आदर्शोन्मुख है। इस काल की कुछ कहानियों में विरुद्ध यथार्थवाद अभिव्यंजित किया गया है। 'बूढी काकी', 'शतरंज के खिलाडी', 'वज्रपात' आदि कहानियाँ यथार्थवादी हैं।

उत्कर्ष काल में प्रेमचंद का दृष्टिकोण यथार्थवाद पर स्थिर हो गया। 'कफन', 'नशा', 'पूस की रात', 'मिस पद्मा', 'कुसुम' आदि कहानियाँ उनके यथार्थवादी दृष्टि कोण स्पष्ट करती हैं। इस प्रकार प्रेमचंद आखिर यथार्थ की भूमि पर जम गए।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद जी हिन्दी साहित्य की वह महान हस्ती है जिन्होंने हिन्दी साहित्य की नक्शा ही बदल डाली। हिन्दी की कहानी साहित्य एवं उपन्यास साहित्य में उन्होंने क्रांति ही मचा दी। परवर्ती साहित्यकार भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चलने लगे। हिन्दी साहित्य के श्रीवृद्धि में उनका योगदान अतुलनीय है। समाज की हर क्षेत्र की ओर उन्होंने ध्यान दिया है। अमीर से गरीब तक, पढे-लिखे लोगों से अनपढ़ तक, बड़े बड़े अफ़सरों से किसान-मज़दूर तक हर किस्म के लोगों की ज़िंदगी एवं उनमें आनेवाले बदलाव आदि से वे अवगत रहे और इन चीजों को अपनी रचनाओं में शामिल भी की। कहानीयों एवं उपन्यासों में आम जनता की जीवन को उसी मार्मिकता एवं संवेदना के साथ ही प्रस्तुत की। उनकी लेखन की शुरू से लेकर अंत तक उन्होंने आम जनता की जीवन को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत की और शुरुआती दौर में आदर्श को अपनाते हुए हर समस्या का हल निकालते रहे। लेकिन बाद में जब यथार्थ की पचाट खाकर उनका अंतर्मन बिलखने लगा तो वे घोर यथार्थवादी बन गए और यह उनकी अंतिम रचनाओं में हम देख सकते हैं।

रामविलास शर्मा के शब्दों में, "प्रेमचंद के दृष्टिकोण की खूबी इस बात में है कि वह समाज में इस बात को देख सकते हैं कि कौन सी चीज़ मर रही है और कौन सी चीज़ उग रही है। वह समाज को गतिशील क्रम के रूप में देखते हैं।"

Recap / पुनरावृत्ति

- कहानी सम्राट और उपन्यास सम्राट नाम से प्रेमचंद विख्यात है।
- कहानियों एवं उपन्यासों में विभिन्न विषयों का उल्लेख उनकी विशेषता है।
- विकास क्रम में रचना शैली एवं विषय चयन में आए परिवर्तन।
- आम जनता की ज़िंदगी से सटकर रहनेवाली रचनाएँ
- प्रथम उपन्यास - सेवासदन - वेश्या जीवन, अनमेल विवाह आदि का चित्रण।
- प्रेमाश्रम - किसानों के बारे में लिखा गया हिन्दी का प्रथम उपन्यास।
- निर्मला - अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, नारी जीवन आदि।
- गोदान - अंतिम पूर्ण उपन्यास है। इसे कृषक जीवन की महाकाव्य कहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद जी की प्रथम हिन्दी उपन्यास?
2. किसानों के बारे में लिखा गया प्रथम हिन्दी उपन्यास?

3. तोताराम किस उपन्यास का पात्र है?
4. सेवासदन उपन्यास की उर्दू रूप का नाम?
5. प्रेमचंद जी की अपूर्ण उपन्यास का नाम क्या है?
6. मंगलसूत्र उपन्यास को किसने पूरा किया?
7. प्रेमचंद जी की किस उपन्यास को 'कृषक जीवन की महाकाव्य' कहा जाता है?
8. गोदान की प्रमुख पात्र कौन है?
9. प्रेमचंद जी की कहानियों का संग्रह का नाम क्या है? उसे कितने भागों में प्रकाशित किया है?
10. प्रेमचंद जी की अंतिम कहानी कौनसी है?

Answers / उत्तर

1. सेवासदन
2. प्रेमाश्रम
3. निर्मला
4. बाज़ारे हुस्न
5. मंगलसूत्र
6. अमृत राय
7. गोदान
8. होरी
9. मानसरोवर, आठ
10. कफन

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद की कहानी साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।
2. प्रेमचंद की उपन्यासों के आधार पर उनकी व्यक्तित्व की आलोचना कीजिए।
3. प्रेमचंद जी की कहानियों की विषय वैविध्य पर टिप्पणी लिखिए।
4. प्रेमचंद जी की प्रमुख उपन्यासों की परिचय देकर उसकी आलोचना कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपाल राय
3. प्रेमचंद सम्पूर्ण ग्रंथावली - संपादक : रामविलास शर्मा
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र
5. प्रेमचंद की कहानियाँ : सामाजिक परिप्रेक्ष्य - धर्मवीर भारती

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 06

प्रेमचंद वर्तमान संदर्भ में

इकाई 1

प्रेमचंद एक कालजयी रचनाकार के रूप में

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कालजयी रचनाकार के रूप में प्रेमचंद का परिचय प्राप्त करता है
- दुनिया के श्रेष्ठ कथाकार के रूप में प्रेमचंद का परिचय प्राप्त करता है
- युग प्रवर्तक प्रेमचंद से परिचय प्राप्त करता है
- भविष्य-द्रष्टा के रूप में प्रेमचंद को जानता है
- भारतीय किसान की प्रतिनिधि कलाकार रूप में प्रेमचंद को जानता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद की गणना विश्व के महान साहित्यकारों में की जाती है। तुलसीदास के बाद प्रेमचंद एकमात्र रचनाकार है जिन्हें भारत के साथ ही साथ विश्व में भी सबसे अधिक पढ़ा जाता है। प्रेमचंद हिन्दी भाषा और साहित्य के सच्चे प्रतिनिधि, उपासक एवं पोषक है। प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय-संस्कृति के आत्मा से परिचय मिलता है। प्रेमचंद की तुलना गोर्की से की जाती है। प्रेमचंद ने हिन्दी और उर्दू कथा साहित्य को समान रूप से समृद्ध कर दिया। प्रेमचंद विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथा-साहित्यकार है।

प्रेमचंद का भारत गाँवों और नगरों, खेतों और खलिहानों में रहता है। आज हिन्दी साहित्य में जो जीवन परिचय प्राप्त होता है उसे गढने में प्रेमचंद का लेखन कार्य एक निर्णायक शक्ति के रूप में रहा है।

हिन्दी कथा साहित्य को एक अलग मोड़ देनेवाले रचनाकार के रूप में प्रेमचंद को जाना जाता है। प्रेमचंद के कालजयी साहित्यकार के रूप में श्रीगणेश उर्दू से हुआ था। प्रेमचंद को साहित्य को जन साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय मिलता है। अपनी लेखनी के बलबूते जनजीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। हिन्दी और उर्दू को एक दूसरे के अधिक निकट लाने की भगीरथ प्रयत्न किए। कथा साहित्य के अलावा कथेतर साहित्य में भी लेखन कार्य किया। पत्रकार और संपादक के रूप में भी उन्होंने काम किया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जीवन को मुखर करनेवाला साहित्य, युग प्रवर्तक प्रेमचंद, भविष्य द्रष्टा, भारतीय किसान की प्रतिनिधि कलाकार, पिछड़ेपन के विरुद्ध संघर्ष, हाशिए के लोगों के लिए प्रेरणादायक

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद के साहित्य में भारत का सच्चा व यथार्थ चित्रण मिलते थे। उनका भारत गाँवों और नगरों, खेतों और खलिहानों में रहता है। आज हिन्दी साहित्य में जो जीवन परिचय प्राप्त होता है उसे गढने में प्रेमचंद का लेखन कार्य एक निर्णायक शक्ति के रूप में रहा है। अतः वर्तमान परिस्थितियों को देखकर आज भी उनका रचना धर्मिता

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

आवश्यक और प्रासंगिक लगता है।

जीवन को मुखर करनेवाला साहित्य

प्रेमचंद का साहित्य जीवन को मुखर करनेवाला है। उन्होंने इसके माध्यम से नए समाज के निर्माण हेतु जन-साधारण और अभ्युत्थान का पुनीत कार्य किया है और सफल भी हुए हैं। अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण वे अपने समय में ही अभूतपूर्व-लोकप्रिय और जीवंत साहित्यकार बने थे। उन्होंने जिस अभिनव पंरपरा का सूत्रपात किया था वह आज अधिक पुष्ट होकर सतत प्रवाहमान है। यही कारण है कि आज भी प्रेमचंद और उनका साहित्य प्रासंगिक है। उनका साहित्य किसी भी काल तक सीमित न होकर शाश्वत है।

प्रेमचन्द जिस समय लिख रहे थे, वह समय भारतीय समाज में पूंजीवाद का शुरुआती दौर था। पूंजीवाद ने उन सारे रिश्तों को खोखला बना दिया था, जिस पर हमारी सामाजिक संरचना टिकी थी। उन्होंने जीवन के अनुभव के संदर्भ में पूंजीवाद के अमानवीय पहलू को जहाँ एक ओर उभारा वहीं दूसरी ओर सामाजिक मान्यताओं, अंधविश्वासों और कुरीतियों की आलोचना भी की। सेवासदन, ग़बन, कर्मभूमि, निर्मला, प्रेमाश्रम और गोदान इन सबमें मूल रूप में वही आर्थिक और नैतिक समस्याएँ हैं। 'निर्मला' में दहेज-प्रथा ने अनमेल विवाह की स्थिति पैदा की। धनाभाव के कारण मुंशी तोताराम के परिवार में संघर्ष चलते हैं। 'ग़बन' का नायक रामनाथ, 'गोदान' के होरी आदि को भी आर्थिक समस्या से जूझना पड़ता है। प्रेमचंद ने जो अभिशाप देखा था, अपने जीवन में भोगा था, उसी को उन्होंने अपने साहित्य में प्रमुख स्थान दिया।

युग प्रवर्तक प्रेमचंद

प्रेमचंद का साहित्य हमें सिखलाता है कि किस तरह क्रांतिकारी लफ्फाजी से बचकर सीधे-सादे ढंग से जनता की सेवा करनेवाला साहित्य रचा जा सकता है। उनका कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं अपितु उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है।

प्रेमचंद उन लेखकों में हैं जिनकी रचनाओं से बाहर के साहित्य-प्रेमी हिंदुस्तान को पहचानते हैं। उन्होंने हिंदुस्तान के राष्ट्रीय सम्मान को बढ़ाया है; हमारे देश को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में गौरव दिया है। प्रेमचंद पर सारा हिंदुस्तान गर्व करता है, दुनिया की शांति-प्रेमी जनता गर्व करती है, सोवियत संघ के आलोचक मुक्त कंठ से उनका महत्व घोषित करते हैं, हम हिन्दी-भाषी प्रदेश के लोग उन पर खासतौर से गर्व करते हैं, क्योंकि वह सबसे पहले हमारे थे, जिन विशेषताओं को उन्होंने अपने कथा-साहित्य में झलकाया है, वे हमारी जनता की जातीय विशेषताएँ थीं। हिन्दी-साहित्य में आज जो समस्याएँ उठ रही हैं, उन्हें हल करने में प्रेमचंद का अध्ययन बड़ी सहायता करता है।

भविष्य-द्रष्टा प्रेमचंद

प्रेमचंद भविष्य-द्रष्टा थे। उन्होंने 'ग़बन', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प', 'रंगभूमि' तथा 'गोदान' में ऐसे देश-भक्तों का रूप दिखाया जो वक्त आने पर जनता से विश्वासघात कर जाते थे, जिनके लिए अपना हित, अपने मालिकों का हित जनता के हितों से बढ़कर था। प्रेमचंद ने इन पात्रों के द्वारा जनता के महान शिक्षक का काम किया; उसकी चेतना को निखारने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

वह एक यथार्थवादी कलाकार थे। वह रोवन की सचाई आँकना चाहते थे, जीवन के भ्रमों का खंडन करना चाहते थे। 'सेवासदन' से 'गोदान' तक उन्होंने कथा-साहित्य में यथार्थवाद को इस तरह विकसित किया जिस तरह एक ही साहित्यकार बहुत कम कर पाता है। अपने यथार्थवाद से उन्होंने हिन्दी-कथा- साहित्य के लिए वह राज-मार्ग बना दिया है, जिस पर नई पीढी के लेखक निर्भय होकर आगे बढ़ सकते हैं।

भारतीय किसान की प्रतिनिधि कलाकार

प्रेमचंद का साहित्य बीसवीं सदी के हिंदुस्तान का सच्चा इतिहास है। हमारी जनता की सहृदयता, सहनशीलता और वीरता उनकी रचनाओं में फूल की तरह खिली हुई हैं। अंग्रेज़ों का बर्बर पुलिस-राज, खूनी आतंक और उनके मित्रों का जनता से विश्वासघात उनकी रचनाओं में काले कुहरे की तरह छाया हुआ है। हिंदुस्तान के लोग एक भरा-पूरा, सुखी, सुसंस्कृत, समृद्ध जीवन बिताना चाहते हैं- यह तथ्य उनकी रचनाओं में बार-बार झलकती है। इस साध को पूरा करने के लिए वे कैसा पराक्रम दिखाते हैं, इसकी कथा प्रेमचंद का साहित्य है।

प्रेमचंद की आवाज़ सुनकर हमें अपने देश और जनता पर गर्व होता है, उस जातीय संस्कृति पर गर्व होता है, जिसे प्रेमचंद सँवार रहे थे। प्रेमचंद की आवाज़ उस समय उठी थी जब पहले महायुद्ध में मानव-ध्वंसी तोपों की

गड़गड़ाहट हवा में गूंज रही थी। आज भी जब विश्व पर तीसरे महायुद्ध के बादल छाए हुए हैं, उस स्वाधीनता संग्राम के सैनिक की वाणी विश्व-शांति की रक्षा के लिए जनता का आह्वान करती है। प्रेमचंद की आवाज़ भारत की अजेय जनता की आवाज़ है। इसलिए प्रेमचंद आज भी हमारे साथ हैं।

हाशिए के लोगों के लिए प्रेरणादायक

प्रेमचंद के साहित्य की मूल चेतना मनुष्य की सहजता का अन्वेषण और उसकी प्रतिष्ठा से है। वह मनुष्य को जर्जर मान्यताओं से दूर रखकर अकृत्रिम एवं प्राकृत रूप में देखना पसंद करते थे। यही कारण है कि उनके साहित्य में पहली बार जन-सामान्य को वाणी मिली है। साहित्य को मात्र मनोरंजन के लिए न लिखकर यथार्थ के साथ जोडकर एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रयोग में लाया। उनके साहित्य में भारत के किसान और मध्यवर्गीय जीवन की विविध रूपी समस्याएँ कलात्मक रूप से चित्रित की गयी है। अतः प्रेमचंद साहित्य हाशिए के लोगों के लिए प्रेरणादायक है।

अन्याय और कुरीतियों पर प्रेमचंद ने चारों तरफ से आक्रमण किया है। पुरातन पंथियों और रिवाज़ों का उन्होंने हमेशा विरोध किया है। उनका समूचा साहित्य मानवता से भरपूर है। साथ ही साथ देशभक्ति की भावना उसमें डूबा नज़र आता है। उनके साहित्यिक पृष्ठभूमि हमेशा लड़नेवाले वीरों के स्वरों की प्रतिध्वनि के रूप में दिखायी देती है। अतः उनका साहित्य राष्ट्रीय आंदोलन का सटीक भाष्य है। प्रेमचंद न मात्र युगजीवन के साथ चले, बल्कि उसका मार्गदर्शन भी करते थे।

रूढ़िवाद का विरोध

जिस समय मुंशी प्रेमचन्द का जन्म हुआ वह युग सामाजिक- धार्मिक रूढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रूढ़िवाद से स्वयं प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए। तब प्रेमचन्द ने कथा-साहित्य का सफर शुरू किया, और अनेकों प्रकार के रूढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथा शक्ति कला के शस्त्र से मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि 'मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बन्धनों का दास नहीं हूँ।'

सामाजिक रूढियों के संदर्भ में प्रेमचन्द ने वैवाहिक रूढियों जैसे बेमेल विवाह, बहुविवाह, अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह, पुनर्विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, वृद्धविवाह, पतिव्रत धर्म तथा वारंगना वृद्धि के संबंध में बड़ी संवेदना और सचेतना के साथ लिखा है। तत्कालीन समाज में यह बात घर कर गई थी कि तीन पुत्रों के बाद जन्म लेने वाली पुत्री अपशकुन होती है। उन्होंने इस रूढ़ि का अपनी कहानी तेंतर के माध्यम से कड़ा विरोध किया है। होली के अवसर पर पाये जाने वाली रूढ़ि की निन्दा करते हुए वह कहते हैं कि अगर पीने-पिलाने के बावज़ूद होली एक पवित्र त्योहार है तो चोरी और रिश्वतखोरी को भी पवित्र मानना चाहिए। उनके अनुसार त्योहारों का मतलब है अपने भाइयों से प्रेम और सहानुभूति करना। आर्थिक जटिलताओं के बावज़ूद आतिथ्य- सत्कार को मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लेने जैसे रूढ़ि की भी उन्होंने निन्दा की है।

बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार

उपन्यास सम्राट और कालजयी कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित प्रेमचंद को आम आदमी का साहित्यकार भी कहा जाता है। चूंकि उनकी अधिकांश रचनाएँ आम जनजीवन और सरोकारों से ही जुड़ी रहीं तो वे आम आदमी को अपने बहुत करीब लगती हैं। उन्होंने गरीब-गुरबों की पीड़ा को न केवल समझा, बल्कि अपनी रचनाओं के ज़रिए उसका निदान बताने का प्रयास भी किया। उनके सृजन संसार में आम आदमी की भावनाओं, समस्याओं तथा संवेदनाओं का मार्मिक शब्दांकन मिलता है।

प्रेमचंद नाटककार भी थे, लेकिन वहाँ उन्हें इतनी सफलता नहीं मिली। वह एक सफल संपादक थे और 'हंस' के ज़रिए उन्होंने साहित्यकारों की एक नई पीढ़ी को शिक्षित किया। 'मंगलसूत्र' में-जो उनका अधूरा और आखिरी उपन्यास है-उन्होंने एक साहित्यकार को ही नायक बनाया है जो 'गोदान' के मेहता की तरह देश-सेवा का व्रत लेता है। वह हिन्दी-लेखकों से बड़ी-बड़ी आशाएँ रखते थे जिन्हें पूरा करना नई पीढ़ी का कर्तव्य है। प्रेमचंद को बीमारी की हालत में लिखते देखकर श्री जनार्दन राय ने उनसे कहा था- 'यदि कहीं कुछ हो गया तो क्या होगा?' और प्रेमचंद ने जवाब दिया- 'क्या होगा, मर ही तो जाऊँगा। तुम लोग हो। और फिर कौन जाने मैं मरूँगा भी।'

अधीर जननायक

प्रेमचंद के लिए देश-भक्ति और जनतंत्र दो विरोधी चीजें

नहीं थीं। वह राष्ट्रीय और जनवादी भावनाओं के समर्थक थे। निर्भीकता से वह अपने विचार दूसरों के सामने रखते थे और उनके लिए लड़ते थे। एक बार हिंदुस्तानी का समर्थन करते हुए उन्होंने गाँधी जी का भी विरोध किया था और श्री चतुरसेन शास्त्री की पुस्तक 'इस्लाम का विषवृक्ष' के बारे में लिखा था- "इस कम्युनल प्रोपेगेंडा का ज़ोरों से मुकाबला करना होगा।"

कालजयी रचनाकार

नहीं, प्रेमचंद मरे नहीं हैं। उनकी आवाज़ हिन्दी-भाषी प्रदेश की जनता को आज भी एक कर रही है। उसे अपने कर्तव्यों की याद दिलाती हुई आगे बढ़ने के लिए हिम्मत दिलाती है। उनकी आवाज़ सुदूर दक्षिण तक पहुँचकर उत्तर और दक्षिण को नज़दीक लाती है। कलकत्ता और बंबई के मज़दूर उनकी आवाज़ सुनकर एक दूसरे के पास आते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद भारतीय समाज के लिए सदा प्रासंगिक रहे हैं पर पिछले दिनों उनकी प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। हमारा समाज आगे बढ़ने के बदले पीछे जा रहा है। जिस पिछड़ेपन के विरुद्ध प्रेमचंद ने संघर्ष किया था, वह विशेष रूप से हिन्दी प्रदेश में सघन हो गया है। आर्थिक स्तर पर जनता की गरीबी अपनी जगह है, राजनीतिक स्तर पर देश के विघटन की समस्या और तीव्र हो गयी है। सांस्कृतिक स्तर पर द्विज और शूद्र का भेद, हिन्दू और मुसलमान का भेद, और बढ़ा है। पुराने भेदों में इजाफा हुआ है हिन्दू और सिख के भेद का। प्रेमचंद का साहित्य इस परिस्थिति को समझने में सहायता करता है। उनकी भाषा का रस, उनकी कथाएँ पढ़ने का मजा अपनी जगह है; उनके साहित्य का कलात्मक रूप बहुत बड़ा है। पर वह साहित्य आज के भारत का बहुत बड़ा, लगभग अद्वितीय, ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। उसे पढ़कर हम समझ सकते हैं, पहले से चला आता पिछड़ापन क्यों अधिक सघन हो गया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचंद धनपत राय का साहित्यिक नाम है।
- प्रेमचंद बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे।
- प्रेमचंद की रचना दृष्टि विभिन्न रूपों में प्रकट हुई है।
- प्रेमचंद जी का जीवन सपाट, समतल मैदान की तरह है।
- प्रेमचंद का हिन्दी साहित्य के साहित्य सम्राट के रूप में विख्यात होना।
- उर्दू में दिए योगदान के कारण आज प्रेमचंद को पाकिस्तान के पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान दिया है।
- प्रेमचंद की सभी रचनाएँ कालजयी एवं प्रौढतम है।
- प्रेमचंद साहित्य हाशिए के लोगों के लिए प्रेरणादायक है।
- प्रेमचंद के साहित्य की मूल चेतना मनुष्य की सहजता का अन्वेषण और उसकी प्रतिष्ठा है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद ने किस काम के लिए भगीरथ प्रयत्न किए थे?
2. साहित्य को किस रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय प्रेमचंद जी को मिला था?
3. अपनी लेखनी के बलबूते प्रेमचंद ने कहाँ पर क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया है?
4. प्रेमचंद की तुलना किससे की जाती है ?
5. प्रेमचंद के कालजयी साहित्यकार के रूप में श्रीगणेश किस भाषा से हुआ था?

6. 'सेवासदन' और 'गोदान' किसकी रचना है?
7. उपन्यास सम्राट किसे मानते हैं?
8. प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास कौन-सा है ?

Answers / उत्तर

1. हिन्दी और उर्दू को एक दूसरे के अधिक निकट लाने की
2. जन साहित्य के रूप में
3. अपनी लेखनी के बलबूते जनजीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया है।
4. गोर्की से
5. उर्दू से
6. प्रेमचंद
7. प्रेमचंद को
8. मंगलसूत्र

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथा-साहित्यकार है, अपना मत प्रकट कीजिए।
2. प्रेमचंद एक कालजयी रचनाकार हैं। सिद्ध कीजिये।
3. बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद का चित्रण कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा।
2. प्रेमचंद : मदन गोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं नगेन्द्र।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

प्रेमचंद साहित्य में चित्रित समस्याओं की प्रासंगिकता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त समस्याओं से परिचय प्राप्त करता है
- प्रेमचंद साहित्य में चित्रित समस्याओं की प्रासंगिकता से परिचय प्राप्त करता है
- प्रेमचंद साहित्य में चित्रित विविध समस्याओं को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचंद-साहित्य के प्रमुख आलोचक प्रेमचंद के उपन्यासों को समस्यामूलक या समस्या-प्रधान नहीं मानते। सामाजिक उपन्यास और व्यक्ति चरित्र के उपन्यास नामक दो कोटियों में वे उनके उपन्यासों की गणना करते है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रेमचन्द के प्रायः सभी उपन्यास सामाजिक है, पर उनकी सामाजिकता किसी न किसी समस्या पर ही आधारित है। प्रेमचन्द का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है जिसमें किसी समस्या को न उठाया गया हो। वस्तुतः वे समस्यामूलक उपन्यासकार ही थे। यहाँ तक कि किसी-किसी उपन्यास में तो अनेक समस्याएँ प्रधान-समस्या के साथ बराबर दौड़ती हैं और छोटी-छोटी समस्याओं की ओर तो लेखक का ध्यान सदैव ही बना रहता है। जहाँ भी अवसर मिला है प्रेमचन्द इन समस्याओं को बिना छुए नहीं रहे हैं। प्रेमचन्द के समस्त उपन्यासों का उद्देश्य केवल हिन्दुस्तान की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करना रहा है। समस्याओं का प्रश्न प्रधान है। शेष बातें समस्याओं को ही केन्द्र मानकर बढ़ती हैं और संकुचित होती हैं। समस्यामूलक उपन्यास में उपन्यासकार का लक्ष्य केवल समस्या को रखने और उसे सुलझाने या ज्यों की त्यों छोड़ देने की ओर रहता है। उपन्यास के अन्य सामान्य तत्व उसकी रचना में बिखर जाते हैं। प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी हमें यही बात मिलती है। बिना इस दृष्टिकोण को सम्मुख रखे प्रेमचन्द के उपन्यासों का शास्त्रीय अध्ययन करना असंगत होगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सामाजिक सरोवर, यथार्थवाद पर्यवेक्षक, प्रगतिशील लेखक, सामाजिक आर्थिक बदलाव

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद मात्र एक साहित्यकार ही नहीं बल्कि सामाजिक विमर्श और तत्कालीन समस्याओं पर भी अपना नज़र डालनेवाले थे। उन्होंने अपने समय की साहित्यिक रचनाओं में सामाजिक समस्याओं पर लेखनी चलायी। देश की स्वतंत्रता के प्रति उनमें अगाध प्रेम था। प्रेमचंद के अन्दर का देशप्रेम उनकी रचनाओं में मुखरित होती है। प्रेमचंद ने जिस दौर में सक्रिय रूप से लिखना शुरु किया, वह छायावाद का दौर था। फिर भी उन्होंने अपने को किसी वाद से जोड़ने की बजाय तत्कालीन सामाज में व्याप्त छुआछूत, सांप्रदायिकता, हिन्दु-मुस्लिम एकता, दलितों के प्रति सामाजिक समरसता जैसे ज्वलंत मुद्दों से जोड़ा। एक लेखक से परे भी उनकी चिंताएँ उनकी

रचनाओं में मुखर हुई है। उनकी कहानियाँ और उपन्यासों के पात्र सामाजिक व्यवस्थाओं से जूझते हैं और अपनी नियति के साथ भविष्य की इबारत भी गढते हैं। नियति में उन्हें यातना, दरिद्रता व नाउम्मीदी भले ही मिलती हो पर अंततः वे हार नहीं मानते हैं और संघर्षों की जिजीविषा के बीच भविष्य की नींव खडे करते हैं। अपने वैयक्तिक जीवन के संघर्षों से उन्होंने जाना था कि संघर्ष का रास्ता बेहद पथरीला है और मात्र संवेदनाओं व हृदय परिवर्तन से इसे नहीं पार किया जा सकता है।

सामान्यतः प्रेमचंद एक ऐसे राष्ट्र-राज्य की कल्पना करते थे जिसमें किसी भी तरह का भेदभाव न हो, न वर्ण का, न ही जाति का, न रंग का और न ही धर्म का। प्रेमचंद का सपना हर तरह की विषमता, सामाजिक कुरीतियों और सांप्रदायिक वैमनस्य से परे एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण था जिसमें समता सर्वोपरी हो। प्रेमचंद भारतीय समाज में विद्यमान पृथकता की तथ्य को उपनिवेशवाद की जड़ माना। अंग्रेज़ों ने इस पृथकता के बलबूते पर भारत को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मोर्चों पर क्षति पहुँचायी। उन्होंने छुआछूत की समस्या को दूर करना, सामाजिक समता के लिए महत्वपूर्ण बताया। परंपरागत वर्णाश्रम व्यवस्था का विरोध करते हुए उन्होंने अपनी रचना धर्मता को प्रकट किया। प्रेमचंद ने हिंदू समाज के लिए निर्वाचन की चाहे जितनी कड़ी शर्तें न रखी जाये और हरेक दलित को निर्वाचन का अधिकार हो। वह दलितों को समाज का एक अभिन्न हिस्सा मानते थे, इसलिए वे उनकी पृथक पहचान के लिए सहमत नहीं थे। यही कारण था कि उन्होंने दलितों के लिए आवाज़ उठायी।

प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता पर भी अपनी कलम चलायी। उन्होंने हिन्दू-मुसलमान एकता पर जोर देकर सांप्रदायिकता का विरोध किया। दोनों संप्रदायों की विशिष्टताओं के साथ मिलकर उन्होंने स्वराज का दर्जा दिया। उन्होंने एक-दूसरे के धर्म का परस्पर आदर करने पर ज़ोर दिया। उनकी मानना था कि हिंदू और मुसलमान दोनों की पृथक-पृथक वजूद है और होना भी चाहिए।

प्रेमचंद के राष्ट्र-राज्य में दलितों के साथ स्त्रियाँ और किसान समान भाव से मौजूद है, जिनके विकास के बिना भारत के विकास की कल्पना भी बेमानी है। समाज में स्त्रियों के प्रति हो रहे हीन व्यवहार का प्रेमचंद ने कडा विरोध किया और अपनी रचनाओं में उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व का दर्जा देते हुए, देश की धुरी बनाया। इस तरह उन्होंने कृषक समुदाय को भारत की प्राणवायु बताया है। कर्ज में डूबे किसान जनता को जुल्म सहना पडता था और उनकी स्थिति बदतर होती रही। व्यवस्थागत विक्षोभ और किसानों की समस्याओं को किसी भी साहित्यकार ने उस रूप में नहीं उठाया। प्रेमचंद का पूरा साहित्य ही समाज के हाशिए पर जीनेवाले दलित, स्त्री और किसान की ओर उन्मुख थे। कहा जाए तो उनका साहित्य इन्हीं हाशिए के लोगों के लिए समर्पित थे। उनके साहित्य में इन लोगों की लडाई जो समता, न्याय और सामाजिक परिवर्तन की घोषणा है। यहाँ धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज़, जाति-वर्ण, ऊँच-नीच के लिए कोई जगह नहीं है।

प्रेमचंद एक प्रगतिशील लेखक हैं, जो तेजी से सामाजिक-आर्थिक बदलावों के दौर में रहते थे और उन्होंने हमेशा अपने लेखन में सामाजिक विद्रूपताओं को केंद्र बनाया। उन्होंने अपने आदर्शों, पात्रों और विषयों को वास्तविक दुनिया से पाया। उनका हमेशा यह मानना था कि मूल रूप से मनुष्य नेक और अच्छा होता है लेकिन उसका वातावरण उसे प्रभावित करता है और भ्रष्ट करता है। हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने कई उपन्यास लिखें जो सामाजिक मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उनका पहला उपन्यास सेवासदन (सौंदर्य का बाज़ार), जो मूल रूप से उर्दू में लिखा गया है (बाज़ार-ए-हुस्न) 1918 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास वेश्याओं के नैतिक पतन और उन परिस्थितियों के साथ जुड़ा है जिसमें वे इस जघन्य पेशे का सहारा लेने के लिए मजबूर हैं और वेश्याओं के लिए एक सुरक्षित घर, सेवासदन जैसी संस्था की स्थापना करके इस समस्या का समाधान भी सुझाता है। इन निराश और असहाय महिलाओं को नीचे देखने के बजाय, वह उनके लिए बहुत सहानुभूति और दयालुता पैदा करने की कोशिश करती है।

उनके उपन्यासों में प्रमुख रूप से जो अन्य सामाजिक मुद्दे हैं- ये हैं भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, दोषपूर्ण शैक्षिक प्रणाली, लिंगुआ-फेंका का प्रश्न, भारतीय किसानों की समस्याएँ और अस्पृश्यता। वास्तव में यह उपन्यास एक दुःखी महिला की गाथा है, जो अपने ही समाज के कठोर यथार्थ के प्रति उसके अक्षम्य रूख का वर्णन करती है।

उपन्यास की महिला नायक सुमन को दहेज प्रथा के कारण अपमानित किया जाता है। इसलिए अपने पति के साथ नारकीय जीवन जीने के बाद, वह घर छोड़ देती है और संयोग से वह वेश्याओं के संपर्क में आ जाती है। प्रेमचंद सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में ऊँच-नीच की भावना रखने वाली पीढी का पता लगाने की कोशिश करते हैं क्योंकि वह हमेशा सामाजिक सुधार में कला की शक्ति में विश्वास करते थे। उनके लिए उपन्यासकार एक मिशनरी था जिसे अपने लेखन को सुधारने के इरादे से वास्तविकता के जानबूझकर चित्रण के लिए तैयार करना पड़ा। इस प्रकार, सेवासदन न केवल प्रेमचंद की प्रतिष्ठा को एक सफल उपन्यासकार के रूप में स्थापित करता है, बल्कि हिन्दी उपन्यास के इतिहास में एक मील का पत्थर के रूप में कार्य करता है।

प्रेमचंद के उपन्यास, जाहिर तौर पर इस दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा देते हैं। गांधीवादी काल के सामाजिक-राजनीतिक सह आर्थिक मुद्दों को भी कर्मभूमि के भीतर निपटाया जाता है। अमरकांत पर गाँधीवाद के प्रभाव को उपन्यास में सूत कताई की अपनी क्रिया के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जो गांधीवादी स्वराज का कार्डिनल सिद्धांत था। उपन्यास के अंत में अमरकांत को हिंसक कार्रवाई और व्यवहार की निरर्थकता का एहसास होता है। उसे इतने लोगों की हत्या पर पछतावा है। इस तरह, अमरकांत के पश्चाताप ने उन्हें क्रांति और गांधीवाद की कठोर प्रकृति के बीच पकड़ा।

दूसरी ओर, इस उपन्यास को एक राजनीतिक उपन्यास के रूप में पढ़ा जा सकता है, जो अमीर और जमीदारों, उद्योगपतियों और उच्च वर्ग द्वारा समर्थित ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों के संघर्ष को प्रस्तुत करता है। सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक बुराई की प्रवृत्ति और प्रेमचंद से लेकर अमृत लाल नागर और फणीश्वर नाथ रेणु तक एक परिवर्तन विकासवादी रहा है। वे सभी किसी भी विशिष्ट संप्रदाय दर्शन में विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि उनका मानवीय मूल्यों में दृढ विश्वास है। इन उपन्यासकारों के कार्यो की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास कंक्रीट से अमूर्त और वास्तविक से आदर्श तक एक चिह्नित आंदोलन को दर्शाता है।

प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास गोदान (1936) अपने पहले के कार्यों से एक गरीब किसान के जीवन को अलग तरीके से पेश करता है। समय बीतने के साथ प्रेमचंद मनी लेडिंग सिस्टम के बुरे परिणामों के बारे में पूरी तरह से सचेत हो गए थे। दूसरी ओर, उपन्यास उस समय आया जब भारतीय समाज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकटों से गुजर रहा था। इस निर्णायक मोड़ पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लगे हुए थे। इसलिए गोदान, एक सामाजिक दस्तावेज है,जो भारतीय किसानों की आर्थिक स्थितियों को वास्तविक रूप से दर्ज करता है। होरी, नायक, एक किसान है जो सिस्टम के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम नहीं है और जीवन भर पीड़ित है। यह धर्म के झूठे विचारों में फंस गया है और इसीलिए वह धन उधारदाताओं द्वारा शोषण का विरोध करने में सक्षम नहीं है। वह एक कट्टर चरित्र है जो भारतीय किसानों के अनिवार्य लक्षणों का प्रतिनिधित्व करता है। होरी किसानों का प्रतिनिधित्व करता है जिनका जमींदारों और साहूकारों जैसे संपन्न लोगों द्वारा शोषण किया गया है। होरी खुद को उसी उपन्यास में चित्रित करता है।

प्रेमचंद के सभी उपन्यासो में किसी न किसी समस्या को प्रमुख स्थान मिला है; अतः उनके प्रायः सभी उपन्यास समस्या-प्रधान अथवा समस्यामूलक ठहरते हैं। कथानक के अन्दर समस्याओं का समावेश वे नहीं करते वरन् समस्याओं को उपस्थित करने के लिए कथानक को गढ़ते हैं। चरित्र-चित्रण के लिए उनके उपन्यास नहीं लिखे गये वरन् समस्याओं के उद्घाटन, विकास और हल के हेतु पात्रों का सर्जन तथा चरित्र-चित्रण हुआ है। कथा विकसित करने के लिये वे संवादों को नहीं रखते वरन् समस्याओं का स्वरूप प्रकट करने के लिये पात्रों के मुख से अनेक बातें कहलाते हैं। अतः प्रेमचंद के उपन्यास को समझने के लिये यही वास्तविक आधार है। आधार की ओर ध्यान न देकर यदि कोई आलोचक अन्य मानदण्डों से उनके उपन्यासों की परख करता है तो वह गलत दृष्टिकोण अपनाता है। उसकी आलोचना का निष्कर्ष यही होगा कि प्रेमचंद प्रथम श्रेणी के उपन्यासकार नहीं हैं; जबकि वे मानव-समुदाय में दिन-पर-दिन लोकप्रिय होते जा रहे हैं। यदि वे सफल उपन्यासकार नहीं होते तो यह लोकप्रियता मिलना दुर्लभ होती। सच पूछा जाय तो प्रेमचंद के उपन्यास केवल उपन्यास ही नहीं वे उपन्यास से

कुछ अधिक हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में उठाई गई प्रमुख समस्याओं के इस पर्यवेक्षण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनके प्रायः सभी उपन्यास समस्यामूलक हैं। यह तथ्य उनके उपन्यासों की समीक्षा करते समय ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक है; अन्यथा प्रेमचंद को समझने में ही हम भूल नहीं करेंगे प्रत्युत उनके उपन्यासों के प्रति भी उचित न्याय नहीं कर पाएँगे।

प्रेमचंद और अन्य विश्वविख्यात उपन्यासकारों में यही सबसे बड़ा अन्तर है कि जहाँ अन्य प्रथम श्रेणी के उपन्यासकार चरित्रांकन की कला में अद्वितीय हैं वहाँ प्रेमचंद समस्या के उपस्थित करने, उसका पूर्णरूपेण उद्घाटन करने और उसका हल सुझाने में अन्यतम हैं। यदि प्रेमचंद के उपन्यासों की परख चरित्रांकन के दृष्टि कोण से की जाएगी तो वे विश्व-विख्यात उपन्यासकारों की प्रथम श्रेणी में स्थान नहीं पा सकेंगे। इस बात को स्वीकार करने में कोई हीन-भावना का अनुभव हमें नहीं करना चाहिए। चरित्र-चित्रण में, प्रेमचंद, कहानियों में जितने सफल हुए हैं उतने उपन्यास में नहीं । अपवाद रूप में, दो-चार औपन्यासिक पात्रों के सफल चरित्रांकन का उल्लेख कर देने मात्र से उनकी समस्यामूलकता पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रेमचंद की औपन्यासिक-कला का सबसे सशक्त पहलू समस्यामूलक तत्व है; जिसके आधार पर हम प्रेमचंद की कृतियों पर गर्व कर सकते हैं और विश्व-साहित्य के सम्मुख उनकी उपादेयता सिद्ध कर सकते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

मानवतावादी लेखक प्रेमचन्द का सारा कथा साहित्य यथार्थ की ठोस भूमि पर आधारित है, जो तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश में रचित होने के बावजूद काल और परिवेशबध्द नहीं, अपितु काल और परिवेश का अतिक्रमण कर सर्वकालिक बन गया है। आज पुनः प्रेमचन्द की आवश्यकता है। प्रेमचंद की रचनाएँ समाज में नींद में सोये इस वर्ग को जगाने का उपक्रम हैं।

प्रेमचंद ने 19 वीं सदी के अंतिम दशक से लेकर 20 वीं सदी के लगभग तीसरे दशक तक भारत में फैली तमाम सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक समस्याओं पर लेखनी चलायी। उनकी रचनाओं में कभी-कभी किसानों-मजदूरों एवं जमींदारों की समस्या हर कहीं विद्यमान है तो कभी कभी छुआछूत और नारी समस्याएँ दिखायी देती है। नमक के दरोगा के माध्यम से समाज में फैले इंस्पेक्टर-राज का जिक्र किया है। प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को एक नया मोड दिया। हिन्दी साहित्य के जनमानस के रचनाकार है प्रेमचंद।

Recap / पुनरावृत्ति

- साहित्य में प्रेमचंद के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं और उनकी रचनाओं में चित्रित पात्र भी जिन्दा है।
- प्रेमचंद अपनी रचनाओं में समाज के उपेक्षित व शोषित वर्ग को प्रतिनिधित्व देते हैं।
- उनकी साहित्य में चित्रित समस्याएँ एक युद्ध की लडाई के लिए आधार बनाती है।
- उनकी रचनाओं से समाज में सोये वर्ग को जगाने का उपक्रम करते हैं।
- राष्ट्र आज भी उन्हीं समस्याओं से जूझ रहा है, जिन्हें प्रेमचंद ने काफी पहले रेखांकित कर दिया था।
- जातिवाद और सांप्रदायिकता का ज़हर को मिटाना उनके साहित्य का आधार था।
- नारी की पीड़ा हो, किसान की विषमता हो, उन्होंने बिना हिचकते प्रस्तुत किया है।
- अपनी रचनाओं द्वारा समाज में व्याप्त सक्रिय सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देना।
- प्रेमचंद की रचनाओं में वर्ग-संघर्ष को प्रमुखता देना।
- नारी-मुक्ति को प्रश्रय देने की समर्थन।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

- छुआछूत की समस्या को दूर करने की कोशिश।
- सामाजिक समता को महत्वपूर्ण बताया।
- समाज में व्याप्त छुआछूत का चित्रण।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद के अनुसार भारत के विकास के कल्पना क्यूँ बेमानी है?
2. प्रेमचंद की रचनाओं में किसकी प्रमुखता है?
3. प्रेमचंद की रचनाओं में किस को प्रश्रय देने की समर्थन है?
4. प्रेमचंद किस प्रकार के राष्ट्र-राज्य की कल्पना करते थे?
5. प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों के पात्र की विशेषता क्या है?

Answers / उत्तर

1. प्रेमचंद के राष्ट्र-राज्य में दलितों के साथ स्त्रियाँ और किसान समान भाव से मौजूद है, जिनके विकास के बिना भारत के विकास के कल्पना भी बेमानी है।
2. प्रेमचंद की रचनाओं में वर्ग-संघर्ष की प्रमुखता है।
3. नारी-मुक्ति को प्रश्रय देने की समर्थन है।
4. प्रेमचंद एक एसे राष्ट्र-राज्य की कल्पना करते थे जिसमें किसी भी तरह का भेदभाव न हो।
5. उनकी कहानियाँ और उपन्यासों के पात्र सामाजिक व्यवस्थाओं से जूझते हैं और अपनी नियति के साथ भविष्य की इबारत भी गढते हैं।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद जी के साहित्य की प्रासंगिकता आज भी मौजूद है, समर्थन कीजिए।
2. साहित्य से इतर सामाजिक विमर्श पर प्रेमचंद के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है। टिप्पणी लिखिए।
3. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं पर टिप्पणी लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. 'प्रेमचंद और उनका युगः' डा.रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन।
2. 'प्रेमचंद घर में' - शिवरानी देवी - आत्माराम एंड सन्स।
3. 'कलम के सिपाही' - अमृत रॉय।
4. 'कलम का मजदूर' प्रेमचंद - मदन गोपाल।

इकाई 3

प्रेचमंद साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेमचंद के साहित्य की प्रासंगिकता के बारे में समझता है
- प्रेमचंद कालीन एवं वर्तमान परिस्थितियों के साम्य-वैष्म्य को समझता है
- प्रेमचंद के समाज के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है
- साहित्य और समाज के आपसी संबंध के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

साहित्यकार युगीन परिस्थितियों से तटस्थ होकर साहित्य सृजन नहीं कर सकता। युग विशेष का परिस्थितियों में सामाजिक और राजनीतिक स्थितियाँ विशेष रूप से चित्रित की जाती हैं और रचनाकार इन परिस्थितियों के अनुभव से ही अपनी सृजनात्मकता को आयाम देता है। उसका साहित्य समय-परिधि तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि अपने समय की नब्ज पर उंगली रखते हुए समय के पार जाकर भी मूल्यांकित करता है और कालजयी रचना सिद्ध होती है। प्रेमचंद की रचना किसी सत्ता तक पहुंचने की सोपान नहीं रही बल्कि उनका साहित्य जन-चेतना का समुच्चय और जन-जागरण का व्यापक अभियान है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रेमचंद की प्रासंगिकता, समकालीन परिस्थिति, महिला, दलित और किसानों की स्थिति, शोषण, श्रमिक, यथार्थवादी चित्रण

Discussion / चर्चा

आधुनिक हिन्दी के पितामह मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की जड़ भी है। उन्होंने अपने समय से लेकर इस समय तक सफर में हर कदम पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। प्रेमचंद ने साहित्य को जीवन से जोडा और उसे एक नई दिशा दी। उन्होंने साहित्य को मनोरंजन के क्षेत्र से निकालकर तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक समस्याओं से जोड़ दिया। प्रेमचंद के युग की जो समस्याएँ थीं, वे आज भी बहुत नहीं बदलीं, सामाजिक व्यवस्था, उसकी विसंगतियाँ और अन्तर्विरोध आज भी ज्यों के त्यों अपने विकराल रूप में विद्यमान हैं। यही कारण है कि वर्तमान संदर्भ में भी उनका साहित्य प्रासंगिक है। समाज में आज भी दहेज प्रथा के कुपरिणाम देखने को मिलते हैं, अनमेल विवाह होते रहते हैं, पाखण्डियां खुले आम घूम रहे हैं, दालमण्डी आबाद है, सच्चरित्र व्यक्तियों की दुर्गति समाज के हाथों होती है, पुलिस का जुर्म, अत्याचार और अन्याय किसी से छिपा नहीं है, रिश्वत का बाजार और अधिक गर्म है, मिथ्याभाषी नेताओं की कपटता प्रतिदिन बढ रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेमचंद ने जो समस्याएँ उठाई थीं या जो विकृतियाँ उस समय समाज में थीं, वे आज भी अधिक विकराल रूप में दिखलाई पडती है। अर्थात् प्रेमचंद का साहित्य आज और भी प्रासंगिक दिखाई देता है ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

प्रेमचंद का साहित्य अपने समय, समाज और ऐतिहासिक परिस्थितियों से जुडा है। वे अपने काल और परिवेश से जुडे होने के कारण उनके साहित्य में जिस युग-बोध का आभास हमें होता है, वह आज भी परिलक्षित होता है। प्रेमचंद ने जिस रचनात्मक चेतना से सृजन किया है, उस रचनात्मक चेतना से पाठक की चेतना भी जागृत होती है और वह कुछ सोचने विचारने के लिए बाध्य हो जाता है। यह प्रेमचंद के साहित्य की प्रासंगिकता है। प्रेमचंद उन रचनाधर्मियों में है, जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया था। वे हिन्दी साहित्य के इतिहास में जनवादी और यथार्थवादी परम्परा तथा प्रगतिशील परंपरा के जनक भी हैं। प्रेमचंद में चली आती हुई रूढिग़त परंपराओं से मुक्ति पाने की छटपटाहट भी एकदम स्पष्ट है, जो आज की स्थिति को सर्वाधिक प्रासंगिक बनाता है। इतिहास सापेक्ष रचना ही सार्थक होती है, जिसमें अतीत-वर्तमान का द्वंद्वात्मक सम्बंध होता है, और यह प्रेमचंद के साहित्य में भी दिखाई देता है। प्रेमचंद प्रगतिशील चिंतक होने के कारण वे सामंतवाद विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी, शोषण विरोधी और सांप्रदायिकता विरोधी संघर्ष के साहित्यकार है। उनके साहित्य में वर्तमान समाज के सब स्वरों को उधेडक़र सामने रख दिया है। वे अपनी रचनाओं में अंग्रेजी साम्राज्यवाद की झूठी आदर्शोन्मुखता का ही पर्दा नहीं उठाते, वरन् पूँजीपति, उद्योग संचालक, जमींदार असहाय जनता के होने वाले संघर्ष का यथार्थ रूप भी दिखलाते हैं। आज भी पूँजीवाद, जातिवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता आदि अनेक समस्याएँ यथावत् विद्यमान हैं। प्रेमचंद जिस सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति के अग्रदूत थे, वह क्रान्ति अभी अधूरी है, क्योंकि समाज आज भी उन समस्याओं से जूझ रहा है, जिनसे प्रेमचंद का समाज जूझा करता था, उनसे उबर नहीं सका है।

प्रेमचंद ने साहित्य द्वारा रूढियों और अंधविश्वासों का चिट्ठा भी हमारे सामने खोला है। प्रेमचंद साहित्य सामाजिक रूढियों और परंपराओं, अंधविश्वासों तथा टोना-टोटकों पर गहरा प्रहार करता है। यद्यपि शुरू-शुरू में प्रेमचंद परंपराओं के प्रति अतिरिक्त सहानुभूति रखते थे, लेकिन प्रतिभा और प्रौढता के विकास ने उन्हें विरोध करना सिखाया। समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बहु विवाह, जातिवाद, छुआछूत आदि अनेक समाज को जराजीर्ण कर देने वाली परंपराओं का उन्होंने खुलकर विरोध किया। यही नहीं, विरोध के परिणाम स्वरूप उन्होंने स्वयं अपना विवाह एक बाल विधवा से ही किया था। राजनैतिक विकृतियों को लेकर लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य आज भी बासी नहीं पडा है। मानवतावादी लेखक प्रेमचंद का साहित्य यथार्थ की ठोस भूमि पर आधारित है, जो तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश में रचित होने के बावजूद काल और परिवेशबध्द नहीं, अपितु काल और परिवेश का अतिक्रमण कर सर्वकालिक बन गया है। आज पुनः प्रेमचंद और उनकी साहित्य की आवश्यकता है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को एक यथार्थवादी दिशा दिया है। प्रेमचंद का साहित्य आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके अपने दौर में था। किसानों और गरीबों के जीवन के विषय में प्रेमचंद का समझ देखते हुए उनकी प्रासंगिकता आज के समय में और अधिक जान पड़ती है। प्रेमचंद का कथा साहित्य उस समय में जितना यथार्थवादी था आज के समय में भी उन सभी मूल्यों और मापदंडों पर खरा उतरता है ऐसा कहना कदाचित उचित है। प्रेमचंद की रचनाओं में किसान, स्त्री, गरीब और श्रमिकों के जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है तथा इनके जीवन पर अनेक कहानियों और उपन्यासों को लिखा गया है। पूस की रात, गोदान, सद्गति जैसे साहित्यिक रूप इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। प्रेमाश्रम, रंगभूमि और गोदान में जिस प्रकार के किसानों का वर्णन किया गया है उस प्रकार के किसान आज भी भारत के गांवों में स्पष्टतया देखे जा सकते हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने उपन्यास और कहानी के माध्यम से लोगों को हिन्दी साहित्य से मिलाने का काम किया तथा उनके द्वारा लिखा गया साहित्यिक रूप आज के समय में भी यथार्थवादी पटल पर श्रेष्ठता को प्रदर्शित करता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी के पितामह मुंशी प्रेमचंद
- प्रेमचंद ने साहित्य को जीवन से जोडा
- वर्तमान संदर्भ में भी उनका साहित्य प्रासंगिक है
- पूंजीवाद का विरोध
- साम्प्रदायिकता का विरोध
- जातिप्रथा का विरोध
- नारी के प्रति श्रद्धाभाव
- राजनैतिक विकृतियों का यथार्थ अभिव्यक्ति
- प्रेमचंद की प्रासंगिकता

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचंद की रचनाओं में किस-किस बातों पर कड़ा प्रहार किया गया है?
2. प्रेमचंद कहानियों से किस बात की महत्ता पर बल देते हैं?
3. प्रेमचंद का साहित्य किस के प्रति प्रतिबद्ध है?
4. प्रेमचन्द का साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?
5. प्रेमचंद की औपन्यासिक कला का सबसे सशक्त पहलू क्या है?
6. 'नमक का दारोगा' किसकी कहानी है?

Answers / उत्तर

1. प्रेमचंद की रचनाओं में रूढियों और अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया गया है।
2. प्रेमचंद कहानियों से मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं।
3. प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक जागरूकता के प्रति प्रतिबद्ध है।
4. प्रेमचंद का साहित्य अपने समय, समाज और ऐतिहासिक परिस्थितियों से जुड़ा है।
5. समस्यामूलक तत्व
6. प्रेमचंद

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के विचारों की गहरी पड़ताल करता है, स्पष्ट कीजिए।
2. प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त किसान जीवन पर आलेख लिखिए।
3. प्रेमचंद की प्रासंगिता पर आलेख तैयार कीजिए।
4. वर्तमान समय में प्रेमचंद के पुनःपाठ विषय पर टिप्पणी लिखिए।
5. प्रेमचंद साहित्य में चित्रित दलित जीवन पर टिप्पणी लिखिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. कहानीकार प्रेमचंद : रचना दृष्टि और रचना शिल्प - शिवकुमार मिश्र
3. कुछ विचार - प्रेमचंद
4. कलम का सिपाही - अमृतराय
5. प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
6. कलाम का मजदूर प्रेमचंद - मोहन गोपाल

SGOU

Model Question Paper Sets

SGOU

Model Question Paper

Set - 01

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………   Reg. No   : ……….............
                                                 Name   : ………………...

FOURTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE - B21HD01DE - विशेष लेखक प्रेमचंद

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours   Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखिए।

1. प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह कौन-सा है?
2. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यासकार कौन है?
3. किसी एक आंचलिक उपन्यासकार का नाम लिखिए?
4. प्रेमचंद की महाकाव्यात्मक उपन्यास का नाम लिखिए?
5. प्रेमचंद का अपूर्ण उपन्यास कौन-सा है?
6. 'गोदान' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष?
7. प्रेमचंद का सबसे बड़ा उपन्यास कौन-सा है?
8. प्रेमचंद उर्दू में किस नाम से लिखते थे?
9. 'ईदगाह' किस प्रकार की कहानी है?
10. 'गोदान' उपन्यास की मुख्य समस्या क्या है?
11. प्रेमचंद के किन्हीं दो नारी विषयक उपन्यासों का नाम लिखिए?
12. प्रेमचंद जी की अंतिम कहानी कौन सी है?
13. प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास कौन सा है?
14. 'सेवासदन' उपन्यास का उर्दू नाम क्या है?
15. प्रेमचंद की औपन्यासिक कला का सबसे सशक्त पहलू क्या है?   (1x10=10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

16. प्रेमचंद जी की उपन्यासों का नाम लिखिए।
17. जयशंकर प्रसाद जी की उपन्यासों का नाम लिखिए।
18. प्रेमचंद की भाषा शैली कैसी है? व्यक्त कीजिए।
19. प्रेमचंद की कहानी साहित्य में यथार्थवाद।
20. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में चित्रित छुआछूत की समस्या।
21. 'कुछ विचार' निबंध संग्रह की निबंधों का नाम लिखिए।
22. प्रेमचंद की रचनाओं में दलित जीवन का चित्रण कैसे हुआ है?
23. 'प्रेमाश्रम' उपन्यास की विषयवस्तु क्या है?
24. सरस्वती प्रेस की स्थापना कब हुई और संस्थापक कौन थे?
25. बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद का चित्रण कीजिए। (2 x 5 =10)

SECTION -C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए।

26. प्रेमचंद जी की परिचय दीजिए।
27. प्रेमचंदोत्तर उपन्यास की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
28. प्रेमचंद की उर्दू उपन्यासों का परिचय दीजिए।
29. प्रेमचंद की उपन्यास 'रंगभूमि' का परिचय देते हुए उनकी रचनाधर्मिता पर अपना राय व्यक्त कीजिए।
30. प्रेमचंद की कहानी साहित्य की विशेषताएँ लिखिए।
31. 'ईदगाह' में चित्रित मनोवैज्ञानिकता पर टिप्पणी लिखिए।
32. 'प्रेमचंद का साहित्य समाज का दर्पण है' स्पष्ट कीजिए।
33. 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के बारे में लिखिए।
34. प्रेमचंद की रचनाओं में देशप्रेम।
35. 'गोदान' उपन्यास की अध्ययन कीजिए।
36. 'कालजयी रचनाकार प्रेमचंद' पर टिप्पणी लिखिए।
37. प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए।

38. प्रेमचंद युगीन हिन्दी कथा साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।
39. प्रेमचंद की उपन्यासों का विशद परिचय दीजिए।
40. हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिए।
41. प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए। (10 x 2 =20)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Model Question Paper

Set - 02

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ....

Reg. No : ....

Name : ....

FOURTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE - B21HD01DE - विशेष लेखक प्रेमचंद

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours | Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखिए।

1. हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास को कितने कालों में विभाजित किया है?
2. प्रेमचंद द्वारा संपादित पत्रिकाओं का नाम लिखिए?
3. मनोवैज्ञानिक उपन्यास के प्रमुख प्रवर्तक कौन है?
4. 'कायाकल्प' किस विधा की रचना है?
5. 'वरदान' उपन्यास का उर्दू नाम क्या है?
6. प्रेमचंद की भाषा किस प्रकार का है?
7. प्रेमचंद की समग्र कहानियों के संकलन का नाम क्या है?
8. 'दो बैलों की कथा' किसकी रचना है?
9. 'हंस' पत्रिका के पहला संपादकीय किसने लिखा?
10. 'मानसरोवर' के कितने भाग है?
11. प्रेमचंद के निबंध संग्रह का नाम लिखिए?
12. 'गोदान' की प्रमुख पात्र कौन है?
13. 'मंगलसूत्र' उपन्यास को किसने पूरा किया?
14. 'सेवासदन' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष?
15. 'नमक का दारोगा' किसकी कहानी है? (1x10=10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

16. प्रेमचंद युगीन अन्य कहानिकारों का परिचय दीजिए।
17. 'सोजेवतन' कहानी संग्रह में संग्रहीत पाँच कहानियों का नाम लिखिए।
18. प्रेमचंद की कहानी साहित्य के तीन विशेष अवस्थाएँ कौन-कौन सी है?
19. प्रेमचंद की रचनाओं में ग्रामीण जीवन?
20. प्रेमचंद की नारी दृष्टि?
21. 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध की पृष्ठभूमि क्या है?
22. 'निर्मला' उपन्यास की प्रमुख पात्रों का नाम लिखिए।
23. प्रेमचंद की रचनाओं में रूढ़िवाद का विरोध।
24. 'रंगभूमि' उपन्यास के पात्र सूरदास की परिचय दीजिए।
25. प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता का विरोध कैसे किया? (2 x 5 =10)

SECTION -C

किन्हीं छःप्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए।

26. प्रेमचंद पूर्व उपन्यास लेखन पर टिप्पणी लिखिए।
27. प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता पर लेख लिखिए।
28. प्रेमचंद की उपन्यास साहित्य पर प्रकाश डालिए।
29. हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिए।
30. 'पंच परमेश्वर' कहानी की सारांश लिखिए।
31. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी की पात्रों का परिचय दीजिए।
32. प्रेमचंद के जीवन दृष्टि और साहित्य पर प्रकाश डालिए।
33. 'कुछ विचार' में उल्लिखित निबंधों पर प्रकाश डालिए।
34. प्रेमचंद के दलित संबंधी विचार क्या है?
35. प्रेमचंद की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन कीजिए।
36. प्रेमचंद की साहित्य में चित्रित समस्याएँ क्या-क्या है?
37. भारतीय किसानों की प्रतिनिधि कलाकार प्रेमचंद। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए।

38. प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति।
39. प्रेमचंद की उपन्यासों की विशेषताएँ लिखिए।
40. 'साहित्य विचारक प्रेमचंद' विषय पर लेख तैयार कीजिए।
41. प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए। (10 x 2 =20)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Model Question Paper

Set - 01

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……… Reg. No : ………...............

Name : ………………...

FOURTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE COURSE

B21HD04DC - हिन्दी पद्य साहित्य आदिकाल से आधुनिक काल तक

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखिए।

1. आदिकालीन श्रंगारी कवि कौन है?
2. कीर्तिलता किसकी रचना है?
3. पृथ्वीराज रासो ग्रन्थ किसने पूरा किया?
4. अष्टछाप के संस्थापक कौन है?
5. तुलसीदास के गुरु कौन है?
6. मीरा बाई किसको अपना पति मानती हैं?
7. रामनरेश त्रिपाठी की कविता-संग्रह का नाम लिखिए
8. मैथिलीशरण गुप्त ने कितनी महाकाव्यों की रचना की हैं?
9. पथिक किस विधा की रचना है?
10. महादेवी वर्मा के किस काव्य ग्रंथ को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है?
11. जयशंकर प्रसाद ने कितने उपन्यास लिखे है?
12. मुक्तिबोध का पूरा नाम क्या है?
13. 'कलगी बाजरे की' कविता किस काव्य संग्रह से लिया गया है?
14. 'पत्थर की बेंच' के कवि कौन हैं?
15. अरुण कमल की समकालीन प्रतिनिधि कविता कौन-सी है? (10 x 1 =10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

16. विद्यापति कौन है?
17. 'पृथ्वीराज रासो' में अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
18. कबीरदास के कृतित्व का परिचय दीजिए।
19. सूरदास के समय की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ कैसे थे
20. प्रयोगवाद के आविर्भाव के मुख्य कारण क्या है?
21. रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित पुस्तकों के नाम बताइए।
22. द्विवेदी-युग से पूर्व कविता के क्षेत्र में मुख्य विषय क्या थे?
23. महादेवी वर्मा की भाषा शैली कैसी थी?
24. पंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
25. 'प्यासा कुआँ' शीर्षक कविता वर्तमान स्थिति में कैसे संबंध रखती है? (2 x 5 =10)

SECTION -C

किन्हीं छ:प्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए।

26. पृथ्वीराज रासो के भाव पक्ष का परिचय दीजिए।
27. विद्यापति के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए।
28. मीरा बाई की भक्ति भावना किस प्रकार की है?
29. कृष्ण के प्रति सूर की भक्ति कौन-सी है?
30. प्रकृति के सुकुमार कवि पंत पर विचार प्रकट कीजिए।
31. 'हम अनिकेतन' कविता पर टिप्पणी लिखिए।
32. 'फूल झर गए' कविता का संदेश लिखिए'।
33. मैथिलीशरण गुप्ता के राष्ट्रभावना पर चर्चा कीजिए।
34. 'पत्थर की बेंच' कविता में चित्रित प्रतीकों पर चर्चा कीजिए।
35. 'मिलन' खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।
36. 'प्यासा कुआँ' में कवि कौन-सी विचार प्रकट करते है?
37. हिन्दी 'नई कविता' में मुक्तिबोध की जगह निर्धारित कीजिए। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए।

38. हिन्दी साहित्य में तुलसीदास का स्थान निर्धारित कीजिए।
39. विद्यापति पदावली की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
40. मनुष्यता कविता में निहित संदेश पर टिप्पणी लिखिए।
41. जयशंकर प्रसाद के काव्यसौष्ठव पर विचार प्रकट कीजिए। (10 x 2 =20)

Model Question Paper

Set - 02

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ……….............

Name : ………………...

FOURTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE COURSE

B21HD04DC - हिन्दी पद्य साहित्य आदिकाल से आधुनिक काल तक

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours   Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखिए।

1. आदिकाल के पहला महाकाव्य का नाम बताइए।
2. पृथ्वीराज रासो किस प्रकार की रचना है?
3. मैथिल कोकिल नाम से जाने वाले कवि कौन है?
4. पृथ्वीराज रासो में किस भाषा का प्रयोग है?
5. कबीर की भाषा क्या है?
6. मीरा बाई की भक्ति भावना किस प्रकार की है?
7. सूरदास किस सम्प्रदाय का कवी है?
8. द्विवेदी-युगीन काव्य की भाषा कौन-सी थी?
9. पंत की किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है?
10. कवि सुमित्रानंदन पंत का यथार्थ नाम क्या है?
11. आधुनिक मीरा कौन है?
12. प्रयोगवाद के संस्थापक कवि कौन हैं?
13. कँकरीले मैदान का अर्थ क्या है?
14. धूमिल का वास्तविक नाम क्या है?
15. 'बेजगह' कविता का विषय क्या है?   (1x10=10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

16. विद्यापति के जन्म कब और कहां है?
17. कबीरदास के भक्ति संबंधी दृष्टिकोण क्या है?
18. तुलसी दास की रचनाएँ लिखिए।
19. मुक्तिबोध का जन्म कब, कहाँ हुआ है?
20. चन्दबरदाई कौन है?
21. मैथिलीशरण गुप्त ने कितनी महाकाव्यों की रचना की हैं? नाम लिखिए।
22. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कब और कहाँ हुआ?
23. धूमिल के व्यक्तिगत जीवन का परिचय दीजिए।
24. सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम क्या है?
25. छायावादोत्तर युग की सामाजिक स्थिति कैसी थी? (2 x 5 =10)

SECTION -C

किन्हीं छःप्रश्नों के उत्तर एक परिच्छेद में लिखिए।

26. विद्यापति पदावली की विशेषताएँ लिखिए।
27. पृथ्वीराज रासो के युद्ध वर्णन का दीजिए।
28. पृथ्वीराज रासो के कला पक्ष का परिचय दीजिए।
29. कबीर की गुरु महिमा संबंधी विचारों को प्रकट कीजिए।
30. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सूर एक अग्रणी कृष्ण भक्त कवि हैं?
31. 'मुक्ति' कविता में चित्रित पिता की ग्लानि और विवशता अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
32. 'प्रथम रश्मी' कविता पर टिप्पणी लिखिए।
33. हिन्दी 'नई कविता' में मुक्तिबोध की जगह निर्धारित कीजिए।
34. भारतीय स्त्री आज़ादी के अधिकारी है– इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
35. 'मिलन' खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।
36. कवि और कविता पर टिप्पणी लिखें 'कँकरीले मैदान'
37. राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह दिनकर। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों के अन्दर लिखिए।

38. पृथ्वीराज रासो की साहित्यक विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।
39. 'मुरझाया फूल' नामक कविता के अनुसार महादेवी के छायावादी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
40. रामनरेश त्रिपाठी की ख़ब्ड कव्यों की विशेषता क्या है ?
41. समर्थन कीजिए कि मीरा बाई विरह की गयिका है। (10 x 2 =20)

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

विशेष लेखक प्रेमचंद

COURSE CODE: B21HD01DE

ISBN 978-81-970238-7-3

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

9 788197 023873